मिशन शक्ति 5.0
नारी सुरक्षा
नारी सम्मान
नारी स्वावलंबन

अभिव्यक्ति

(संयुक्तांक 2023-24 एवं 2024-25)

पं० दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत

पं० दीन दयाल उपाध्याय
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजाजीपुरम्, लखनऊ

नैक द्वारा मूल्यांकित एवं प्रत्यायित ग्रेड 'बी' दिनांक 08.01.2011

Website : www.ggpgcrajajipuram.com

महाविद्यालय प्राचार्य

डॉ. रमेश चन्द्र वर्मा
प्राचार्य

सम्पादक मण्डल

बाएँ से दाएँ - डॉ० पूनम पाण्डेय, डॉ० प्रज्ञा मिश्रा, प्रो० सुरंगमा यादव, प्रो० रमेश चन्द्र वर्मा (प्राचार्य), प्रो० रीता अग्निहोत्री, प्रो० पवन कुमार मौर्य, श्रीमती साधना सिंह यादव

अभिव्यक्ति

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभीदेवैः सदा वंदिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्याप्निम
वीणा-पुस्तक- धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम
हस्ते स्फाटिकमालीकां विदधती पद्मासने संस्थिताम
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिपदां शारदाम
या देवी सर्वभूतेशु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

पंडित दीनदयाल उपाध्याय
1916
2016

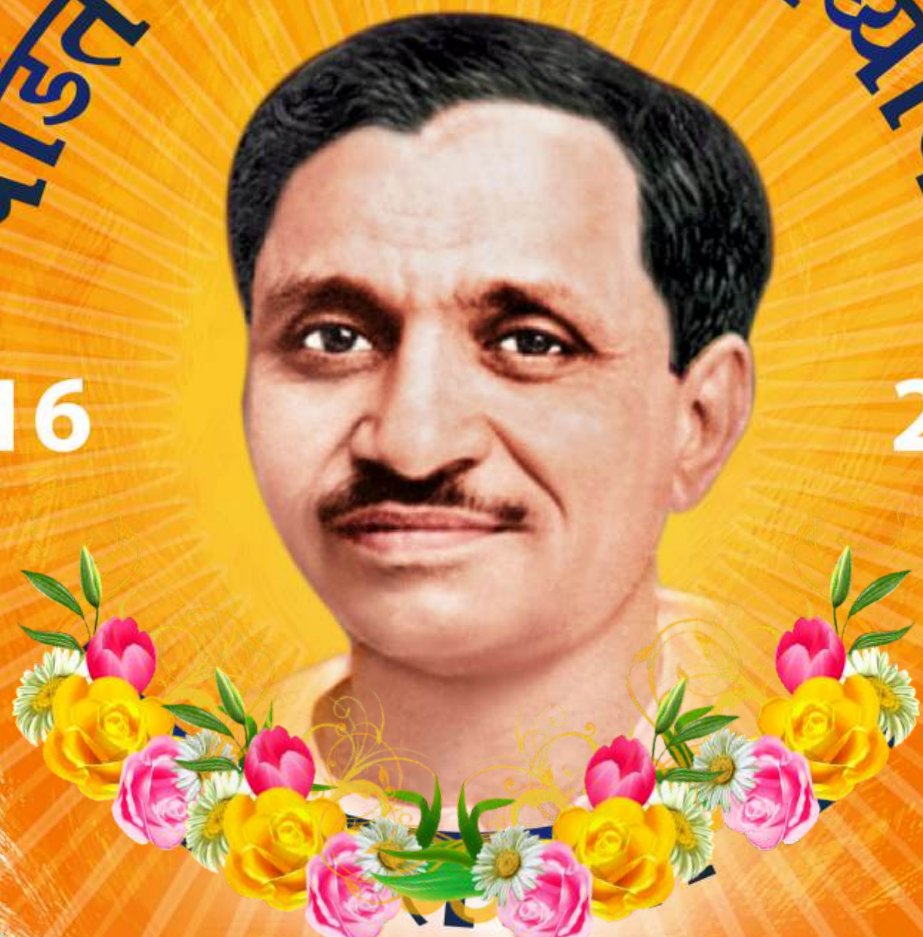

अभिव्यक्ति

अभिव्यक्ति

(संयुक्तांक 2023-24 एवं 2024-25)

संरक्षक/प्राचार्य

प्रो0(डॉ0) रमेश चन्द्र वर्मा

प्रधान सम्पादक

प्रो0(डॉ0) रीता अग्निहोत्री

सह-सम्पादक

डॉ0 सुरंगमा यादव
डॉ0 पवन कुमार मौर्या
डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा
श्रीमती साधना सिंह यादव
डॉ0 पूनम पाण्डेय

पं० दीन दयाल उपाध्याय
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजाजीपुरम्, लखनऊ

नैक द्वारा मूल्यांकित एवं प्रत्यायित ग्रेड 'बी' दिनांक 08.01.2011
Website : www.ggpgcrajajipuram.com

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ – 226 027

सन्देश

मुझे जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि पं0 दीन दयाल उपाध्याय राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजीपुरम्, लखनऊ द्वारा पत्रिका **"अभिव्यक्ति"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

देश, समाज और परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिये छात्र–छात्राओं को शिक्षित करना बहुत ही आवश्यक है। मुझे आशा है कि पत्रिका **"अभिव्यक्ति"** में छात्र एवं छात्राओं के लिये ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक पाठ्य सामग्री का समावेश किया जायेगा।

पत्रिका **"अभिव्यक्ति"** के सफल प्रकाशन के लिये मै अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

संख्या-

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

दिनांक :

सन्देश

मुझे जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि पं० दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजीपुरम्, लखनऊ द्वारा पत्रिका **''अभिव्यक्ति''** का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षा विद्यार्थियों को चुनौतियों का सामना करने, मेहनती एवं अनुशासित बनने की क्षमता प्रदान करती है। मुझे खुशी है कि पं० दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजीपुरम् इस दिशा में अपनी सार्थक भूमिका निभा रहा हैं।

पत्रिका **''अभिव्यक्ति''** के उद्देश्यपरक प्रकाशन के हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(योगी आदित्यनाथ)

योगेन्द्र उपाध्याय
मंत्री
उच्च शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी,
इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग

कक्ष सं0–मुख्य भवन, 63बी/डी
विधान भवन, लखनऊ।
दूरभाष– 2238051(कार्या0)

दिनाँक–

सन्देश

मुझे जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि पं० दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजीपुरम्, लखनऊ द्वारा पत्रिका **''अभिव्यक्ति''** का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षा विद्यार्थियों को चुनौतियों का सामना करने, मेहनती एवं अनुशासित बनने की क्षमता प्रदान करती है। मुझे खुशी है कि पं० दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजीपुरम् इस दिशा में अपनी सार्थक भूमिका निभा रहा है।

पत्रिका **''अभिव्यक्ति''** के उद्देश्यपरक प्रकाशन के हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(योगेन्द्र उपाध्याय)

रजनी तिवारी
राज्य मंत्री
उच्च शिक्षा विभाग,
उत्तर प्रदेश

कार्या. : जी-2/3, तृतीय तल, बापू भवन,
उत्तर प्रदेश सचिवालय, लखनऊ
दूरभाष कार्यालय : 0522-2238980
सी. एच. : 0522-2214808

सन्देश

मुझे जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि पं0 दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजीपुरम्, लखनऊ द्वारा अपनी पत्रिका **''अभिव्यक्ति''**के संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसमें महाविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों व महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक लेख प्रकाशित किये जायेंगे। आशा है कि लेखों के संग्रह के द्वारा पत्रिका छात्र–छात्राओं के लिए पथ–प्रदर्शक का कार्य करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

रजनी तिवारी

(रजनी तिवारी),

आवास 1- डालीबाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
दूरभाष 0522-2205445

कैम्प कार्यालय हरदोई, उत्तर प्रदेश
दूरभाष 05852-222100

श्री एम0पी0 अग्रवाल,
आई.ए.एस.

प्रमुख सचिव,
उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन।
सदस्य सचिव, उ0प्र0 राज्य उच्च शिक्षा परिषद।
कार्या : 0522-2238122, 2213404
ई–मेल : pshed2022@gmail.com
लखनऊ :

संदेश

उ0प्र0 राज्य उच्च शिक्षा परिषद का गठन प्रदेश में स्थापित उच्च शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा की गुणवत्ता में उत्कृष्टता स्थापित करने के उद्देश्य से वर्ष 1995 में की गयी थी। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि सुनिश्चित किये जाने के प्रयास के फलस्वरूप उच्च शिक्षा विभाग की योजनाओं के क्रियान्वयन पर विशेष बल दिया जा रहा है। गुणवत्ता के उच्चस्तरीय मूल्यांकन के लिए विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा निर्धारित मापदण्डों के अनुसार मूल्यांकन की तैयारी हेतु समस्त उच्च शिक्षण संस्थाओं को प्रेरित किये जाने के दिशा–निर्देश दिये जाते हैं। उ0प्र0 राज्य उच्च शिक्षा परिषद उन दिशा–निर्देशों के क्रियान्वयन के लिये समस्त संबंधित को वर्चुअल बैठकों के माध्यम से एवं दिशा–निर्देश जारी करके अच्छी ग्रेडिंग के लिये सदैव प्रयासरत रहने हेतु मार्गदर्शन दिया जाता है।

उच्च शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा की गुणवत्ता में उत्कृष्टता स्थापित करने के साथ–साथ उच्च शिक्षा विभाग द्वारा संचालित विभागीय योजनाओं, सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस/सेमिनार/ सिम्पोजियम/रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट योजनाओं के माध्यम से आर्थिक अनुदान उपलब्ध कराया जाता है। इसके लिये उ0प्र शासन से प्राप्त प्रस्तावों का परीक्षण उच्च शिक्षा विभाग द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति के माध्यम से कराकर समिति की संस्तुतियाँ आवश्यक स्वीकृतियाँ जारी किये जाने हेतु शासन को प्रेषित की जाती हैं। प्रदेश सरकार की योजनाओं के संचालन में शीघ्रता के साथ–साथ शोध कार्यों को प्रोत्साहन मिलेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 लागू किये जाने के उपरान्त प्रदेश सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। विशेष कर शिक्षा संबंधी योजनाओं के माध्यम शिक्षा को रोजगार परक बनाने पर बल दिया जा रहा है।

उच्च शिक्षा विभाग, उ0प्र0 शासन द्वारा समय–समय पर सौंपे गये कार्यों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन के समन्वय का कार्य उ0प्र0 राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा तत्परता से किया जा रहा है तथा विभिन्न बैठकों के माध्यम से आये विचारों को समाहित कर अग्रेतर प्रगति में वृद्धि सुनिश्चित किये जाने पर कार्यवाही सुनिश्चित की जाती है। उ0प्र0 राज्य उच्च शिक्षा परिषद के वार्षिक विवरण 2022–23 एवं 2023–24 संयुक्तांक में समाहित सामग्री के विषय में विद्वतजन के सुझाव आमंत्रित हैं, जो परिषद का मार्गदर्शन करने में सहायक होंगे।

(एम0पी0 अग्रवाल)
प्रमुख सचिव/सदस्य सचिव

लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ 226007(उ.प्र.) भारत
University of Lucknow
Lucknow-226007(U.P)INDIA

प्रो. आलोक कुमार राय
कुलपति
Prof. Alok Kumar Rai
Vice Chancellor

पं० दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ, वार्षिक पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** का प्रकाशन करने जा रहा है, जो अत्यन्त सराहनीय है। **''अभिव्यक्ति''** का संयुक्तांक महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की प्रतिभा को निखारने एवं उनके भविष्य को प्रगति की सकारात्मक दिशा देने में सहायक होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका के सम्पादक–मण्डल, रचयिताओं एवं समस्त छात्र–छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामना।

(प्रो० अलोक कुमार राय)

प्राचार्य की कलम से .....

पं० दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय की पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** का नवीन संयुक्तांक सत्र 2023–24 एवं 2024–25 आप सुधीजनों के हाथों में अर्पित करते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। समयानुसार होने वाले सामाजिक परिवर्तनों की साक्षी रूप में **'अभिव्यक्ति'** साहित्य के विभिन्न स्वरूपों में देखने को मिलती है। छात्राओं और प्राध्यापकों की रचनाओं में यह समयानुकूल परिवर्तन दृष्टिगत होता है तथा महाविद्यालय प्रगति को प्रतिबिम्बित करता है।

इस महाविद्यालय की 27 वर्षों की प्रगति यात्रा का क्रम 1997 में 07 विषयों में कला संकाय बी०ए० की शिक्षा से प्रारम्भ होकर वर्तमान में 11 विषयों में बी0ए0, 05 विषयों में एम०ए०, विज्ञान संकाय में बी०एस–सी० व रसायन विज्ञान में एम०एस–सी० की शिक्षा, वाणिज्य संकाय में बी०काम की शिक्षा दी जा रही है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का सत्र 2021 से लागू होना शिक्षा व्यवस्था के क्रान्ति कारी परिवर्तन का द्योतक है। अपरिमित सम्भावनाओं को संजोये हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रोजगारपरक विषयों से सह पाठ्यक्रम व व्यवसायिक पाठ्यक्रम के माध्यम से परिचित कराती शिक्षा व्यवस्था निश्चित रूप से देश की युवा पीढ़ी को कार्य क्षेत्र के विविध नये आयामों की ओर अग्रसर करेगी।

महाविद्यालय के विद्वान व कर्मठ प्राध्यापकों के नेतृत्त्व में छात्राएँ निश्चित ही सफलता के सोपान चढ़ेंगी व महाविद्यालय प्रकाश स्तम्भ की आभा को बढ़ायेंगी। महाविद्यालय कार्यालय के सभी कर्मठ सदस्यों का महाविद्यालय प्रगति में सहयोग सराहनीय है ।

पत्रिका के स्वरूप को निखारने में छात्राओं, प्राध्यापकों विद्वत संपादक मण्डल व प्रकाशक के सहयोग के लिए हृदय से आभार। आशा है सभी सुधीजनों का आशीर्वाद महाविद्यालय पत्रिका के इस नवीन अंक को अवश्य मिलेगा । हम अमूल्य सुझावों का स्वागत करेंगे।

प्रो० (डॉ०) रमेशचन्द्र वर्मा
प्राचार्य

सम्पादकीय

पंडित दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजीपुरम, लखनऊ अपनी पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** का संयुक्तांक, 2023–24 एवं 2024–25 आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा है। **'अभिव्यक्ति'** महाविद्यालय का दर्पण है तथा समस्त छात्राओं, प्राध्यापकों एवं कर्मचारी गण के सतत् प्रयास का प्रतिफल है।

यह पत्रिका छात्राओं के शैक्षिक उत्थान, बौद्धिक विकास एवं रचनात्मक क्षमता को आलोकित करने में सहायक है। कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय की छात्राओं से प्राप्त रचनाओं, निबंध, कविता लेख आदि को संपादक–मंडल द्वारा संकलित किया गया तथा गुण–दोष, रोचकता, सार्थकता आदि के आधार पर संकलित मौलिक रचनाओं का चयन किया गया। प्राध्यापकों के अनुभवजन्य लेखों व रचनाओं ने **'अभिव्यक्ति'** को अलंकृत कर सर्वोपयोगी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। महाविद्यालय की प्रगति आख्या, महाविद्यालय वार्षिक समारोह, क्रीड़ा समारोह, रेंजर्स समारोह, राष्ट्रीय सेवा योजना की वार्षिक आख्या एवं उ0प्र0 सरकार द्वारा संचालित प्रमुख महत्वकांक्षी योजनाओं यथा राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा अभियान, मिशन–शक्ति, नयी शिक्षा नीति के अन्तर्गत होने वाले विविध कार्यक्रमों के छायांकन सहित आख्या को पत्रिका में सम्मिलित किया गया है जिससे पत्रिका और भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हो गयी है इसके लिये, सम्पादक मण्डल एवं महाविद्यालय परिवार बधाई का पात्र है।

अभिव्यक्ति के प्रकाशन में महाविद्यालय के विद्वान, सौम्य एवं उदार प्राचार्य प्रो0 रमेश चन्द्र वर्मा जी के समय–समय पर निर्देशन एवं मार्गदर्शन के लिए सम्पादक मंडल हृदय से आभार व्यक्त करता है।

हम आशा करते हैं कि **'अभिव्यक्ति'** के संयुक्तांक, 2023–24, 2024–25 का प्रकाशन निश्चित ही पाठकगण के लिये ज्ञानवर्धक एवं रोचक सिद्ध होगा।

सम्पादक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	लेखक	पृ.सं.
01.	वार्षिक आख्या 2024–25	––	01–02
02.	महाविद्यालय गौरव गीत	डॉ0 रमेश चन्द्र वर्मा प्राचार्य / प्रोफेसर वाणिज्य	03
03.	महाविद्यालय के प्रति	डॉ0 सुरंगमा यादव प्रो0 हिन्दी	03
04.	ज़िन्दगी	श्रेया वर्मा बी0ए0 तृतीय वर्ष	03
05.	पिता	सरिता रावत बी.ए. तृतीय वर्ष	03
06.	वार्षिकोत्सव एवं मेधा सम्मान समारोह	––	04
07.	मेधा सम्मान समारोह 2023–2024	––	05
08.	वार्षिकोत्सव की झलकियाँ	––	06
09.	गृहिणी की गृह सेवा का महत्त्व	शिवानी रावत बी.ए. द्वितीय वर्ष	07–08
10.	साइबर अपराध	मनीषा अवस्थी बी.ए. द्वितीय वर्ष	08–09
11.	समय की कीमत	खुशी कुमारी बी.ए. प्रथम वर्ष	09–10
12.	शिक्षक दिवस	शिवानी मौर्या बी.ए. प्रथम वर्ष	10
13.	बेटियाँ	सोनाली रावत बी.ए. प्रथम वर्ष	10
14.	बेवकूफ़ राजा	सुनेहा बी.ए. प्रथम वर्ष	10
15.	क्या आप जानते हैं	महवीश बी.ए. प्रथम वर्ष	11
16.	महिला सशक्तिकरण	वंशिका यादव बी.ए. प्रथम वर्ष	11–12
17.	हिन्दी दिवस	उषा देवी बी.ए. प्रथम वर्ष	12
18.	सुविचार	प्रियंका बी.ए. प्रथम वर्ष	12
19.	प्रेरक कहानी	स्वाति गौतम बी.ए. प्रथम वर्ष	13
20.	सामान्य ज्ञान	शालिनी गौतम बी.ए. द्वितीय वर्ष	13
21.	कलम का इतिहास	शालिनी गौतम बी.ए. द्वितीय वर्ष	13
22.	ये शिक्षक कहलाते हैं	उम्मे हानी एम.ए. द्वितीय वर्ष	13
23.	मैं भारत की बेटी	शिवानी रावत बी.ए. द्वितीय वर्ष (स्वरचित)	14
24.	तिरंगे का कर्ज़	उम्मे हनी एम.ए. द्वितीय वर्ष	14
25.	रानी लक्ष्मीबाई जिनकी गाथा मैं सुनाती हूँ	खुशी भारद्वाजबी.ए. द्वितीय वर्ष (स्वरचित)	14
26.	पिता	एकता पाण्डेय एम.ए. प्रथम वर्ष	15
27.	पहचान	सलोनी गौतम (स्वरचित) बी.एस–सी. प्रथम वर्ष	15
28.	उड़ने की आशा	मीना वर्मा बी.ए. प्रथम वर्ष	15
29.	पुलवामा हमला	शिवानी रावत (स्वरचित)	16
30.	तुम्हें जगाने आया हूँ	निशि शुक्ला बी.ए. द्वितीय वर्ष	16
31.	गुरू से बड़ा न कोई	यशी सोनवानी बी.ए. प्रथम वर्ष	17
32.	सुविचार	अर्पिता श्रीवास्तव बी.ए. प्रथम वर्ष	17
33.	खतरे के आगे डरो मत	अंशिका तिवारी बी.ए. द्वितीय वर्ष	18
34.	प्रेरणा गीत	सोनी चौरसिया बी.ए. द्वितीय वर्ष	18
35.	ऐ ज़िंदगी फिर	मीना वर्मा बी.ए. प्रथम वर्ष	18
36.	गरीबदास के चार बेटे	प्रिया सक्सेना बी.ए. द्वितीय वर्ष	18
37.	कोशिश कर	मानसी बी.ए. प्रथम वर्ष	19
38.	बेटियों के लिए	सोनी चौरसिया बी.ए. द्वितीय वर्ष	19
39.	धरती बचेगी, तब बचेंगे हम	ज्योति रावत बी.ए. द्वितीय वर्ष	19
40.	माँ	सलोनी प्रजापति बी०ए० प्रथम वर्ष	19

41. श्री लाल बहादुर शास्त्री जी	रोशनी बी.ए. प्रथम वर्ष	19–20
42. आत्मविश्वास	आरती प्रजापति बी०ए० प्रथम वर्ष	20
43. लोग क्यों ऐसे होते हैं ?	रंजना रावत बी.ए. प्रथम वर्ष (स्वरचित)	20
44. रिश्ता	शिवानी रावत–श्री राजेन्द्र रावत बी.ए. द्वितीय वर्ष (स्वरचित)	20
45. नारी	शालिनी यादव बी.ए. प्रथम वर्ष	21
46. दुनिया तुम्हारे साथ होगी	समरीन खातून बी. ए. प्रथम वर्ष	21
47. कविता	पायल मिश्रा बी.ए. प्रथम वर्ष	21
48. नारियल और पत्थर	कोमल मौर्या बी.ए. प्रथम वर्ष	21
49. स्वयं की खोज	गुंजन मौर्या बी.ए. तृतीय वर्ष	21
50. हे नारी!	अर्चिता यादव बी.कॉम तृतीय वर्ष (स्वरचित)	22
51. माँ	शशि गौतम बी.एस.सी. तृतीय वर्ष	22
52. मनुष्य को मशीन न बनाएँ	तनु सिंह एम.ए. प्रथम सेमेस्टर समाजशास्त्र	22
53. पुस्तकालय	नैन्सी चौरसिया बी० ए० तृतीय वर्ष	22
54. दुनिया का आरम्भ है नारी__	खुशी शर्मा बी०ए० तृतीय वर्ष (स्वरचित)	23
55. अच्छे संस्कार	उम्मुलवरा बी०ए० प्रथम वर्ष	23
56. कलियों को खिल जाने दो	निधि वर्मा बी.कॉम द्वितीय वर्ष	23
57. एक नई सुबह	अंशिका साहू बी.ए. तृतीय वर्ष	23
58. एकता और अखंडता का पर्व महाकुंभ	नेहा मौर्या पर्यवेक्षक डा० नेहा जैन असि०प्रो० समाजशास्त्र	24
59. जीवनदायिनी नदी	––	24
60. कुंभ पर्व : सांस्कृतिक विरासत	डॉ० प्रज्ञा मिश्रा गणित विभाग	25–26
61. डिजिटल युग में भारतीय राष्ट्रवाद	विमल कुमार मौर्या शोध छात्र इतिहास विभाग	26
62. मानसिक स्वास्थ्यः वर्तमान	अपर्णा तिवारी (शोध छात्रा) विभाग –राजनीति शास्त्र	27–28
63. मानवाधिकार दिवस	श्रेया वर्मा बी.ए. तृतीय वर्ष	28
64. आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम	डॉ0 निशी मिश्रा असि0प्रो0 अर्थशास्त्र विभाग	29
65. बच्चों के खाद्य उत्पाद	आरती वर्मा, रिसर्च स्कॉलर गृहविज्ञान विभाग	30
66. वादा	तसमान्या बी.कॉम (स्वरचित)	30
67. एक नई सुबह	सुधा चौरसिया एम.0ए0 प्रथम वर्ष समाजशास्त्र विभाग	31
68. मेरा गांव	वैष्णवी दुबे बी.एस–सी द्वितीय वर्ष	31
69. परिश्रम ही तो जीवन है	रिया मिश्रा बी.एस–सी द्वितीय वर्ष	31
70. रंग	Satyam Sangya Research Scholar, Commerce	31
71. लोग हैं!	पूजा शुक्ला एम०ए० प्रथम वर्ष	32
72. जीत पक्की है	मुस्कान एम०ए० प्रथम वर्ष	32
73. भौतिक विज्ञानी प्रकृति	वैशाली गौतम बी.एस–सी तृतीय वर्ष पीसीएम	32
74. रंगोली	नैन्सी गुप्ता बी.ए. तृतीय वर्ष	33
75. विज्ञान से मानव कल्याण	कशफ़ बी.एस–सी तृतीय वर्ष	34
76. भारत के लिए सौर ऊर्जा की उपादेयता	अर्पिता शर्मा बी.एस–सी तृतीय वर्ष	34
77. युवाओं के संदर्भ में स्वामी	डॉ० स्मिता पाण्डेय असिस्टेन्ट प्रोफेसर.....	35–36
78. पढ़े लखनऊ बढ़े लखनऊ	––	36
79. द्वैतवेदान्तः	डॉ0 पूनम पाण्डेय असि0 प्रोफेसर संस्कृत	37–38
80. आयुर्वेदे व्याधिः	अशोका रुइदास (शोध–छात्रा) संस्कृत विभाग	39–40
81. विदुर नीति	––	40
82. श्रीमद्वाल्मीकिरामायणे श्रीरामस्य चरितम्	सावित्री शोधछात्रा	41–42
83. संस्कृत के माध्यम से समय देखना	निशी शुक्ला बी.ए.द्वितीय	43

84.	वासराणां नामानि	——	43
85.	वस्तुनि नामानि	——	43
86.	मासानां नामानि	——	43
87.	संस्कृतिः संस्कृताश्रया	शिवानी रावत बी.ए. द्वितीय वर्ष	44
88.	भारतीया संस्कृतिः	मनीषा अवस्थी स्नातक बी.ए. द्वितीय वर्ष	45—46
89.	मानो हि महतां धनम्	प्रिया सक्सेना बी.ए. द्वितीय वर्ष	47
90.	Scope of.....	Mamta Ambujanani Asst. Prof. ----	48—51
91.	New Generation	Riya Mishra B.Sc II Year	51
92.	A True Human	Shambhavi Tripathi B.A. I Semester	51
93.	ROLE OF PROTEIN.....	Dr. Rashmi Srivastava -----	52
94.	Screen Time.....	Reema Yadav (Research Scholar) —	52—53
95.	India's Employment Growth	Kavya Srivastava Class-B.Sc I st Year (ZBC)	53—54
96.	Elizabeth Edwards	Yogita Tripathi M.A. III Sem	55
97.	The Bond.....	Deepshikha Saini BA-3yera 5sem	56
98.	Importance of Education	Lubna Hashim BA-IIIsem	57—58
99.	Cyber Security in a Digital World	Divyanshi Nigam V semester	58—59
100.	Smile	Komal Jaiswal II year 3rd sem	60
101.	Education is The Key to Success	Ummey Hani MA-II year 3rd sem	60
102.	Nothing is Impossible	——	60
103.	Never Give Up	——	60
104.	Time is Money	——	60
105.	Emerging Tech Trends - "AI"	Vaishnavi Pandey BA-Ist	61
106.	Mahakumbh	Sweta Sharma English Department Research Scholar	62
107.	"From 'Rasa' to 'Rasayana'	Dr. Mishu Singh	63—65
108.	Behavioral	Prince Kumar	65—66
109.	The silent language of the heart	Anshika Shukla B.Sc. Istyear (PCM)	66—67
110.	" The Weight of Expectations"	Fehmina Naz MA-II year	67
111.	Nature	Shreya Shukla MA-English-II sem	67
112.	Terracotta:	Smita Dubey Research Scholar,	68
113.	Millets in Uttar Pradesh	Km Priyanka	69—70
114.	Language of.....	Jyoti Sharma	70—72
115.	English Department	Prof.(Dr.) Reeta AgnihotriSmt. Sadhana Singh Yadav ssitant Professer	73
116.	Formation of English Association	——	74
117.	हिन्दी विभाग परिषद सत्र 2024—25	डॉ0 सुरंगमा यादव विभाग प्रभारी हिन्दी	75
118.	वर्तमान समय में	——	75—76
119.	अपनी भाषा के बिना	प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित	76—77
120.	वाल्मीकि जयंती पर	——	77—78
121.	अंतरमहाविद्यालयी प्रतियोगिताएँ	——	78

122. संस्कृत विभाग	डॉ0 पूनम पाण्डेय	79
123. वार्षिक क्रीड़ा समारोह 22 व 23 फरवरी 2024	डॉ0 शीलधर दुबे	80
124. वार्षिक क्रीड़ा समारोह सत्र 2024–25	––	81
125. इतिहास परिषद सत्र 2024–2025	प्रो0 प्रियंका शर्मा प्रो0 प्रीति वाजप्ये	82
126. तंबाकू निषेध कार्यक्रम सत्र 2024–25	––	82
127. गृह विज्ञान विभाग 2024–25	प्रो0 रश्मि श्रीवास्तव प्रो0 किरन सिंह	83
128. अर्थशास्त्र विभाग वार्षिक आख्या 2023–2025	डॉ0 अमितेन्द्र सिंह डॉ0 निशी मिश्र	84
129. राजनीति शास्त्र विभागीय आख्या 2024–25	डॉ0 स्मिता पाण्डेय विभाग प्रभारी राजनीतिशास्त्र विभाग	85
130. समाजशास्त्र विभाग वार्षिक आख्या 2024–25	डॉ0 नेहा जैन डॉ0 तमन्ना	86
131. मनोविज्ञान विभाग सत्र 2024–25	ममता अंबुजाननी विभाग प्रभारी	87
132. वाणिज्य परिषद आख्या वर्ष 2023–25	प्रो0 रमेश चन्द्र वर्मा प्रो0 पवन कुमार मौर्य	88
133. नाटकः छोटे दीन दयाल	––	89
134. राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC)	––	89
135. भौतिक विज्ञान	प्रो0 अखिलेश कुमार	90
136. गणित विभाग सत्र 2024–25	डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा	90
137. विज्ञान क्लब की रिपोर्ट	––	91
138. रसायन विज्ञान विभाग आख्या सत्र 2024–25	डॉ0 रमेश बाबू ,डॉ0 मीशू सिंह	91
139. जन्तु विज्ञान विभाग आख्या सत्र 2024–2025	किरण लता वर्मा विभाग प्रभारी	92
140. वनस्पति विज्ञान विभागीय	डॉ0 ऋचा पाण्डेय विभाग प्रभारी	92–93
141. मिशन शक्ति – 5.0	––	94
142. मिशन शक्ति – 5.0	––	95
143. रोड सेफ्टी क्लब सत्र 2024–2025	––	96–97
144. राष्ट्रीय सेवा योजना प्रगति आख्या (2024–25)	डॉ0 किरनलता वर्मा डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा	97–98
145. रेंजर्स प्रशिक्षण सत्र 2023–24	––	99
146. रेंजर्स प्रशिक्षण इकाई वर्ष 2024–25	––	99–100
147. कैरियर परामर्श एवं निर्देशन समिति रिपोर्ट 2024–25	––	101
148. दशमोत्तर छात्रवृत्ति योजना 2023–2024	डॉ0 किरन सिंह	102
149. काव्य में नारी संवेदना	––	103
150. पंजाबी साहित्य में अवधि एवं ब्रज भाषा का प्रभाव	––	104
151. महाविद्यालय के प्राध्यापकों की प्रकाशित पुस्तकें	––	105
152. WALKATHON ON VOTERS DAY	––	106
153. हमारे महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य	––	107
154. फार्म 4 नियम 6	––	108

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह सत्र 2024 – 25

वार्षिक – आख्या

पं० दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजाजीपुरम लखनऊ की **स्थापना वर्ष 1997 में हुई थी।** महाविद्यालय की स्थापना समीपवर्ती एवं दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं को कला, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों की उच्च शिक्षा सुलभ कराने के उद्देश्य से की गयी थी। आख्यागत वर्ष में छात्राओं की कुल संख्या 1393 है।

वर्तमान में महाविद्यालय में कला संकाय में स्नातक स्तर पर 11 विषय यथा हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, मानव विज्ञान, गृहविज्ञान, मनोविज्ञान एवं शारीरिक शिक्षा, तथा स्नातकोत्तर स्तर पर समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, इतिहास, गृहविज्ञान, एवं रसायन विज्ञान विषय में अध्ययन की सुविधा संचालित है। स्नातक स्तर पर विज्ञान संकाय में कुल पांच विषय यथा वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी विज्ञान एवं गणित और वाणिज्य संकाय में स्नातक वाणिज्य का शिक्षण कार्य हो रहा है ।

सत्र 2023–24 की वार्षिक परीक्षा में स्नातक स्तर पर कला संकाय की ऐश्वर्या सिंह ने 79.10 प्रतिशत, संकाय में संध्या गुप्ता 74.7 प्रतिशत एवं वाणिज्य संकाय में श्रुति दीक्षित ने 75.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपनी मेहनत, लगन एवं प्रतिभा का परिचय दिया है। महाविद्यालय के तीनों संकायों में बी.ए. की छात्रा ऐश्वर्या सिंह ने 79.1 प्रतिशत सर्वाधिक अंक प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है। स्नातकोत्तर स्तर पर गृहविज्ञान विषय में अंशिका सक्सेना ने 71.4 प्रतिशत अंक, समाजशास्त्र विषय में संध्या गुप्ता 74.3 प्रतिशत अंक, इतिहास में तबस्सुम खातून ने 69.1 प्रतिशत अंक, अर्थशास्त्र विषय में निशी यादव ने 71.8 प्रतिशत एवं अंग्रेजी विषय मे ज्योति नेगी ने 74.1 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं, रसायन विज्ञान विभाग की आरती रस्तोगी ने 60.9 प्रतिशत अंक प्राप्त किये और महाविद्यालय का नाम रौशन किया। महाविद्यालय परिवार इन सभी मेधावी छात्राओं को बधाई देता है एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

महाविद्यालय राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान **(RUSA)** कार्यक्रम के अधीन है। महाविद्यालय में रसायन विज्ञान प्रयोगशाला एवं टायलेट **ब्लाक हेतु रू० दो करोड़ की धनराशि से यह निर्माण पूर्ण हो चुका है। इस सत्र में 05 प्राध्यापकों को प्रोफेसर पदनाम एवं 06 प्राध्यापकों को एसो0 प्रोफेसर पदनाम एवं वरिष्ठ वेतनमान प्राप्त हुआ है। कई प्राध्यापकों ने समय–समय पर यू०जी०सी० द्वारा प्रायोजित विभिन्न कार्यशालाओं एवं शॉट–टर्म कोर्स में प्रतिभागिता करते हुए अपना शैक्षणिक उन्नयन किया है।** अनेक प्राध्यापकों ने शैक्षणिक एवं शोध संस्थाओं में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में आमंत्रित वक्ता के रूप में सहभाग किया एवं विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में उनके शोधपत्र भी प्रकाशित भी हुए। कई प्राध्यापकों की स्वयं की पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं।

छात्राओं को पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने हेतु महाविद्यालय में पुस्तकालय एवं वाचनालय की व्यवस्था है। **पुस्तकालय में पुस्तकों की कुल संख्या 15100 है।** वाचनालय में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु हिन्दी एवं अंग्रेजी में पत्रिकाएँ एवं पुस्तकें उपलब्ध हैं तथा सभी विभागों द्वारा भी छात्राओं को आवश्यकतानुसार NET एवं JRF की तैयारी हेतु पुस्तकें दी जाती हैं।

आख्यागत वर्ष में महाविद्यालय के क्रीड़ा संबंधी नियमित क्रियाकलापों के अतिरिक्त वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें सभी छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। सत्र 2024–25 के वार्षिक क्रीड़ा समारोह का आयोजन दिनांक 14 से 16 दिसम्बर 2024 में किया गया। **इस वर्ष क्रीड़ा चैम्पियन बी०ए० द्वितीय वर्ष की छात्रा किरन सिंह रहीं।** आख्यागत वर्ष में महाविद्यालय की सबसे बड़ी उपलब्धि एन०सी०सी० की एक इकाई की स्थापना की स्वीकृति प्राप्त होना है। जिसमें महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ० नेहा जैन को एन०सी०सी० आफिसर नामित किया गया है। 55 छात्राओं को एन०सी०सी०, में प्रवेश दिया गया। आख्यागत वर्ष में महाविद्यालय का सौभाग्य रहा है कि यहाँ की कुछ छात्राओं नें नेट/जे०आर०एफ० परीक्षा में कामयाबी हासिल की है। अंग्रेजी विषय की छात्रा कोमल कुमारी एवं गृह विज्ञान विषय की छात्रा मालती मौर्या ने नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय का मान बढ़ाया।

सत्र में अधूरी सड़क का निर्माण हुआ, जिससे पूरा महाविद्यालय सड़कबद्ध हो गया। क्षतिग्रस्त चाहरदिवारी का निर्माण भी इसी सत्र में हुआ है। दो स्मार्ट कक्षों का निर्माण हुआ। महाविद्यालय की सांस्कृतिक समिति को संगीत के विभिन्न वाद्य यन्त्रों एवं विद्युत ध्वनि उपकरणों से समृद्ध किया गया।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की दो इकाईयां सद्भावना एवं प्रेरणा संचालित हैं। इस योजना से संबंधित विभिन्न क्रिया–कलापों का संचालन कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती किरणलता वर्मा एवं डॉ० प्रज्ञा मिश्रा द्वारा किया जाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्त्वावधान में चार एक दिवसीय कैम्प तथा एक सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन दिनांक 04.12.2024 से दिनांक 10.12.2024 तक किया गया। शिविर स्थल सरीपुरा कुँवर ज्योति प्रसाद वार्ड में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत रैली तथा मतदाता पहचान पत्र से सम्बन्धित फार्म–06 को बाँटा एवं भरवाया गया।

महाविद्यालय की रेंजर्स प्रभारी डॉ० स्मिता पाण्डेय के नेतृत्व में 24 छात्राओं की एक इकाई का गठन हुआ, जिनका पाँच दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक 21.10.2024 से दिनांक 25.10.2024 तक कराया गया। छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु उनकी पाठ्येत्तर प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से महाविद्यालय स्तर पर निबन्ध लेखन, गायन, नृत्य, काव्यपाठ, रंगोली, पोस्टर, कहानी–लेखन, भाषण, वाद–विवाद तथा गोष्ठी का आयोजन किया गया तथा सभी विभागों द्वारा विभागीय प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं। प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत भी किया जाता है। छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास का अवसर महाविद्यालय स्तर पर ही नहीं अपितु अन्तरमहाविद्यालयी स्तर पर भी किया जाता है।

महाविद्यालय की छात्राओं ने गुरुनानक गर्ल्स डिग्री कालेज में आयोजित सांस्कृतिक उत्सव **अभिमुख** में वाद–विवाद प्रतियोगिता में मनीषा अवस्थी एवं शिवानी रावत ने प्रथम स्थान एवं रेट्रो डांस प्रतियोगिता में तूबा एवं उनके ग्रुप ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अखिल विश्व गायत्री परिवार शान्तिकुंज हरिद्वार के तत्त्वावधान में आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में महाविद्यालय की छात्रा शाम्भवी त्रिपाठी ने प्रथम, श्वेता गुप्ता ने द्वितीय एवं मनीषा त्रिपाठी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान 2024 के अन्तर्गत जनपद स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में योगिता त्रिपाठी ने प्रथम स्थान एवं मनीषा अवस्थी ने तृतीय स्थान, पोस्टर प्रतियोगिता में वैष्णवी दुबे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

आख्यागत वर्ष में महाविद्यालय के अधिकांश प्राध्यापकों (कला एवं वाणिज्य) को लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा शोध पर्यवेक्षक नामित किया गया तथा 50 शोध छात्रों को यह महाविद्यालय शोध केन्द्र के रूप में आवंटित किया गया जिनमें अधिकांश शोधार्थी नेट/जे०आर०एफ० परीक्षा उत्तीर्ण हैं।

नैक मूल्यांकन की वर्तमान प्रक्रिया के अन्तर्गत विगत 05 वर्षो में ए०क्यू0ए0आर0 रिपोर्ट लॉगइन पर अपलोड की जा चुकी है। महाविद्यालय में भातखण्डे विश्वविद्यालय, लखनऊ के सौजन्य से सांस्कृतिक विभाग उ0प्र0 के सहयोग से 'कल्चरल क्लब' का गठन किया गया। मेजर ध्यानचन्द्र खेल प्रोत्साहन के अन्तर्गत महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा विभाग में ट्रेड मील एवं अन्य उपकरणों की स्थापना की गयी।

महाविद्यालय में उ0 प्र0 राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज का अध्ययन केन्द्र स्थापित है। डॉ० अमितेन्द्र सिंह, असि० प्रो०–अर्थशास्त्र की देखरेख में इस अध्ययन केन्द्र में स्नातक स्तर पर बी०ए०, बी०काम०, बी0एस–सी० स्नातकोत्तर स्तर पर सभी विषयों में पाठयक्रम संचालित हैं। इसके अतिरिक्त पी०जी० डिप्लोमा इन फाइनेंशियल मैनेजमेंट, हेल्थ एजूकेशन एण्ड न्यूट्रीशन डिप्लोमा इन रूरल मैनेजमेंट एवं फैशन डिजाइनिंग आदि के अध्ययन की सुविधा भी उपलब्ध है।

ऐश्वर्या सिंह–बी.ए.
79.1 प्रतिशत
महाविद्यालय के तीनों संकायों में सर्वाधिक अंक

कोमल कुमारी–एम.ए.(अंग्रेजी)
नेट परीक्षा 2024 उत्तीर्ण

मालती मौर्या–एम.ए.(गृहविज्ञान)
नेट परीक्षा 2024 उत्तीर्ण

महाविद्यालय गौरव गीत

डॉ0 रमेश चन्द्र वर्मा
प्राचार्य / प्रोफेसर वाणिज्य

ये लखनऊ का दीन दयाल उपाध्याय, राजकीय महाविद्यालय है।
कला–विज्ञान का वाणिज्य के ज्ञान का, उत्कृष्ट शिक्षालय है।
ये लखनऊ का दीन दयाल उपाध्याय, राजकीय महाविद्यालय है।

अटल के सत्कर्मों का फल है ये आँगन,
दीनदयाल जी की स्मृति का है प्रांगण,
उनके ही मार्ग चल रहे हैं।
ये लखनऊ का दीन दयाल उपाध्याय, राजकीय महाविद्यालय है।

ज्ञान से स्नान सभी शिक्षक कराते हैं,
निष्णात भी यहाँ शिक्षक बनाते हैं,
शोध से विकास कर रहे हैं।
ये लखनऊ का दीन दयाल उपाध्याय, राजकीय महाविद्यालय है।

क्रीड़ा, एन0सी0सी0 से स्वस्थ हैं बनाते,
रेंजर्स, एन0एस0एस0 हैं सेवक बनाते,
व्यक्तित्त्व में निखार ला रहे हैं।
ये लखनऊ का दीन दयाल उपाध्याय, राजकीय महाविद्यालय है।

नाटक या नृत्य हो, संगीत हो या गायन,
'दीनदयाल कल्चरल क्लब' के आयोजन,
सांस्कृतिक उत्थान कर रहे हैं।
ये लखनऊ का दीन दयाल उपाध्याय, राजकीय महाविद्यालय है।

महाविद्यालय के प्रति

डॉ0 सुरंगमा यादव
प्रो0 हिन्दी

लखनऊ की संस्कृति–सा अनुपम, शिक्षा का ये पावन धाम,
गौरवशाली इसे बनाता, पण्डित दीन दयाल का नाम।

लक्ष्मणपुर की धरा पुनीता, गोद गोमती की पायी,
ज्ञान–कर्म का रूप समन्वित, नित नूतन शुभता पायी।
इसकी रज माथे पर धर कर, शतशः हम सब करें प्रणाम,
गौरवशाली इसे बनाता, पण्डित दीन दयाल का नाम।

रम्य मनोहर सुन्दर परिसर, प्रखर ज्ञान का ज्यों दिनकर,
ज्येष्ठ–श्रेष्ठ अपनी संस्कृति का, सतत् प्रचारक ये शुभकर।
रचे युवा मन कीर्तिमान नव, 'अटल' प्रेरणा से अविराम,
गौरवशाली इसे बनाता, पण्डितदीन दयाल का नाम।

कला–ज्ञान–विज्ञान की धारा, चित्त निमज्जित नित हमारा,
गुने मंत्र–सिद्धांत यहाँ पर, मातृशक्ति का मन प्यारा।
नव विचार–नव दृष्टि प्रदाता, विज्ञ समागम ललित–ललाम,
गौरवशाली इसे बनाता, पण्डित दीन दयाल का नाम।

ज़िन्दगी

श्रेया वर्मा
बी0ए0 तृतीय वर्ष

जीवन बवंडर से बचकर नहीं, बल्कि उसमें नाव चलाकर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।
समय अपने आप में कुछ नहीं होता, समय को खुशहाल बनाने के लिए हमें कुछ करना होता है।
अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो, तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो ।
अवसर की प्रतीक्षा मे मत बैठो। आज का अवसर ही सर्वोत्तम है।

पिता

सरिता रावत
बी.ए. तृतीय वर्ष

सख्त पिंजरे में मोम का दिल रखना,
आसान नहीं होता।
डाँटकर हर ख्वाहिश को पूरा करना,
आसान नहीं होता।
सारे जहाँ की खुशियाँ, देना चाहते हैं वो हमें,
पिता बनना इतना
आसान नहीं होता।

वार्षिकोत्सव एवं मेधा सम्मान समारोह
दिनांक – 21.03.2024

मेधा सम्मान समारोह 2023–2024
दिनांक – 21.03.2024

वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

गृहिणी की गृह सेवा का महत्त्व

शिवानी रावत

बी.ए. द्वितीय वर्ष

गृहिणी अर्थात् अपने गृह की सेवा करने वाली वह स्त्री जिसे भारत में **गृह लक्ष्मी भी** बोला जाता है। प्राचीन काल से ही समाज की मान्यतानुसार एक घर एवं घर में रहने वाले अपनों की **सेवा का दायित्व** एक स्त्री को प्राप्त है। सभी आदर्श गृहणियाँ प्राचीन समय से ही अपना यह दायित्व कुशलतापूर्वक निभाती आ रही हैं, और घर में रहने वाले अपनों के हृदय में **सर्वोच्च स्थान** भी प्राप्त करती आयी हैं।

गृह सेवा की गहराई– इस प्रकार गृहणी की गृह सेवा एक प्रकार का **परम पुण्य** है और **सर्वोत्तम कर्म** है, किन्तु आज वर्तमान समय में गृहिणी गृह कार्य को गहराई से नहीं लेतीं, वे इसे तुच्छ समझती हैं, और क्रोध भाव से गृह सेवा करती हैं जिस कारण से गृह में रह रहे अपनों से उनका काफी झगड़ा भी हो जाता है और घर में क्लेश भी उत्पन्न होता है, यदि स्त्री गृह सेवा के सच्चे महत्व को समझकर **प्रेमपूर्वक गृह** एवं गृहवासियों की **सेवा** करती है, तो समाज की सर्वोच्चता और प्रभु द्वारा उसे पुण्य की प्राप्ति होती है साथ–साथ घरवालों के मुख पर एक अलग–सी आभा आती है और घर का वातावरण शान्त एवं सुखमय रहता है जो श्रेष्ठ मन्दिर की श्रेणी में गिना जाने लगता है और सामाजिक प्रशंसा का पात्र बनता है।

गृहिणी सुनो !

तुम्हारी सेवा तुच्छ नहीं बात ये जान लो
गृह सेवा ही **सर्वोत्तम कर्म** है आज ही ये मान लो
प्रेम पूर्वक जो तुम अपने गृह और अपनों की सेवा करोगी
तो **समाज में प्रशंसा** का पात्र बनोगी
दूर रहेगा क्लेश गृह से तुम्हारे
अपनों के **हृदय में सर्वोच्चता** की अधिकारी बनोगी।
जीवन सफल होगा तुम्हारा, पुण्य प्राप्त कर
प्रभु की भी प्यारी बनोगी।।

आत्मनिर्भर गृहिणियों की गृह सेवा– हर स्त्री के लिए आवश्यक है कि वो आत्मनिर्भर बने ताकि वह अपनी आवश्यकता स्वयं पूरी कर सके और समाज की उन्नति में अपना सहयोग प्रदान कर सके। आत्मनिर्भर स्त्री समाज में अपनी अलग पहचान बनाती है। वह **स्वाधीन** रहती है। अपनी सहायता स्वतः करने की क्षमता रखती है। एक **आत्मनिर्भर** स्त्री समाज में अपनी लड़ाई स्वयं लड़ सकती है, उसे किसी पुरूष की सहायता लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती है किन्तु लगभग 90% स्त्रियां आत्मनिर्भर बनने के पश्चात गृह सेवा को महत्व नहीं दे पाती क्योकि समय के अभाव के कारण वो अपनों और अपने गृह की ओर कम ध्यान दे पाती है। परन्तु अगर हम चाहे तो हमारे कुछ क्षण ही हमारी गृह–सेवा में चार चाँद लगा सकते हैं, और बाकी के कार्य **सुन्दरता** एवं **स्वच्छता** से अपने कर्मचारियों और नौकरो से करा सकते हैं।

यह सच है कि इक स्त्री के लिए
आत्मनिर्भरता बेहद जरूरी है,
परन्तु गृह सेवा के बिना

तुम्हारी आत्मनिर्भरता ज़रा **अधूँरी** है
माना कि **समय का अभाव** है
तुम्हारे **कार्य** का तुम पर **दबाव** है
पर तुम्हारे द्वारा समर्पित तुम्हारे गृह को
'कुछ क्षण'
जो गृह सेवा की श्रेणी में आते हैं,
बाकी का कार्य तो कर्मचारियों के
हाथों हो ही जाते हैं,
पर **अपने हिस्से**, अपनों के प्रति
जिम्मेदारी निभाना,
स्त्री के **सर्वोच्च गुण** माने जाते हैं।।"

इस प्रकार इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि इक गृहिणी का अपने गृह के प्रति जो कर्तव्य है, वह सामान्य नहीं है, न ही तुच्छ है, बल्कि सर्वोत्तम और श्रेष्ठ है। समाज भले ही उसकी निन्दा करता हो, घर के कार्यों को तुच्छ समझता हो किन्तु इस गृहिणी को कभी भी गृह कार्यों को लेकर मन में न्यून भाव नहीं लाने चाहिए, बल्कि गृह की **गहराई** को समझकर उसे वैसे ही निष्ठा पूर्वक सम्पन्न करना चाहिए जैसे मानो उसकी सफलता से जुड़ा कोई आनन्दमय कार्य हो । इस प्रकार के भाव से किया गया कार्य भारत की घरेलू समस्या को 90% जड़ से समाप्त करने की ताकत रखता है।

समाज क्या है? मत सुनो–
समाज को कहने दो,
तुम समझो **गृह सेवा की गहराई**
और स्वयं को सेवा में समर्पित रहने दो
तुम्हारा **कर्म श्रेष्ठ** है, तुम्हारा **भाव श्रेष्ठ** है
हृदय से तुम जानो तो सही
गृह सेवा हर सेवा से **ज्येष्ठ** है।।

साइबर अपराध

मनीषा अवस्थी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

हर कोई सोचता है कि किसी का निजी डेटा चुराना ही साइबर अपराध है। लेकिन पारिभाषित शब्दों मे हम कह सकते हैं कि **'साइबर अपराध'** किसी इलेक्ट्रानिक डिवाइस (कम्प्यूटर, लैपटॉप आदि) का उपयोग किसी के डेटा को चुराने या कम्प्यूटर का उपयोग करके उन्हें नुकसान पहुँचाने की कोशिश करने को सन्दर्भित करता है।

इसके अलावा, यह एक अवैध गतिविधि है जिसमें चोरी से लेकर आपके सिस्टम या आईपी पते का उपयोग अपराध करने के लिए एक उपकरण के रूप में करने तक की कई समस्याएँ शामिल हैं।

साइबर अपराध के प्रकार– मोटे तौर पर हम कह सकते हैं कि साइबर अपराध को चार प्रमुख प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। ये हैं– **वित्तीय, गोपनीयता, हैकिंग** और **साइबर आतंकवाद।**

वित्तीय अपराध में वे उपयोगकर्ता या खाताधारकों के पैसे चुराते हैं। इसी तरह वे कम्पनियों का डेटा चुराते हैं, जो वित्तीय अपराधों को जन्म दे सकता है। साथ ही उनके कारण लेन–देन में भारी जोखिम होता है। हर साल हैकर्स व्यापारियों और सरकारों के लाखों–करोड़ों रूपये चुरा लेते हैं।

गोपनीयता अपराध में आपका निजी डेटा चुराना शामिल है जिसे आप दुनिया के साथ साझा नहीं करना चाहते हैं। इसके अलावा ये दुनिया के लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं और कुछ लोग अपने डेटा के दुरूपयोग के कारण आत्महत्या भी कर लेते हैं।

हैकिंग में वे जानबूझकर किसी वेबसाइट को नुकसान पहुँचाने या उसके मालिक को नुकसान पहुँचाने के लिए उसे खराब करते हैं। इसके अलावा, वे मौजूदा वेबसाइट को नष्ट कर देते हैं या उसमें बदलाव करके उसकी कीमत कम कर देते हैं।

आधुनिक समय में आतंकवाद 10–20 साल पहले की तुलना में ज्यादा बढ़ गया है। लेकिन **साइबर आतंकवाद** सिर्फ आतंकवादियों या आतंकवादी संगठनों से सम्बन्धित नहीं है। बल्कि किसी व्यक्ति या सम्पत्ति को खतरे में डालना भी साइबर अपराध है।

भारत में साइबर अपराध– वेब दुनिया या साइबरस्पेस लाखों और अरबों उपयोगकर्ताओं और वेबसाइटों का एक विशाल समुदाय है। इसके अलावा, लोग खरीदारी, फिल्में, संगीत, वीडियो गेम, लेन–देन और ई–कॉमर्स आदि जैसे विभिन्न उपयोगों के लिए इसका उपयोग करते हैं।

प्रौद्योगिकी के इस युग में और इंटरनेट तक आसान पहुँच के कारण कोई भी व्यक्ति आसानी से इस तक पहुँच सकता है। इसके अलावा इंटरनेट ने सूचनाओं की ऐसी दुनिया खोल दी है जिससे कोई भी जुड़ सकता है।

समय की कीमत

खुशी कुमारी

बी.ए. प्रथम वर्ष

एक गाँव में एक बूढ़ा आदमी रहता था, वो बूढ़ा आदमी अपने बेटे से परेशान रहता था। उसका बेटा बहुत नालायक था, वो कोई काम नहीं करता था, बस गाँव में इधर से उधर घूमा करता था। एक दिन उस बूढ़े आदमी ने उसे सबक सिखाने के लिए उसे अपने पास बुलाया, उन्होंने कहा– "घर के अन्दर अलमारी में एक घड़ी रखी है।" लड़का अन्दर गया और घड़ी लेकर आया, तो उन्होंने कहा कि "यह घड़ी अपने साथ बाजार लेकर जाओ और सबसे इस घड़ी की कीमत पूछकर आना।" लड़का वो घड़ी लेकर बाजार चला गया। उसने उस घड़ी की कीमत सबसे पूछी। किसी ने उस घड़ी की कीमत 500 बताई, किसी ने 700 बतायी तो किसी ने 900 बतायी, सभी लोगों ने उस घड़ी की कीमत अलग–अलग बताई। उन्होंने कहा– ठीक है, इस घड़ी को वापस अलमारी में रख आओ।"

अगले दिन उस बूढ़े आदमी ने फिर अपने लड़के को बुलाया और बोला– वह घड़ी फिर से निकालकर लाओ। वो लड़का फिर बाजार जाने के लिए तैयार होता है, तो वह आदमी कहता है कि, पहले मेरी बात सुनो! तुम इस घड़ी के अन्दर जो समय चल रहा है उसकी कीमत पूछकर आओ। लड़के को समझ नहीं आ रहा था कि पिता जी उससे क्या कराना चाहते हैं, वह दुःखी मन से फिर बाजार चला गया।

सभी लोगों से उस घड़ी के अंदर की कीमत पूछने लगा। सभी लोगों ने आपस में विचार किया और कहने लगे, लगता है इस बच्चे की मानसिक स्थिति खराब है, कल ये घड़ी की कीमत पूछने आया था, आज ये घड़ी के समय की कीमत पूछने आया है।

सभी लोगों ने उसे भगा दिया और कुछ लोग उस पर हँसने लगे। फिर वो लड़का परेशान हो जाता है, उसे एक बूढ़ा आदमी दिखता है वह उससे पूछने लगता है, तो उस बूढ़े आदमी ने कहा "देखो बेटा! ये जो समय है ना, इसकी कोई कीमत नहीं लगा सकता है, जो अमीर होता है वो समय का सदुपयोग करता और जो गरीब होता वो भी समय का सदुपयोग करता है। ये तुम्हारे ऊपर है कि समय का कैसे इस्तेमाल करना है, इन्सान का एक–एक पल बहुत कीमती होता है। अपने समय को व्यर्थ न करके इसे अपने काम करने में लगाओ। ऐसा सुनकर उस लड़के की आँखें खुल गईं और वो अपने पिता के पास वापस गया तथा सारी बात बतायी। उस दिन के बाद से उस लड़के की जिंदगी बदल गई वह अपना समय अच्छे कामों में लगाने लगा और अच्छा इन्सान बन गया।

शिक्षक दिवस

शिवानी मौर्या
बी.ए. प्रथम वर्ष

आप देते हो हमको शिक्षा
फिर लेते हो हमारी परीक्षा।
गलती करें तो हमें समझाते,
हम रोयें तो हमें हँसाते।
माता ने दिया है जीवनदान,
आप बनाते हो इसे महान।
ज्ञान का दीप आप जलाकर,
हमारी चमक बढ़ाते हो।
विद्या का जल हमें पिलाकर
जीने का ढ़ंग सिखाते हो।
इसलिए मैं कहती हूँ,
जीवन में कुछ पाना है तो
शिक्षक का सम्मान करो।
शीश झुकाकर आदर से तुम
बच्चों उन्हें प्रणाम करों।

बेटियाँ

सोनाली रावत
बी.ए. प्रथम वर्ष

बेटियाँ पराया धन नहीं हैं,
बेटियाँ तो घर को रोशन करती हैं
ये वो नहीं जिनको मारा जाये
ये वो हैं जिनसे घर भी स्वर्ग बन जाता है
ये बेटियाँ सबकी लाडली हैं,
फिर भी क्यों इन्हें मारा जाता है?
क्यों इन्हें रूलाकर चुप बैठाया जाता है?
इन्हें तो आगे बढ़ाना चाहिए
बेटियाँ तो अध्यापिका की तरह होती हैं,
सबको कुछ न कुछ सीख देकर जाती हैं
जब ये परायी होती हैं, इन्हीं की तो याद आती है,
ये पत्नी और माँ का फर्ज निभाती हैं
इसलिए तो कहते हैं ये बेटियाँ तो बाबुल की
परियाँ हैं, हर घर की ये कहानियाँ हैं।

लघु कथा

बेवकूफ़ राजा

सुनेहा
बी.ए. प्रथम वर्ष

एक बेवकूफ़ राजा के राज्य में चोरी की वारदात बहुत बढ़ गयी थी। अवाम ने गुहार लगायी महामहिम त्राहिमाम–त्राहिमाम। राजा की नींद में इससे खलल पड़ी। वो अपने नित्य शिकार क्रिया तथा भ्रमण में किसी तरह का खलल बर्दाश्त नहीं करता था। उसने आदेश जारी कर दिया कि राज्य के सभी लोगों को सौ–सौ डंडे लगाये जाएँ। लोगों ने पूछा माई–बाप ऐसा क्यों? राजा ने कहा चोर तुम्हारे बीच में से ही है, तो दण्ड उसे भी अपने आप पड़ जायेंगे।

तुम्हें थोड़ा दर्द तो होगा मगर राज्यहित में थोड़ा सहयोग तो करो।

क्या आप जानते हैं

महवीश
बी.ए. प्रथम वर्ष

प्र0 1–पृथ्वी पर सबसे पहले कौन सी सब्जी उगाई गई थी?

उ0 – मटर।

प्र0 2–नीला सेब कहाँ पाया जाता है?

उ0 – चीन।

प्र0 3–भारत के किस राज्य में केवल दो जिले है?

उ0 – गोवा।

प्र0 4–दुनिया का सबसे बड़ा फल कौन सा है?

उ0 – कटहल।

प्र0 5–किस जीव का दिमाग उसके शरीर से बड़ा होता है?

उ0 – चींटी।

प्र0 6–कर्क रेखा भारत के कितने राज्यो से गुजरती है?

उ0 – 8 राज्यों से।

प्र0 7–सबसे बड़ा अण्डा किस पक्षी का होता है?

उ0 – शुतुरमुर्ग का।

प्र0 8–किस जानवर के दूध में सबसे ज्यादा प्रोटीन होता है?

उ0 – बकरी।

प्र0 9–किस देश के लोग भारत नहीं घूम सकते?

उ0 – उत्तर कोरिया।

प्र0 10–कौन सा फूल 36 साल में एक बार खिलता है?

उ0 – नाग पुष्प।

प्र0 11–भारत का राष्ट्रीय पेड़ कौन–सा है?

उ0 – बरगद।

प्र0 12–वीवो किस देश की कम्पनी है?

उ0 – चीन।

प्र0 13– बासी चावल खाने से कौन सी बीमारी ठीक होती है?

उ0 – कब्ज।

प्र0 14–भारत का सबसे बड़ा चिड़िया घर कहाँ स्थित है?

उ0 – चेन्नई के कांचीपुरम में स्थित अरीनगर अन्ना जूलॉजिकल पार्क।

प्र0 15–किस देश में सूर्य हरा दिखाई देता है?

उ0 – नार्वे में।

महिला सशक्तिकरण

वंशिका यादव
बी.ए. प्रथम वर्ष

औरत मोहताज नहीं किसी गुलाब की
वो खुद बागवान है इस कायनात की।

प्राचीन काल से महिलाओं पर अन्याय और अत्याचार होते आ रहे हैं। जो सभी महिलाएँ तबसे लेकर आज तक सिर्फ सहती आ रही हैं। क्योंकि पुराने जमाने में सभी क्षेत्रों में सिर्फ पुरूषों का ही वर्चस्व था। इसलिए किसी भी क्षेत्र में महत्वपूर्ण निर्णय लेने के सभी अधिकार भी पुरूषों के हाथों में ही थे, इसलिए एक घर में महिलाओं से जुड़े सभी निर्णय भी पुरूष ही लेते थे।

महिलाओं को आज के आधुनिक युग में भी पुरूषों के जैसा मान–सम्मान नहीं मिलता है, क्योंकि जब किसी महिला का विवाह होता है, तो पुरूष उस महिला को अपनी सम्पत्ति मानता है। उसी तरह कुछ क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं को पुरूषों के मुकाबले बहुत कम वेतन दिया जाता है। जिसका एक ही कारण होता है कि वो एक स्त्री है, जो बहुत ही अपमानजनक बात है।

महिला सशक्तिकरण में क्रान्ति– सभी महिलाओं के लिए बहुत जरूरी है, जिसमें वो अपने निर्णय खुद ले सकती हैं। जिसके लिए उनको किसी भी पुरूष पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है।

प्राचीन समय में महिलाओं पर बहुत ज्यादा अत्याचार होते थे, लेकिन जैसे–जैसे समय बदलता गया, वैसे–वैसे महिलाओं की सोच में बदलाव होता गया। जिस कारण उनको अपने ऊपर हो रहे अन्याय का एससास होने लगा। जिसकी वजह से उनके मन में इस अन्याय से छुटकारा पाने की सोच जाग गई।

अधिकारों के बारे में जागरूकता– महिला सशक्तिकरण की वजह से समाज में रहने वाले पुरूषों के अन्याय से पीड़ित सभी महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता हो गई, जिस कारण इस समाज में उनकी जगह भी पुरूषों के समान कैसे की जाए इस पर सभी महिलाएं ध्यान देने लगी थीं। जिससे उन्होंने वो सभी अधिकार प्राप्त किए, जो पहले के समय में सिर्फ पुरूषों के हाथों में ही थे।

भारत में महिला सशक्तिकरण– दुनिया के सभी विकसित देशों में रहने वाली महिलाएँ बहुत आगे निकल चुकी हैं। अब वो हर उस मंजिल तक पहुँच गई हैं, जहाँ पहले सिर्फ पुरूष ही हुआ करते थे, लेकिन कुछ विकासशील देशों में आज भी महिला सशक्तिकरण की जरूरत है। जिसमें अपना भारत देश भी है, जहाँ आज भी महिलाओं को पूर्ण रूपेण सुरक्षा नहीं मिलती है और न ही पूर्ण रूप से सभी अधिकार।

महिला सशक्तिकरण आज के समय की जरूरत है। महिलाओं की स्थिति में हो रही प्रगति देश के विकास के लिए बहुत ज्यादा जरूरी है। इसलिए देश के सभी छोटे–बड़े क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण की जागरूकता फैलाना बहुत जरूरी है। सभी महिलाओं को समाज से डरकर नहीं बल्कि झाँसी की रानी की तरह एक योद्धा बनकर आगे आना चाहिए। क्योंकि झाँसी की रानी वो योद्धा थी, जिन्होंने एक स्त्री होकर भी अंग्रेजों की गुलामी के खिलाफ आवाज उठायी थी। इन्होंने पूरे देश को उस स्वतन्त्रता संग्राम में एक किया था।

हिन्दी दिवस

उषा देवी
बी.ए. प्रथम वर्ष

अंग्रेजी में नंबर थोड़े कम आते हैं,
अंग्रेजी बोलने से भी घबराते हैं,
पर स्टाइल के लिए पूरी जान लगाते हैं
क्योंकि हम हिन्दी बोलने से शर्माते हैं

एक वक्त था जब हमारे यहाँ
हिन्दी का बोलबाला था।
माँ कि आवाज में भी सुबह का उजाला था।
उस माँ को अब हम MOM बुलाते हैं
क्योंकि हम हिन्दी बोलने से शर्माते हैं

देश आगे बढ़ गया है, पर हिन्दी पीछे रह गयी
इस भाषा से अब हम नजर चुराते हैं।
क्योंकि हम हिन्दी बोलने से शर्माते हैं

माना कि अंग्रेजी पूरी दुनिया को चलाती है
पर हिन्दी भी हमारी पहचान दुनिया में कराती है।
क्यों न अपनी मातृभाषा को फिर से सर आँखों पर बिठाएँ।
आओ सब मिलकर हिन्दी दिवस मनाएँ।

सुविचार

प्रियंका
बी.ए. प्रथम वर्ष

जब सपने हमारे हैं
फिर तो कोशिशें भी हमारी होनी चाहिए,
इसमें दूसरों को क्यों दोषी ठहराना।
शिक्षा वह दरवाजा है
जिसे खोलकर आप तरक्की के
सारे रास्ते खोल सकते हैं।
चारों ओर अच्छा देखने के लिए
सोच का अच्छा होना जरूरी है
शांति की खोज में पर्वत–पहाड़ की
खाक क्यों छानते हो
सच्ची शांति को खोजना है
तो स्वयं के भीतर झाँको।
खो देता है जो वक्त को
वह जिंदगी भर पछताता है
क्योंकि गुजरा हुआ वक़्त
कभी लौटकर नहीं आता है।
गुस्सा ही एक ऐसा हथियार है
जो आपका होते हुए भी
आप पर वार करता है।

प्रेरक कहानी

स्वाति गौतम
बी.ए. प्रथम वर्ष

एक बार की बात है, एक छोटा–सा बीज जमीन में गढ़ा हुआ था। उसे लगता था कि वो बहुत छोटा है और कुछ भी नहीं कर सकता। उसने जमीन से बाहर निकलने की कोशिश की लेकिन जमीन बहुत सख्त थी। "मैं इतना छोटा हूँ, मै कभी बड़ा पेड़ नहीं बन सकता," उसने सोचा। तभी एक बूँद पानी गिरा। बीज ने पानी से पूछा, "क्या मैं कभी बड़ा पेड़ बन पाऊँगा? पानी ने मुस्कराकर कहा "हाँ बिलकुल। तुन्हें बस धैर्य रखना होगा और बढ़ते रहना होगा। सूरज की रोशनी और बारिश तुम्हारी मदद करेंगे।" बीज ने पानी की बातों को याद रखा और मेहनत से बढ़ता रहा। कुछ समय बाद, वो एक छोटा–सा पौधा बन गया। फिर धीरे–धीरे वो एक बड़ा पेड़ बन गया।

हर छोटी–सी शुरूआत एक बड़ी सफलता की ओर ले जाती है। बस धैर्य रखें और मेहनत करते रहें।

सामान्य ज्ञान

शालिनी गौतम
बी.ए. द्वितीय वर्ष

(1) रोमन देवता जेनस के नाम पर वर्ष के पहले महीने **जनवरी** का नाम रखा गया।
(2) एक वैज्ञानिक ने मृत्यु से तुरंत पहले व बाद में मानव शरीर को तौलकर पता लगाया कि आत्मा का वजन **21 ग्राम** होता है।
(3) मांसाहारी जीवों में अन्य जीवों की तुलना में शेर का दिल आकार में सबसे **छोटा** होता है।
(4) ब्लू व्हेल का दिल एक मिनट में सिर्फ **एक बार धड़कता** है।
(5) ऊँट को कभी पसीना नही आता और वो एक बार में **100 से 150** लीटर पानी पी लेता है।
(6) हम प्रत्येक 6 सेकेंड में अपनी आँखे झपकाते हैं। यानी पूरे जीवन में हमारे आँखे करीब **25 करोड़ बार** झपकती हैं।

कलम का इतिहास

शालिनी गौतम
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कलम को हर कोई जानता है,
अनपढ़ भी इसे पहचानता है।

सदियों पहले भारत ने ही दुनिया का
कलम से परिचय कराया था।

सर्वप्रथम पक्षियों के पंख को
लेखन का माध्यम बनाया था।

सरकंडे की कलम तो कहीं–कहीं
अभी भी प्रयोग में लाई जाती है।

निब वाले होल्डर और दवात की
बुजुर्गो को अकसर याद आती है।

बाद में फाउंटेन पैन चलन में आया
बरसों तक उसने भी अपना रंग जमाया

अब बाल प्वाइंट का जमाना है
सस्ता सुन्दर सुविधा जनक, सबने इसे माना है।

ये शिक्षक कहलाते हैं

उम्मे हानी
एम.ए. द्वितीय वर्ष

वो अपने ज्ञान की ज्योति से
घर–घर ज्ञान का दीप जलाते हैं
जो बच्चों को पाठ पढ़ाते हैं
वो राष्ट्र निर्माता कहलाते हैं
ये शिक्षक कहलाते हैं।
कभी डाँट कर कभी प्यार से
कितना कुछ हमको समझाते हैं
है भविष्य देश का जिनमें
उन सबका भविष्य बनाते हैं
ये शिक्षक कहलाते हैं।
अज्ञानता के काले बादल हटाकर
ज्ञान की रोशनी फैलाते हैं
जो सदैव सत्य मार्ग पर चलना सिखाते हैं
वो ही असली पथ प्रदर्शक बन जाते हैं
ये शिक्षक कहलाते हैं।
हार–हार के फिर से लड़ना ही
जीत है सच्ची
ऐसा एहसास, ये हमको करवाते हैं
कोशिश करते रहना हर पल
जीवन का अर्थ हमें ये बताते हैं
ये शिक्षक कहलाते हैं
ये शिक्षक कहलाते है।।

मैं भारत की बेटी

शिवानी रावत

बी.ए. द्वितीय वर्ष
(स्वरचित)

मैं भारत की बेटी
इस देश को नमन करती हूँ।
जहाँ माँ दुर्गा, माँ काली के रूप में
स्त्री को पूजा जाता है।

मैं भारत की बेटी
इस देश को नमन करती हूँ।
जहाँ सूरज, चाँद, तारे आदि ब्रह्माण्डों
को पूजा जाता है।

मैं भारत की बेटी
इस देश को नमन करती हूँ।
जहाँ गंगा, यमुना, सरस्वती नदियों को
माता कहकर बुलाया जाता है।

मैं भारत की बेटी
इस देश को नमन करती हूँ।
जहाँ अपने से बड़ों का आदर–सम्मान
किया जाता है।

मैं भारत की बेटी
इस देश को नमन करती हूँ।
जहाँ सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है।

मैं भारत की बेटी
इस देश को नमन करती हूँ।
जहाँ स्त्री को आत्म रक्षा के लिए
शस्त्र उठाने का ज्ञान दिया जाता है।

मैं भारत की बेटी
इस देश को नमन करती हूँ।
जहाँ चिकित्सक को ईश्वर का
रूप माना जाता है।

मैं भारत की बेटी
इस देश को नमन करती हूँ।
जहाँ जय जवान, जय किसान का
नारा लगाया जाता है।

तिरंगे का कर्ज़

उम्मे हनी

एम.ए. द्वितीय वर्ष

लाल रक्त से धरा नहाई,
श्वेत नभ पर लालिमा छायी,
आजादी के नव उद्घोष पर,
सबने वीरों की गाथा गायी।

गाँधी, नेहरू, पटेल, सुभाष की,
ध्वनि चारों ओर है छायी,
भगत, राजगुरू और सुखदेव की
कुरबानी से आँखें भर आईं।।

ऐ भारत माता तुझसे अनोखी,
और अद्भुत माँ न हमने पायी,
हमारे रगो में तेरे कर्ज़ की,
एक–एक बूँद समायी।

माथे पर है बाँधे कफन
और तेरी रक्षा की कसम है खायी,
सरहद पे खड़ा रहकर,
आजादी की रीत निभाई
हमारे रगो में तेरे कर्ज़ की,
एक–एक बूँद समायी।।"

रानी लक्ष्मीबाई जिनकी गाथा मैं सुनाती हूँ

खुशी भारद्वाज

बी.ए. द्वितीय वर्ष
(स्वरचित)

भरी सभा में आज मैं इतिहास पुनः दोहराती हूँ
है वो रानी लक्ष्मी बाई जिनकी गाथा मैं सुनाती हूँ

लिए लक्ष्मी और दुर्गा का रूप, लिए अवतार वीरता का।
हो स्वाभिमानी, बन स्वावलम्बी लहराया परचम स्वयं का।।
उनकी महानता उनके शौर्य से सबको अवगत कराती हूँ
वो रानी लक्ष्मीबाई जिनकी गाथा मैं सुनाती हूँ।

जब हर स्त्री के कंधों पर घर का भार होता था
तब लक्ष्मी बाई को बरछी, ढाल, तीर–तलवार सोहता था।।
कई प्रथाएँ तोड़ बढ़ी वह, मैं उन्हें अपना प्रेरक पाती हूँ
वो रानी लक्ष्मीबाई जिनकी गाथा मैं सुनाती हूँ।

यही शौर्य है यही है गाथा, रानी लक्ष्मी बाई की।
वह स्त्री आगे बढ़कर भारतवर्ष पर छाई थी
सबको इनसे प्रेरित करके, मन में उत्साह जगाती हूँ।
इसीलिए मैं रानी लक्ष्मीबाई की ऐतिहासिक गाथा गाती हूँ।

पिता

एकता पाण्डेय
एम.ए. प्रथम वर्ष

किसी ने क्या खूब कहा है कि जेब खाली हो फिर भी मना करते नहीं देखा, मैंने पापा से अमीर इन्सान नहीं देखा।

नमस्ते, मैं एकता पाण्डेय एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा,

माँ की ममता, माँ के प्यार पर तो बहुत कुछ लिखा गया है, आज मैं पिता पर कुछ लिखना चाहूँगी।

अस्पताल में मेरा जन्म होने के साथ इसकी शुरूआत होती है वो था.....

क्योंकि अभी तो मैने पहली साँस भी न ली थी और उसकी धड़कने तेज हो चुकी थीं, मेरी पहली किलकारी सुनते ही पूरे अस्पताल में मिठाई बँट चुकी थी,

याद नहीं मुझे कि सबसे पहले किसकी गोद में गयी थी, पर शायद उसी का हाथ था जो सबसे पहले मेरे सिर पर फिरा था,

हाँ खाने की किल्लत थी हमारे घर में, पर फिर भी खिलौने सजा रखे थे, अपने सपने बीच में छोड़ कर मेरे लिए F.D. में पैसे बचा रखे थे,

कौन था वो शख्स?

क्योंकि लफ्ज़ों की दुनिया से मैं अभी भी अंजान थी,

पर न काम, न कुछ और बस मेरा हँसता चेहरा ही, उसकी असली जान थी,

दिन भर वो धूप में तपता रहता, मिट्टी में अपना बदन भिगोता रहता, लेकिन घर आते ही सब छोड़–छाड़कर कभी मुझे हाथों में उछालता, कभी हाथी तो कभी घोड़ा बनकर मेरे साथ खेलता और मुझे सीने से लगाता,

आखिर कौन है वो?

जो अपने हिस्से की रोटी मुझे खिलाकर खुद भूखे पेट सोता था, जिसे बुखार तो आता था लेकिन आराम नहीं करता था, जिसे दर्द तो होता था लेकिन बाँट नहीं पाता था, शायद आँसू तो आते थे उसकी प्यारी–सी आँखों में लेकिन कभी बहा नहीं पाता था,

कौन है वो?

जो मेरी जवानी के साथ खुद बूढ़ा हो रहा था। दर्द ने उसके पैरों को जकड़ रखा था पर मेरे लिए भाग रहा था।

जवानी मुझपर चढ़ती गई बाल उसके सफेद होने लगे, जो अब तक मेरी आँखों के साथी थे।

आज वही आँसू उसकी आँखों से बहने लगे।

घुटनों से लेकर चलने तक का सफर मैंने उसके साथ तय किया है, पिता नहीं मैंने उसे भगवान का दरजा दिया है,

क्योंकि धरती पर रूप भगवान का पिता ही तो है,

पिता के बिना जीवन की हर सफलता अधूरी है।

वो और कोई नहीं वो पिता हैं।

पहचान

सलोनी गौतम (स्वरचित)
बी.एस–सी. प्रथम वर्ष

चलो अब नयी पहचान बनाते हैं,
जिन्दगी को कैसे जीना है ये सीख कर आते हैं।

दुनिया जहाँ की बातें भूलकर फिर से मुस्कुराते हैं,
खुशियाँ पेन्डिंग में नहीं डाउनलोडिंग पर लगाते हैं।

करके मेहनत हम अपने सपनों को
एक नयी उड़ान भरना सिखाते हैं।

बनानी है अगर तुमको एक अपनी अच्छी पहचान
तो अपने अंदर की सारी नेगेटिव थिंगस को मिटाते हैं।

थकना नहीं है आखिरी साँस तक
दुनिया को अपनी नयी पहचान दिखाते हैं।

चलो अब नयी पहचान बनाते हैं,
ज़िन्दगी को कैसे जीना है ये सीख कर आते हैं।

उड़ने की आशा

मीना वर्मा
बी.ए. प्रथम वर्ष

कभी–कभी मैं हार कर बिखर जाती हूँ
पर तू मुझे समेट कर जीत बना देती है।

आसमान में उड़ना आसान तो नहीं
पर उड़ने की आशा कम भी तो नहीं।

मैं हर छोटी बात पर रो देती हूँ बेशक
पर मैं कमजोर हूँ ऐसा भी नहीं।

मेरी आँखों से गिरते आँसू ये गवाही देते हैं
मैने खुद को सँभाला है हर परिस्थिति में।

टूट कर फिर जोड़ती हूँ मैं खुद को
इतना मजबूत बनाया है मैंने खुद को।

पुलवामा हमला

शिवानी रावत
बी.ए. द्वितीय वर्ष
पिता का नाम– फूलचन्द्र रावत
(स्वरचित)

प्रेम दिवस है नहीं आज, न सजाना दिवानों गुलाबों भरा गमला
अगर सच्चे भारतीय हो यारों, याद करो जरा पुलवामा हमला
जिन आँखों में मौत का खौफ़ न था जिन दिलों को जन्नत का शौक न था
जिनकी ज़िन्दगी सरहद की शाम थी, जिनकी नींदें वतन पे नीलाम थीं
जरा याद करो उन वीरों को जिनकी हर साँस वतन के नाम थी,
छोड़ चले थे वो वीर आज इस जमीं को, चुन लिया था आँखों ने आँखों में छिपी नमी को
तिरंगे से लिपटी उनकी लाश जब घर को आयी थी छूटा था किसी के माँग का सिन्दूर
किसी की चहकती चिड़िया चीख–चीख चिल्लायी थी, किसी के बापू ने छिपाये थे खुद के आँसू खुद की निगाहों में
किसी की माँ ने समेटा था बेटे को अपनी बाँहों में, बिलख–बिलख के वो बूढ़ी माँ,
कुछ यूँ बोल रही थी कि जब तक लोरी न सुनाऊँ लाल को मेरे नींद न आये
आज लोरी सुने बिना ही सो गया उठाने पर उठता नहीं,
कितने गहरे ख्वाबों में खो गया, शत्–शत् नमन करूँ
मैं इन वीर जवानों को, कभी न भूलूँगी अपने देश के इन परवानों को
बहुत हुआ अब, हमने बहुत सहन कर लिया, खूब थामा चुप्पी को
खूब शान्त कर लिया सीने में धधकती ज्वाला को
देशद्रोहियों को जलाना होगा, देश की रोटी खाकर
जो देश की मर्यादा भूल बैठे हैं, ऐसे गद्दारों को देश से बाहर भगाना होगा।

जय हिन्द
जय भारत

तुम्हें जगाने आया हूँ

निशि शुक्ला
बी.ए.II

हे भारत के राम जगो, मैं तुम्हें जगाने आया हूँ , सौ धर्मों का धर्म एक बलिदान बताने आया हूँ।
सुनो हिमालय कैद हुआ है दुश्मन की जंजीरों में, आज बता दो कितना पानी है भारत के वीरों में
खड़ी शत्रु की फौज द्वार पर आज तुम्हें ललकार रही, सोए सिंह जगो भारत के, माता तुम्हें पुकार रही।
रण की भेरी बज रही उठो मोह निद्रा त्यागो, पहला शीष चढ़ाने वाले माँ के पुत्र जागो।
बलिदानों के वज्रदण्ड पर देशभक्त की ध्वजा जगे, रण के कंकण पहने हैं, वे राष्ट्रभक्ति की भुजा जगें।
नर मुण्डों की माला वाली जगे कपाली कैलाशी, रण की चण्डी घर–घर नाचे मौत कहे प्यासी–प्यासी।
रावण का वध स्वयं करूंगा, कहने वाला राम जगे और दुष्ट शेष न एक बचेगा कहने वाला श्याम जगे।
परशुराम का फरसा जागे, रघुनन्दन का बाण जगे, यदुनन्दन का चक्र जगे, अर्जुन का धनुष महान जगे।
हठी हम्मीर जगे जिसने, झुकना कभी न जाना, जगे पद्मिनी का जौहर, जगे केसरिया बाना।
देशभक्ति का जीवित झंडा आज़ादी का दीवाना, वह प्रताप का सिंह जगे, वह हल्दी घाटी का राणा।

उठो द्रौपदी शस्त्र उठा लो

छोड़ो मेहन्दी खड़ग उठा लो, खुद ही अपना चीर बचा लो
द्यूत बिछाए बैठे शकुनि मस्तक सब बिक जाएंगे, उठो द्रौपदी शस्त्र उठा लो अब गोविन्द न आएंगे

कब तक आस लगाओगी तुम बिके हुए अखबारों से कैसी रक्षा माँग रही हो दुःशासन दरबारों से,
स्वयं जो लज्जाहीन पड़े हैं वो क्या लजा बचाएगें, उठो द्रौपदी शस्त्र उठा लो अब गोविन्द न आएंगे

कल तक केवल अन्धा राजा अब गूंगा बहरा भी है। होठ सीं दिये हैं जनता के, कानों पर पहरा भी है।
तुम ही कहो ये अश्रु तुम्हारे किसको क्या समझाएंगे, उठो द्रौपदी शस्त्र उठो लो अब गोविन्द न आएंगे

गुरू से बड़ा न कोई

यशी सोनवानी
बी.ए. प्रथम वर्ष

चाहे हो राजा–महाराजा या स्वयं ही लक्ष्मी होय
पर इतना मानव जान लो
गुरू से बड़ा न कोय।

सत्य है! इस संसार में गुरू से बड़ा कोई नहीं है। स्वयं भगवान राम भी गुरू के भक्त थे। चाहे वह सतयुग हो, त्रेतायुग या द्वापर हो किन्तु हर युग में गुरू का स्थान ही सबसे उत्तम व सर्वोपरि रहा है।

इस संसार में मानव गुरू के बिना एक गूँगे पशु की भाँति है जिसे अपना पेट भरने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं पता है। वह जानेगा तो बस इताना कि इस दुनिया में पेट पूजा ही अत्यन्त आवश्यक कार्य है, किन्तु वह यह नहीं समझ पायेगा कि पेट पूजा से उत्तम प्रभु पूजा है। यदि प्रभु आप पर प्रसन्न, तो कोई भी इस संसार में भूखा नहीं रहता और प्रभु भक्ति का यह ज्ञान देने वाला है 'गुरू'। गुरू ही हमें बताता हैं कि हम किस प्रकार ईश्वर की वन्दना करें और गुरू ही हमें ईश्वर को प्राप्त करने का रास्ता ज्ञात कराता है। जैसे कबीरदास जी कहते हैं–

बलिहारी गुरू आपणै, द्यौ हाड़ी कै बार।
जिन मानिष तै देवता, करत न लागी बार।।

कबीरदास जी ने भी इस दोहे में कहा है कि मैं दिन में अनेक बार अपने गुरू पर न्यौछावर जाता हूँ जिसने मुझे ज्ञान देकर अपने स्वरूप की पहचान करा दी अर्थात मुक्ति का मार्ग दिखाया।

भगवान जो स्वयं विष्णु के अवतार थे, उन्होंने भी गुरू वशिष्ठ से ज्ञान प्राप्त किया। इसी प्रकार महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने अपने सामने अपने पारिवारिक सदस्यों को अपने विरूद्ध सामने खड़ा देखा, तो उनके हाथ बाण चलाने के लिए नहीं उठे, तब अर्जुन के सारथी बने श्री कृष्ण ने एक गुरू की भाँति उपदेश दिए और सही मार्ग दिखाया।

गुरू का अर्थ यही नहीं कि जो हमें विद्यालय में किताबी ज्ञान दे या विद्यालयी शिक्षक को ही गुरू की उपाधि नहीं दी जाती। वह तो हमारे गुरू होते ही हैं, हमारे जीवन को उन्नति की ओर ले जाने वाले, किन्तु हर वह व्यक्ति जो हमें सही मार्ग दिखाए, हमें ज्ञान दे, हमारा गुरू है चाहे उसने हमें जीवन में एक ही बार ज्ञान क्यों न दिया हेा। कभी–कभी किसी की कही एक बात हमारा सम्पूर्ण जीवन सँवार देती है। ऐसी स्थिति में वह हमारा सबसे बड़ा गुरू हुआ जिसके एक उपदेश ने पूरा जीवन सँवार दिया।

गुरू न कोई एक है, न कोई एक महान। हर वह मानव गुरू है दे दे जो नेकी का ज्ञान।।

वर्तमान समय में गुरू और शिष्य की मर्यादा कुछ समाप्त होती जा रही है। आज का अत्यधिक विद्यार्थी यह सोच रखता है कि यह हमें शिक्षा दे रहे हैं तो हम इनसे मुफ्त में शिक्षा नहीं ले रहे हैं और कुछ तो गुरू के साथ दुर्व्यवहार भी करने लगे हैं। आज के समय में ज्यादातर विद्यार्थियों को वही गुरू पसन्द आते हैं, जो उनकी गलतियों को नजर अन्दाज करते हैं, कुछ बड़े माँ–बाप की अमीर बिगड़ी हुई औलादें अपने माता–पिता की ऊँची पोस्ट और पैसों के घमण्ड में गुरू की इज्जत नहीं करते हैं। कुछ विद्यार्थी गुण्डागर्दी और नेतागीरी में रहते हैं। मौका लगते ही गुरू की अवहेलना करने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

इन मर्यादाओं के भंग होने पर भी मैंने अनुभव किया है कि भले ही विद्यार्थी को गुरू की चिन्ता न हो या गुरू का सम्मान न करता हो फिर भी गुरू को अपने शिष्य के भविष्य की चिन्ता रहती है। उसी प्रकार जिस प्रकार पुत्र कितना भी कुपुत्र हो माँ की ममता उसके लिए कम नहीं होती उसी प्रकार विद्यार्थी कितनी भी गुरू की निन्दा करे गुरू केवल उसके भविष्य की चिन्ता करता है। वह हर समय उसे सही मार्ग दिखाने में लगा रहता है। कुछ विद्यार्थियों को सही मार्ग दिखाने में गुरू को उसके दुर्व्यवहार को भी सहन करना पड़ता है तब भी गुरू यही कोशिश करता है कि उसके अन्दर की ये गन्दगी दूर हो जाए।

इसलिए कहते हैं गुरू से बड़ा न कोय।
हे मेरे गुरू, मार्ग दर्शक, तुम्हीं मेरे बन्धु तुम्हीं मेरे भर्ता।

हमें अपने गुरू की कभी भी निन्दा नहीं करनी चाहिए यदि गुरू हमें डाँटता भी है, तो हमें अपनी गलती पर विचार कर, उसमें सुधार लाना चाहिए, फिर आप देख सकते है कि गुरू आपको अपने से भी ज्यादा स्नेह प्रदान करेगा।

सुविचार

अर्पिता श्रीवास्तव
बी.ए. प्रथम वर्ष

(1) सपने वो नहीं जो आप सोते समय देखते हैं, सपने वो हैं जो आपको सोने नहीं देते।
(2) नेगेटिविटी एक ऐसी भयानक बीमारी है जो जिन्दा इंसान को मुर्दा बना देती है।

डॉ0 अब्दुल कलाम

(3) जितना बड़ा संघर्ष होगा,
जीत उतनी ही शानदार होगी।

स्वामी विवेकानन्द

प्रेरक प्रसंग–

खतरे के आगे डरो मत

अंशिका तिवारी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

स्वामी विवेकानन्द बचपन से ही निडर थे, जब वह आठ साल के थे तब वे एक मित्र के यहाँ खेलने जाया करते थे। उसके घर में एक चंपक पेड़ था। एक दिन वह उस पेड़ को पकड़ कर झूल रहे थे। मित्र के दादाजी पहुँचे। उन्हें डर था कि कहीं नरेन्द्र गिर न जाएँ, इसलिए उन्होंने समझाते हुए कहा **"नरेन्द्र, तुम इस पेड़ से दूर रहो, क्योंकि इस पेड़ पर एक दैत्य रहता है।"**

नरेन्द्र को अचरज हुआ, उसने दादाजी से दैत्य के बारे में और भी कुछ बताने का आग्रह किया। दादाजी बोले,**"वह पेड़ पर चढ़ने वाले की गर्दन तोड़ देता है।"** नरेन्द्र बिना कुछ कहे आगे बढ़ता है, दादाजी भी मुस्कुराते हुए आगे बढ़ गए। उन्हें लगा कि बच्चा डर गया है, पर जैसे ही वे कुछ आगे बढ़े नरेन्द्र पुनः पेड़ पर चढ़ गए और डाल पर झूलने लगे। मित्र जोर से चीखा, "तुमने दादा जी की बात नहीं सुनीं।" नरेन्द्र जोर से हँसे और बोले, "मित्र डरो मत! **तुम भी कितने भोले हो! सिर्फ इसलिए कि किसी ने तुमसे कहा है उस पर यकीन मत करो, खुद सोचो अगर यह बात सच होती तो मेरी गर्दन कब की टूट चुकी होती।**

प्रेरणा गीत

सोनी चौरसिया
बी.ए. द्वितीय वर्ष

जो बीच राह में बैठ गये, वे बैठे ही रह जाते हैं,
जो लगातार चलते रहते, निश्चित ही मंजिल पाते हैं
माना कि दूर किनारा है, फिर सागर ने ललकारा है
तब बैठे रहना हाथ बाँध वीरों को नहीं गवारा है।
जो लगातार चलते रहते निश्चित ही मंजिल पाते हैं।

वे कायर हैं जो घर गये, नर–नाहर बाजी मार गये
इन तूफानों से टकराकर हिम्मत वाले उस पार गये।
जो तकदीर बदलने निकले हैं वो गीत खुशी के गाते हैं
जो लगातार चलते रहते निश्चित ही मंजिल पाते हैं

माना गहरा अँधियारा है, पर हमने कब स्वीकारा है
हम दीपक से जलते रहते, हमसे पग–पग उजियारा है
जो आगे बढ़ते रहते हैं, वे नव पथ दिखलाते हैं
जो लगातार चलते रहते हैं, निश्चित ही मंजिल पाते हैं।

ऐ ज़िंदगी फिर भी तू अच्छी लगती है

मीना वर्मा
बी.ए. प्रथम वर्ष

ऐ ज़िन्दगी तूने बहुत सितम किये हैं, मुझ पर,
फिर भी तू अच्छी लगती है
तूने एक पल मुझे हँसाया
दूसरे पल रूलाया
फिर भी तू अच्छी लगती है
तूने गम तो बहुत दिये मुझे
पर उस गम में भी
मुस्कुराना सिखाया।
ऐ ज़िन्दगी फिर भी तू अच्छी लगती है
माना राह में काँटे बहुत होते हैं।
मगर उन काँटों के पार चल कर
फूल भी तो होते हैं।
आँखों में आँसू होठों पर हँसी
तूने ऐसे दिन भी दिखाया मुझे।
ऐ ज़िन्दगी फिर भी तू अच्छी लगती है।

गरीबदास के चार बेटे

प्रिया सक्सेना
बी.ए. द्वितीय वर्ष

गरीबदास जी ने मुझे चाय पर बुलाया अपने चारों बेटों से मेरा परिचय करवाया। ये मेरा बड़ा लड़का है, एम.बी.बी. एस. पास है, नाम इसका हर्ष है पर रहता उदास है। ये जो टूटी खाट पर लेटा है, मेरा दूसरा बेटा है लंदन से आया है, इंजीनियरिंग की डिग्री लाया है। तीसरा जो नल से पानी भर रहा है हिन्दी में एम.ए. कर चुका है पी–एच.डी. कर रहा है।

चौथे का दिमाग जरूरत से ज्यादा हाई है पढ़–लिख नहीं पाया है इसलिए कटिंग सैलून चलाता है। अच्छे–अच्छों की हजामत बनाता है। मैंने कहा गरीब जी परिवार की रिपुटेशन को संभालिए। आपने तीनों लड़कों को तो खूब पढ़ाया पर यह मखमल में टाट का पैबंद कहाँ से आया? वह बोले निकाल तो दूँ पर आजकल यह अपने बहुत काम आ रहा है बाकी तो सब बेरोजगार हैं, घर का खर्चा तो यही चला रहा है।

कोशिश कर

मानसी
बी.ए. प्रथम वर्ष

कोशिश कर हल निकलेगा
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन–सा लक्ष्य रख निशाना लगा
मरूस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे
बंजर में भी फिर, फल निकलेगा।
ताकत जुटा हिम्मत को आग दे
फौलाद का भी बल निकलेगा।
सीने में उम्मीदों को जिंदा रख
समन्दर से भी, गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की
जो कुछ थमा–थमा है, चल निकलेगा।
कोशिश कर हल निकलेगा
आज नहीं तो कल निकलेगा।

धरती बचेगी, तब बचेंगे हम

ज्योति रावत
बी.ए. द्वितीय वर्ष

धरती बचेगी जब, तब बचेंगे हम
घनेरे पेड़ पग–पग पर छाँव धरे

बलखाती नदियाँ युगों से प्यास बुझातीं
नीले सागर गगन पर मेघ रचते

ऊँचे पर्वत सीना ताने बरखा बरसाते।
मदमस्त पवन जीवन हर्षाते

नदी, पर्वत, सागर, बादल, हवा और जल के बिना
आखिर कैसे बचेगी यह प्यारी धरती
आखिर तिनको के बिना कैसे रहेगा यह नीड़।

बेटियों के लिए

सोनी चौरसिया
बी.ए. द्वितीय वर्ष

लड़कों की तरह लड़की भी
मुट्ठी बाँध के पैदा होती है,
लड़कों की तरह लड़की भी
माँ की गोद में हँसती रोती है।
भूख लगे तो रोती है,
लोरी सुनकर सोती है,
दादा की लाडली
दादी का चश्मा तोड़ती है,
दुल्हन के जैसे माँ का
आँचल ओढ़ती है।
आती है दोनों की जवानी,
बनती है दोनों की कहानी
दोनों कदम मिलाकर चलते हैं,
दोनों दीपक बन के जलते हैं।
कुछ भी नहीं अन्तर फिर क्यों
जन्म से पहले मारी जाती हैं
सिर्फ बेटियाँ, बेटियाँ, बेटियाँ।

माँ

सलोनी प्रजापति
बी०ए० प्रथम वर्ष

माँ तो जन्नत का फूल है,
प्यार करना उसका उसूल है,
दुनिया की मोहब्बत फ़िजूल है,
माँ की हर दुआ कबूल है,
माँ को नाराज करना,
इन्सान की भूल है,
माँ के कदमों की मिट्टी,
जन्नत की धूल है,.....
माँ से ही भगवान है.....
और माँ से ही हम.....

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी

रोशनी
बी.ए. प्रथम वर्ष

नाव गंगा के इस पार खड़ी है। यात्रियों से लगभग भर चुकी है। रामनगर के लिए खुलने ही वाली है, बस एक–दो सवारी चाहिए। उसी की बगल में एक नवयुवक खड़ा है। नाविक उसे पहचानता है। बोलता है– 'आ जाओ, खड़े क्यों हो ? क्या रामनगर नहीं जाना है ? नवयुवक ने कहा,"जाना है, लेकिन आज मैं तुम्हारी नाव से नहीं जा सकता। क्यों भैया? रोज तो इसी नाव से आते–जाते हो, आज क्या बात हो गयी? आज मेरे पास उतराई देने के लिए पैसे नहीं हैं। तुम जाओ।"

अरे ! यह कोई बात हुई। आज नहीं, तो कल दे देना । नवयुवक ने सोचा, बडी मुश्किल से तो माँ मेरी पढ़ाई का खर्च जुटाती है। कल भी यदि पैसे का प्रबन्ध नहीं हुआ तो कहाँ से दूँगा ? उसने नाविक से कहा, तुम ले जाओ नौका, मैं नहीं जाने वाला। वह अपनी किताब–कापियाँ एक हाथ में ऊपर उठा लेता है और छपाक नदी में कूद जाता है। नाविक देखता ही रह गया। मुख से निकला– अजीब मनमौजी लड़का है।

छप–छप करते नवयुवक गंगा नदी पार कर जाता है। रामनगर के तट पर अपनी किताबें रखकर कपड़े निचोड़ता है। भीगे कपड़े पहनकर वह घर पहुँचता है। माँ रामदुलारी इस हालत में अपने बेटे को देखकर चिंतित हो उठीं।

"अरे! तुम्हारे कपड़े तो भीगे हैं, जल्दी उतारो।"

नवयुवक, ने सारी बात बतलाते हुए कहा, "तुम्हीं बोलो माँ, अपनी मजबूरी मल्लाह को क्यों बतलाता ? फिर वह बेचारा तो खुद गरीब आदमी है। उसकी नाव पर बिना उतराई दिए बैठना कहाँ तक उचित था। यही सोचकर मैं नाव पर नहीं चढ़ा। गगां पार करके आया हूँ। माँ रामदुलारी ने अपने पुत्र को सीने से लगाते हुए कहा, "बेटा, तू जरूर एक दिन बड़ा आदमी बनेगा।" वह नवयुवक अन्य कोई नहीं लाल बहादुर शास्त्री थे, जो देश के प्रधानमंत्री बने और 18 महीनों में ही राष्ट्र को प्रगति की राह दिखायी।

आत्मविश्वास

आरती प्रजापति
बी०ए० प्रथम वर्ष

1. ये आसमाँ छिन गया तो क्या, नया ढूँढ लेंगे,
   हम वो परिंदे नहीं जो उड़ना छोड़ देंगे।।
2. ये पारावर छूट गया तो क्या ? नया सागर ढूँढ़ लेंगे,
   हम वो कश्तियाँ नहीं जो तैरना छोड़ देगें !!
3. कदम चलते रहेंगे....जब तक साँस है।
   परिस्थिति से परे स्वयं पर हमें विश्वास है।
4. एक रास्ता मिला नहीं तो क्या नई राहें , ढूँढ लेंगे,
   हम वो मुसाफिर नहीं जो चलना छोड़ देंगे !!
5. ख्वाबों को महकता रखते हैं, हम मंजिलों से राब्ता रखते हैं।
   नशा हमें हमारी फितरत का, हर हार करती है बुलंद.....
   इरादा जीत का !
6. ये मुकाम नहीं हासिल, तो क्या ? नये ठिकाने ढूँढ़ लेंगे,
   हम वो शय नहीं, जो अपनी तलाश छोड़ देंगे।।

लोग क्यों ऐसे होते हैं ?

रंजना रावत
बी. ए. प्रथम वर्ष
(स्वरचित)

हैं ये सभी बहुत प्यारे !
फिर भी क्यों हैं ये, अपनी किस्मत से हारे।
कुकर्म करके ये, कितने अप्रिय हो जाते हैं।
झिझकते नहीं हैं ये, कुछ भी करने से।
डरते नहीं हैं ये, कभी मरने से।
खुद तो कभी कुछ ये, कर सकते नहीं।
जो करते भी हैं तो ये, उन्हें करने देते नहीं ।
खुश किस्मत हैं सब ये, जो इन्होंने रूप यह पाया है।
न जाने कब समझेंगे उसे ये, जिसने इन्हें बनाया है।
आज अपना देश इसीलिए पिछड़ा है।
विद्वानों का भी यही दुखड़ा है।।

रिश्ता

शिवानी रावत–श्री राजेन्द्र रावत
बी. ए. द्वितीय वर्ष
(स्वरचित)

एक शहर में एक अंजू नाम की लड़की रहती थी। जो बहुत सीधी–सादी थी। उसका एक छोटा भाई था। जिसका नाम राज था। दोनों भाई–बहन में बहुत प्यार था। समय बीतता गया और अंजू की शादी हो गई। कुछ समय बाद अंजू ने अपने छोटे भाई राज की शादी कर दी। राज को बहुत ही सुंदर व सीधी पत्नी मिली, लेकिन भाई–बहन का प्यार वैसे ही रहा। समय बीतता गया और एक समय ऐसा आया जो बहुत दुःख से भरा था। राज के पैर में एक गंभीर चोट लगने से वह चल नहीं पा रहा था। जिस कारण राज के परिवार में अनेक समस्याएं आने लगीं। उसकी बहन अंजू ने बहुत मदद की। अंजू एक अस्पताल में स्टाफ का काम करती थी। उसने अपने भाई राज को अच्छे से अच्छे डॉक्टर को दिखाया था, पर राज का पैर ठीक ना हुआ। समय बीतता गया, और अचानक अंजू की कमर की हड्डी में फ्रैक्चर हो गया, जिससे अंजू भी नहीं चल पा रही थी।

दोनों भाई–बहन ने ऊपर आकाश की ओर देखकर कहा – हे भगवान यह कैसी विपत्ति डाली है। जो हम भाई–बहन एक दूसरे को मिलने के लिए तरस रहे हैं। दोनों को 4 साल बीत गया है इस गंभीर समस्या को झेलते हुए। लेकिन 4 साल के बाद अचानक चमत्कार हुआ, वह दोनों ठीक हो गए। राज भी चलने लगा और अंजू भी ठीक हो गई। दोनों खुशी से एक दूसरे से पुनः मिलने लगे। राज व अंजू ने एक साथ बचपन, दुःख, खुशी, का पल बिताया। अंजू व राज का सच्चा भाई – बहन का प्यारा रिश्ता है। उनके इस रिश्ते में कोई भी स्वार्थ नहीं है। जो आज के समय में देखने को मिलता है।

भाई बहन का रिश्ता कैसे निभाना है,
यह राज और अंजू ने सबको बताया है।

नारी

शालिनी यादव
बी. ए. प्रथम वर्ष

जिस धरा पर तलवार को उठाकर,
बनी थी झांसी की रानी, लक्ष्मीबाई
उसी धरा पर आज की नारी, तू
फिर क्यूं है संकुचाई।

बहुत हो रहा है जुल्म अब नारी
पर, और बहुत हो रहा है आघात
अब क्यूं सहे तू नारी यह अत्याचार
और क्यूं दाबे तू अपने मन की बात।

तूने तो बहुत सहा है नारी, फिर भी
ना मिला पुरुषों के बराबर सम्मान।
मिलाकर चल कदम अब तो पुरुषों से,
बढ़ा तू नारी का सम्मान।

दुनिया तुम्हारे साथ होगी

समरीन खातून
बी. ए. प्रथम वर्ष

सूखे से जूझता किसान, जब खेत में हल चलाता है
आँखों में आशाएँ पर, मन ही मन में घबराता है
घबरा मत कृषक तेरी मेहनत से
सूखी पड़ी हुई धरती पर फिर से बरसात होगी
तेरे साहस की, हौंसलों की कभी न हार होगी
तुम चलो तो दुनिया तुम्हारे साथ होगी।

नन्हीं–सी चींटी जब दीवार पर चलती है,
उससे पहले जाने कितनी बार फिसलती है
बार–बार गिरकर वह यह सबक सिखाती है कि
कोशिश करने वालों की कभी न हार होगी
हिम्मत करने वालों की कभी न हार होगी
तुम चलो तो दुनिया तुम्हारे साथ होगी।

दुःखों से भरे इस जीवन में सुख की लहर भी साथ होगी,
तुम चलो तो दुनिया तुम्हारे साथ होगी।

कविता

पायल मिश्रा
बी.ए.प्रथम वर्ष

कुछ करना है

कुछ करना है, तो डट कर चल।
थोड़ा–सा दुनिया से हट कर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते हैं।
कभी इतिहास को पलटकर चल।

बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के दाम कैसा?
जब तक ना हासिल हो मंजिल
तो राह में आराम कैसा?

अर्जुन–सा निशाना रख।
मन में ना कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने है, बस
उसी पर अपना ठिकाना रख।।

सोच मत साकार कर।
अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।
किसी और का ना इंतजार कर।

नारियल और पत्थर

कोमल मौर्या
बी.ए. प्रथम वर्ष

एक पेड़ था नारियल का ऊँचाई थी जमकर
उसके नीचे पड़ा हुआ था बदसूरत–सा पत्थर
नारियल अकसर घमण्ड में उसकी हँसी उड़ाता
क्या करता बेचारा पत्थर मन ही मन दुःख पाता।
एक बार एक मूर्तिकार ने देखा जब वो पत्थर
सोच–समझकर उस पत्थर की मूर्ति बना दी सुन्दर
लोगों ने उस देव मूर्ति को मंदिर में रखवाया
जो सबकी ठोकर खाता था उसका मान बढ़ाया।
और एक दिन एक आदमी वही नारियल लाया
मूरत के चरणों में फोड़ा न्याय सभी ने पाया
ऊँचा उठना, नीचे गिरना दुनिया का दस्तूर
कभी न उसकी हँसी उड़ाना जो बेबस, मजबूर।

स्वयं की खोज

गुंजन मौर्या
बी.ए. तृतीय वर्ष

महान लोग सदैव स्वयं की खोज में रहते हैं। जिस ज्ञान से मनुष्य स्वयं को जान सके वही सच्चा ज्ञान है।
हर चीज का समाधान आपके अंदर है बस उसे अच्छे से जानने की जरूरत है।

हे नारी!

अर्चिता यादव
बी.कॉम तृतीय वर्ष
(स्वरचित)

हे नारी! तुम किससे इतना डरती हो,
बुन कर उनके जीवन को क्यों स्वयं तुम बिखरती हो

जिन लोगों से तुम डरती हो वो तुम्हारे ही तो अंग है;
चाहे हों वो द्वारिकाधीश चाहे मृत्यु योग्य कौरव वंश है।
जीवनदायिनी स्वरूप में देती पोषण व आकार भी;
तुमने तो गोद में देव हैं पाले, करो दुष्टो का संहार भी।
हे नारी! तुम कबसे इतना डरने लगी;
इतिहास में रक्त बहाया था तो अश्रुधारा क्यों भरने लगीं ?

द्वापर में स्वयं द्वारिकाधीश थे आए तुम्हारी लाज बचाने को;
कलियुग में आए हैं दुर्योधन, तुम्हे अबला–सी बताने को।
तुम ही तो थीं माँ सीता की मर्यादा और माँ काली की वो शक्ति भी;
तुम थी झाँसी की मर्दानी और वो जौहर ज्वाला धधकती–सी।
हे नारी! तुम क्यों इतना डर जाती हो;
बहरों की सभा में क्यों, न्याय की चीख लगाती हो।

तुम क्यों सहम–सी जाती हो, जब घर से बाहर निकलती हो; जाती हो
तुम एक जगह पर रस्ते रोज बदलती हो।
युगों से घर की लक्ष्मी थी, अब भद्रकाली के अस्त्र संभालो तुम;
और जटाधारी के सीने पर थे कदम, उनको आज बढ़ा लो तुम।

माँ

शशि गौतम
बी.एस.सी.
तृतीय वर्ष

अपनी माँ के आँचल में,
मिलता सुख सागर है
बड़ी–बड़ी विपदाओं को
करती पल में नश्वर है।
उसकी सतांनों में जीवित
माँ का सारा स्वर है।

बचपन में माँ ने दुलराया
रोते हुए को चुप करवाया।
पंचतंत्र की कथा सुनाई
थपकी देकर मुझे सुलाया।
त्याग प्रेम ममता का घर
लोरी मंगल गीत अमर हैं।

माता के चरणों में जन्नत है
वह पहली गुरू सादर है
माँ का हर बच्चा सुन्दर है ।

मनुष्य को मशीन न बनाएँ

तनु सिंह
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर
समाजशास्त्र

कामकाज एवं सामान्य जीवन में संतुलन से ही व्यक्ति समाज में सर्वोत्तम योगदान दे सकता है। आजकल वर्क–लाइफ बैलेंस पर बहस जोर पकड़ती जा रही है। हम जानते हैं कि कोविड जैसी आपदा से निपटने के बाद हम सभी ने बहुत–बहुत मुश्किल से अपने कार्य और परिजनों के मध्य समय का संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है। परन्तु पिछले दिनों लार्सन एंड टुब्रो के चेयरमैन एस एन सुब्रमण्यन ने हफ्ते में 90 घंटे काम करने का विचार रखा। क्या वह मनुष्य को रोबोट से अधिक कुछ नहीं समझते? क्या वह भुला बैठे हैं कि रोबोट को भी देखभाल और चार्जिंग की आवश्यकता होती है। तो एक मनुष्य को क्यों नहीं ?

सनातन परंपरा में मानव जीवन और उसकी कार्यक्षमता के संबंध में मानव केंद्रित वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया गया है। इस परंम्परा में हम विकास और दिखावे व भौतिकवाद के लिए अंधी दौड़ में शामिल होकर गलाकाट प्रतिस्पर्धा नहीं करते, अपितु स्वस्थ और संतुलित जीवनशैली अपनाते हुए अपने व्यक्तित्व को सफलता के शिखर तक पहुँचाते हैं।
हम उत्पादकता को बढ़ाने के लिए शारीरिक–मानसिक संतुलन को नहीं बिगड़ने देते, क्योंकि **अति सर्वत्र वर्जयते** ।

हमारे यहाँ सफलता की जगह सार्थकता पर बल दिया। महात्मा गाँधी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे भारतीय विचारकों के अनुसार जीवन के परम लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नामक पुरुषार्थ की प्राप्ति के लिए शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का स्वास्थ्य, संतुलन और समन्वय आवश्यक है। मानव जीवन का मशीनीकरण होने से उसके जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। विभिन्न शोध बताते हैं कि अत्यधिक काम करने से उच्च दाब और हृदय संबंधी बीमारियों से ग्रस्त हो सकते हैं।

यदि हम नवीन तथ्यों का अनुसंधान करना चाहते हैं, तो इसके लिए मानसिक स्वास्थ्य दुरुस्त रखना चाहिए। यह तभी संभव होगा जब वर्क लाइफ बैलेंस होगी ।

पुस्तकालय

नैन्सी चौरसिया
बी० ए० तृतीय वर्ष

इंटरनेट का होना भले ,करे बहुत विस्तार,
किन्तु पुस्तकालय सदा, देते उच्च विचार।
सदा पुस्तकालय रहे, असीम ज्ञान की खान,
भावी पीढ़ी के लिए, होंगे ये वरदान।

मिलते पुस्तक से हमें, विद्या सत्य–विचार,
त्याग, दया, उपकार के, भाव मिलें उपहार।
पुस्तकालयों की रही, महिमा अपरम्पार,
युवा, वृद्ध, बालक करते हैं सम्मान।

दुनिया का आरम्भ है नारी

खुशी शर्मा
बी०ए० तृतीय वर्ष
(स्वरचित)

दुनिया का आरम्भ है नारी, रौद्र रुप प्रचंड है नारी,
कोमलता भी नारी का अंग, नारी से ही है सब रंग।

नारी हो तुम रुकना मत, किसी के आगे झुकना मत,
स्वयं करो अपना सम्मान, अलग बनाओ तुम पहचान।

कहते हैं नव रुप है नारी, फिर भी वो हर रूप में हारी,
माँ, बहू, बेटी सब है नारी, दुनिया का आरम्भ है नारी।

अच्छे संस्कार

उम्मुलवरा
बी०ए० प्रथम वर्ष

इंसान का व्यवहार उसके संस्कारों से निर्धारित होता है। संस्कार किसी किताब में नहीं मिलते, ये सीखे जाते हैं। अपने परिवार से और अपने घर के बुजुर्ग लोगों से । संस्कार विहीन व्यक्ति पशु समान होता है। हमारे संस्कार ही हमें जीवन जीने का तरीका सिखाते हैं। संस्कार का संस्कृत में अर्थ होता हैं– शुद्धीकरण अर्थात् जो तन और मन को शुद्ध करें वह संस्कार हैं। किसी ने क्या खूब कहा है कि बोली बता देती है कि इंसान का व्यवहार कैसा है और संस्कार बता देते हैं कि परिवार कैसा है। बच्चों को उपहार न दिया जाए तो वह कुछ ही समय रोएगा, मगर संस्कार न दिए जाए तो वह जीवन भर रोएगा। आपकी डिग्री मात्र एक कागज का टुकड़ा है। आपकी असली शिक्षा आपके व्यवहार से दिखती है। किसी का सरल स्वभाव उसकी कमजोरी नहीं बल्कि उसके माता–पिता के द्वारा दिए हुए संस्कार होते हैं। संसार को अपने संस्कारों से जीता जा सकता हैं अहंकार से नहीं! संघर्ष करना पिता से सीखें और संस्कार माँ से सीखें, बाकी सब दुनिया सिखा देती है।

कलियों को खिल जाने दो

निधि वर्मा
बी.कॉम द्वितीय वर्ष

कलियों को खिल जाने दो, मीठी खुशबू फैलाने दो,
बंद करो उनकी हत्या अब जीवन ज्योति जलाने दो
कलियाँ जो तोड़ी तुमने तो फूल कहाँ से लाओगे?
बेटी की हत्या करके तुम, बहू कहाँ से लाओगे?
माँ धरती पर आने दो, उनको भी लहराने दो,
बंद करो उनकी हत्या, अब जीवन ज्योति जलाने दो!!

माँ दुर्गा की पूजा करके भक्त बड़े कहलाते हो,
कहाँ गयी वह भक्ति, जो बेटी को मार गिराते हो,
लक्ष्मी को जीवन पाने दो, घर–आँगन दमकाने दो,
बंद करो उनकी हत्या अब जीवन ज्योति जलाने दो!!
बंद करो उनकी हत्या, अब जीवन ज्योति जलाने दो
अब जीवन ज्योति जलाने दो!!

एक नई सुबह

अंशिका साहू
बी.ए. तृतीय वर्ष

मन की गलियों में चुप्पी गहरी,
भावनाओं का भार है भारी, पर आशा की रोशनी है जारी।
कभी उदासी की छाया घनेरी, कभी निराशा की लहरें पहरी।
पर हर अंधेरे के पार मिलेगा, नया सवेरा, उजियारा बसेरा।

मन के भीतर तूफान उठे, सवालों के बादल घनघोर झुके।
पर विश्वास का दीप जलाना, हर मुश्किल को राह दिखाना।
खुद से प्यार का संगीत सुनो, हर एक जख्म को मीत चुनो।
जो टूटा है, वो जुड़ भी सकता, जो बिखरा है, वो सृज भी सकता।

संघर्षों में ही शक्ति पलती, दर्द की मिट्टी में आशा खिलती।
हर दिन नया, हर क्षण नया, मन का आकाश फिर से सजा।
तो मुस्कान की धूप संजो लो, हर एहसास को प्रेम से धोलो।
मानसिक शांति की राह है सरल, बस अपने मन से करो संवाद।
सफल।

एकता और अखंडता का पर्व महाकुंभ

शोधछात्रा– नेहा मौर्या
पर्यवेक्षक– डा० नेहा जैन
असि० प्रो० समाजशास्त्र
शोधकेन्द्र– प० दी० द० उपा० रा० म० स्ना० महा०, लखनऊ

ऋषि मुनियों एवं सनातन धर्म का पालनकर्ता कहा जाने वाला देश भारत आज संपूर्ण विश्व में महाकुंभ महापर्व के कारण ख्याति बटोर रहा है। महाकुंभ सिर्फ मेला ही नहीं अपितु सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पहल से भारत के लिए महत्वपूर्ण है। यह वैश्विक स्तर पर सनातन धर्म एवं संस्कृति की छवि दर्शाता है। ज्ञातव्य है कि प्रत्येक 6 वर्ष में अर्ध कुंभ 12 वर्षों में पूर्णकुंभ तथा 144 वर्षों के बाद बने इस चंद्र बृहस्पति सूर्य की अवस्थाओं को महाकुंभ नाम दिया गया है।

वर्ष 2019 में प्रयागराज में ही आयोजित कुंभ मेला को यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया था जिसे विश्व भर में सबसे विशाल मेला कहा गया है।

महाकुंभ पृथ्वी पर श्रद्धालुओं तथा तीर्थयात्रियों का सबसे महान शांतिपूर्ण समागम है जहां श्रद्धालुओं द्वारा पवित्र गंगा नदी में आस्थापूर्ण डुबकी लगाई जाती है जिससे वह मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रेषित होते हैं। यह मेला खगोल विज्ञान, ज्योतिष, अध्यात्मिक अनुष्ठान, परंपराओं एवं सांस्कृतिक रीति–रिवाज को एक सूत्र में समाहित करता है। यह भारतीय शिक्षा की नींव माने जाने वाले शिष्य गुरु के संबंध को भी दर्शाता है।

महाकुंभ का ऐतिहासिक महत्व कुछ इस प्रकार है कि माना जाता है जब देवों और राक्षसों के मध्य प्रभुत्व की लड़ाई छिड़ी तो समुद्र मंथन जैसी प्रक्रिया से अमृत कलश (कुंभ) का उद्गार हुआ तथा अमरता की इस लड़ाई में कुछ अमृत की बूँदे पृथ्वी पर छलक गई जिसमें से प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक पर कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है जिसकी सर्वप्रथम शुरुआत ऋषि मुनि आदि शंकराचार्य द्वारा आठवीं शताब्दी में प्रयागराज से की गई थी। आजाद भारत में पहला कुंभ मेला 1954 मे प्रयागराज की पवित्र भूमि पर लगा था।

आर्थिक पहलू की अगर चर्चा करें तो 2025 में महाकुंभ से अनुमानित लगभग 2 लाख करोड़ रुपए का राजस्व एकत्रित होगा जिससे भारतीय जीडीपी पर सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकेगा। लगभग 45 दिनों तक चलने वाले इस महाकुंभ मेले से हजारों को रोजगार प्राप्त होगा।

यह एक आध्यात्मिक से ज्यादा भारतीय सामाजिक एकता को दर्शाता है। यह मेला क्षेत्रवाद जैसी अवधारणा को धूमिल करने में सक्षम है क्योंकि संपूर्ण भारत के लोग एक साथ आकर जात–पात, भेदभाव को भुलाकर आस्था की डुबकी लगाते हैं।

इस महाकुंभ में 'युवा महाकुंभ' भी साक्षी बनेगा जो देशभर से युवाओं एवं छात्रों का एक विशाल समागम होगा एवं उसे सामान्य सूत्र में बांधा जा सकेगा। युवा भारतीय संस्कृति को वैज्ञानिकता से विश्लेषण कर रहे हैं जो भविष्य में नए द्वार खोलने की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण है। नई पीढ़ी समझ रही है कि शाश्वत ही सत्य है और वही सनातन है। इन सब का मिश्रण नई तकनीकी एवं नवाचार को भी जन्म देगा जो विज्ञान एवं परंपरा एक साथ विमर्श करने से ही निकलेगा ।

एक और पहलू महाकुंभ को चर्चा में लाता है वह है इसका वैश्वीकरण जो भारत को विश्व स्तर पर जोड़ने का कार्य कर रहा है।

एप्पल के सह– संस्थापक स्टीव जॉब्स की पत्नी से लेकर कई अन्य विदेशी भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं।इस तरह यह कहना गलत नहीं है कि भारत एक विश्व गुरु की स्थिति को बनाए रखने में सक्षम है एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत के इस स्थानीय पर्व को वैश्विक पहचान मिलना एवं इसका वैश्वीकरण होना भारत के लिए एक बहुत बड़ी गर्व की बात है।

जीवनदायिनी नदी

बहती नदी मुझे कुछ सीख दे गई
ना रुकना, ना थमना बस बढ़ते जाना
ये कह गई।

कुंभ पर्व : सांस्कृतिक विरासत

डॉ० प्रज्ञा मिश्रा
गणित विभाग

बहते–बहते सागर में समा जाना तो नदियों की नियति है, लेकिन स्वयं सागर को नदियों में समाहित होते देखना चमत्कार ही है। यह चमत्कार साकार होता है कुंभ पर्व के दौरान, जब अथाह जन सिंधु त्रिविधि ताप–पापनाशिनी नदियों की गोद में कुछ पलों की पनाह पाने को आतुर दिखता है।

कुंभ शब्द का उल्लेख वेदों में मिलता है। ऋग्वेद के दशम् मंडल एवं यजुर्वेद व अथर्ववेद में कुंभ शब्द समस्त संसार वासियों के लिए शुभ कर्मों के अनुष्ठान हेतु आता है। समुद्र मंथनजन्य अमृत कुंभ से संबंध होने के कारण कुंभ शब्द "कुंभ पर्व" के अर्थ में प्रयुक्त होता है। कुंभ शब्द की व्युत्पत्ति 6 प्रकार से की गई है–

(I) 'कुं पृथ्वी उम्भयपति पुरयाति मंगलेन ज्ञानामृतेन वा' अर्थात् जो समस्त पृथ्वी को मंगल ज्ञान से पूर्ण कर दे।
(ii) 'कुत्सित उम्भतिः' अर्थात् जो पर्व संसार के अरिष्ट और पापों को दूर कर दे।
(iii) 'कुः पृथ्वी उम्यते अनुगृह्यते आच्छादते आनंदेन पुण्येन वा' अर्थात् जिस पर्व के द्वारा पृथ्वी को आनंद व पुण्य से ढक दिया जाए।
(iv) 'कुः पृथ्वी उम्यते लही क्रियते पाप प्रक्षालनेन येन' अर्थात् पृथ्वी पर पापों को धोकर जब उसे हल्का बना दिया जाये, ऐसा पर्व – कुंभ।
(v) 'कुः पृथ्वी भावयति दीपयति' अर्थात् जो पर्व पृथ्वी को सुशोभित कर दे, दीप्त कर दे, उसके तेज को बढ़ा दे।
(vi) 'कुं सुखं ब्रह्म तद् उम्भति प्रयच्छतीति कुंभः' अर्थात् सुख स्वरूप परम ब्रह्म के अनुभव को प्रदान करने वाले संत समागम का नाम कुंभ है।

कुंभ पर्व चार स्थानों **(प्रयाग, हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन)** पर आयोजित किया जाता है। प्रत्येक स्थान पर इसके आयोजन का समय, ग्रहों की स्थिति के अनुसार तय किया जाता है।

पौराणिक आख्यानों के अनुसार ऋषि दुर्वासा के अभिशाप के कारण निर्बल हो चुके देवाताओं को असुरों ने पराजित कर दिया था। अपनी शाक्ति को पुनः प्राप्त करने हेतु देवताओं ने भगवान विष्णु की सलाह के अनुसार, समुद्र मंथन कर अमृत निकालने हेतु असुरों से संधि की। मंथन हेतु मंदराचल पर्वत को मथानी तथा वासुकी नाग को रस्सी के रूप में प्रयोग किया गया। समुद्र मंथन द्वारा क्षीर सागर से 14 रत्न निकले, जिसमें कालकूट विष, पुष्पक विमान, ऐरावत हाथी, पारिजात वृक्ष, धनुष, अप्सरा रंभा, कौस्तुभ मणि, बाल चंद्रमा, कुंडल धनुष, शारंग धनुष, कामधेनु गाय, उच्चैश्रवा घोड़ा, मां लक्ष्मी, विश्वकर्मा तथा अमृत कुंभ शामिल हैं।

अमृत कुंभ निकलते ही देवताओं और असुरों में इस पर अधिकार को लेकर युद्ध शुरू हो गया, जोकि 12 दिनों तक चला। इसी दौरान पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक) पर अमृत कुंभ से अमृत की कुछ बूँदें गिरी थीं। इसलिए इन स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है।

एक अन्य मान्यता के अनुसार, आदि शंकराचार्य ने कुंभ मेले की शुरुआत की थी। कुछ विद्वान गुप्तकाल में इसके सुव्यवस्थित होने की बात करते हैं, परंतु प्रामाणिक तथ्य सम्राट हर्षवर्धन के समय से प्राप्त होते हैं। ह्वेनसांग ने भी अपने विवरण में कुंभ मेले का उल्लेख किया है।

4–9 दिसंबर 2017 में मध्य जेजू (दक्षिण कोरिया) में यूनेस्को (UNESCO) की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा हेतु अंतर सरकारी समिति के 12वें' सत्र में 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' सूची में भारत में आयोजित होने वाले 'कुंभ मेले' को भी शामिल किया गया है।

कुंभ मेले में सब कुछ श्रद्धावश ही है या फिर इसका वैज्ञानिक आधार भी है। सौर मंडल के विशिष्ट ग्रहों के विशेष राशियों में प्रवेश करने से बना खगोलीय संयोग इस पर्व का आधार है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सूर्य, चंद्रमा, गुरु और शनि की विशेष युतियों में कुछ विशेष किस्म की खगोलीय ऊर्जा पृथ्वी पर चुनिंदा स्थानों पर स्थित जल भंडारों को प्रभावित करती है और यह जल मनुष्य के स्वास्थ्य व कार्मिक ऊर्जाओं को बल देता है, पुष्ट बनाता है।

वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध है कि गंगा जल में कभी कीड़े नहीं पड़ते। गंगा जल में आक्सीजन की मात्रा अधिक होने और इसमें कुछ विशिष्ट विषाणुओं के मौजूद होने से यह अत्यधिक विशिष्ट है। जापानी वैज्ञानिक मसारु इमेटो ने गंगा जल पर शोध में पाया कि जल में विशेष प्रकार की संरचनाएं निर्मित होती हैं, जिसका आधार वहाँ का वातावरण, कॉस्मिक ऊर्जाएं और वहाँ स्थित भावनाएं होती हैं। जल के विशेष क्रिस्टल मानव ऊर्जाओं को प्रभावित करते हैं। ऋषियों ने लाखों वर्ष पूर्व ही इस सत्य को जान लिया था और विशेष कॉस्मिक परिस्थितियों का लाभ, आने वाली पीढ़ियों को कैसे दिया जाए, इसका तरीका भी उन्होंने खोजा। वस्तुतः कुंभ पर्व इसी प्रकार की खोज का नतीजा है, जो मानवमात्र के लिए कल्याणकारी है।

कुंभ पर्व हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है। यह सभी को एकत्व भाव में पिरोता है। इस मेले में कौन कहां से आया? किस जाति का है? किसको क्या पता और न ही जानने की किसी की इच्छा होती है। पवित्र नदियां सभी को नहला देती हैं। ऊँच–नीच, अमीर–गरीब के भावों से दूर सभी एक साथ स्नान करते हैं। सामाजिक समरसता का सबसे बड़ा मंत्र यहीं मिलता है।

मार्क टुली के शब्दों में 'विश्व के सबसे विशाल जनसंगम के रूप में कुंभ एक चमत्कार ही है, भारत की अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति का दृश्य प्रतीक है।' कुंभ मेला, वास्तव में विशाल भारत की विविधता में एकता का संगम है। यह भारत के सांस्कृतिक प्रवाह के महान वाहक के रूप में उभरकर आता है। समाज को चिरस्थायी बनाए रखने हेतु कुंभ पर्व भारतीय समाज का आधार है।

डिजिटल युग में भारतीय राष्ट्रवाद

विमल कुमार मौर्या
शोध छात्र इतिहास विभाग

"राष्ट्र से राज्य या राष्ट्रवाद नहीं बनता बल्कि राज्य से
राष्ट्र और राष्ट्रवाद निकलता है।" **एरिक हॉब्सबॉम**

भारतीय राष्ट्रवाद डिजिटल युग में एक नये स्वरूप में अभिव्यक्त होता हुआ दिखाई पड़ता है, यथारुप सामाजिक मीडिया, ऑनलाइन प्लेटफार्म्स और डिजिटल संचार माध्यमों ने राष्ट्रवाद की परिभाषा और अभिव्यक्ति के तरीकों को बदल दिया है। तकनीकी प्रगति ने भारतीय राष्ट्रवाद की पारम्परिक पहचान को नवीन संभावनाओं की दिशा प्रदान की है जिस कारण से राष्ट्रवाद अब एक व्यापक और तीव्र सम्प्रेषण का माध्यम बन गया है, जहाँ देश के नागरिक अपनी संस्कृति और देशभक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं हालाँकि
इस तकनीकी प्रगति ने भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष चुनौतियाँ भी पेश की है–

मूल शब्द **1**. सोशल मीडिया का योगदान **2**. सूचना प्रसार **3**. डिजिटल आन्दोलन **4**. युवा शक्ति का जुड़ाव **5**. सांस्कृतिक संरक्षण **6**. वैश्विक मंच पर पहचान **7**. भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष नवीन चुनौतियाँ **8**. निष्कर्ष

(1) सोशल मीडिया का योगदान – आधुनिक दौर में सोशल मीडिया एक ऐसा प्लेटफार्म बन गया है जहां लोग अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं, विचार विमर्श कर सकते हैं। आज सोशल मीडिया राष्ट्रीय घटनाओं, ऐतिहासिक तथ्यों और सांस्कृतिक धरोहरों के बारे में जानकारी फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में दृष्टिगत है, इतना ही नहीं सोशल मीडिया भारत के विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों को जोड़ने तथा एकता की भावना को प्रज्ज्वलित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

(2) सूचना प्रसार– सूचना प्रसार ने भारतीय राष्ट्रवाद को शिखर तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है–
जैसे सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय आन्दोलन से संबंधित कार्यक्रम, वृत्तचित्र और लेख प्रकाशित किए। रेडियो और टेलीविजन पर आजादी की लड़ाई के नायकों जैसे महात्मा गांधी, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, बी0डी0 सावरकर आदि के जीवन पर आधारित कार्यक्रमों ने राष्ट्रवाद को मजबूत किया। ऑल इंडिया रेडियों ने अपने कार्यक्रमों के माध्यम से भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में राष्ट्रीय एकता का संदेश पहुंचाया। दूरदर्शन पर प्रसारित किए गए धारावाहिकों जैसे– "भारत एक खोज" और "महाभारत" ने भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रति गर्व बढाया। भारतीय सिनेमा ने राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने वाली कई फिल्में बनाई जैसे– लगे रहो मुन्ना भाई, चक दे इंडिया, स्वदेश, और उरी द सर्जिकल स्ट्राइक।" इतना ही नहीं हाल के वर्षों में डिजिटल मीडिया का उपयोग राष्ट्रीय अभियानों के लिए किया गया है, जैसे "स्वच्छ भारत अभियान", "मेक इन इण्डिया" और "हर घर तिरंगा"। तमाम सरकारी बेवसाइटें और सोशल मीडिया अकांउट्स राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं।

(3) डिजिटल आन्दोलन– डिजिटल प्लेटफॉर्म ने बड़े पैमाने पर आन्दोलन को जन्म दिया जैसे "आत्मनिर्भर भारत", "हर घर जल", "जल जीवन मिशन", जिनसे भारतीय नागरिकों में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।

(4) युवा शक्ति का जुड़ाव – सोशल मीडिया माध्यम भारतीय युवाओं को राष्ट्रवाद से जोड़ने में एक प्रभावी माध्यम बना है।

(5) सांस्कृतिक संरक्षण – डिजिटल मीडिया ने डिजिटल संग्रहालय, ई–बुक्स और वेबसाइट्स से क्रान्तिकारी भूमिका निभाई है। जैसे डिजिटल संग्रहालयों ने ऐतिहासिक धरोहरों, कला और सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और प्रदर्शित करने के लिए एक नया माध्यम प्रदान किया। उदाहरण–

- नेशनल म्यूजियम, दिल्ली का वर्चुअल टूर जहाँ लोग घर बैठे भारत की प्राचीन मूर्तियाँ, पेंटिंग्स और ऐतिहासिक वस्त्र देख सकते हैं।
- इंडियन डिजिटल हेरिटेज प्रोजेक्ट– जिसमें अजंता–एलोरा की गुफाओं और अन्य धरोहरों का डिजिटलीकरण किया गया है।

प्राचीन पांडुलिपियों, साहित्यिक कृतियों और ऐतिहासिक दस्तावेजों को ई बुक्स के रूप में सहेजा गया है। सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों को संरक्षित करने और उनकी जानकारी साझा करने के लिए कई वेबसाइट्स बनाई गई हैं जैसे– इंडिया कल्चर पोर्टल, आर्काइव्स ऑफ इंडिया"।

(7) भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष नवीन चुनौतियाँ – जहाँ एक तरफ डिजिटल मीडिया ने भारतीय राष्ट्रवाद को मजबूत किया है वहीं इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं, डिजिटल प्लेटफॉर्म का दुरुपयोग करके झूठी खबरें और अफवाहें फैलाने की घटनाएं बढ़ी हैं, जो सामाजिक और सांस्कृतिक तनाव का कारण हैं इतना ही नहीं राष्ट्रवाद के डिजिटल स्वरूप में अतिवाद और ध्रुवीकरण की प्रवृत्तियां देखने को मिलती हैं।

(8) निष्कर्ष – डिजिटल युग में भारतीय राष्ट्रवाद देश के निवासियों के लिए एक ऊर्जा बन गया है क्योंकि भारतीय राष्ट्रवाद अब एक विचार मात्र नहीं बल्कि प्रेरणा का स्त्रोत है जो भारत को सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है।

मानसिक स्वास्थ्यः वर्तमान समय की आवश्यकता

अपर्णा तिवारी
(शोध छात्रा)
विभाग –राजनीति शास्त्र

हाल ही में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करने वाली 26 वर्षीय युवती ने काम के अत्यधिक दबाव के कारण आत्महत्या कर ली।

कुछ समय पूर्व इंफोसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति ने युवाओं को सप्ताह में 70 घंटे काम करने की सलाह दी, इसके लार्सन एंड टुर्गो (LPT) के चेयरमैन एस एन सुब्रह्मण्यन ने बयान दिया जिसमें कहा कि सप्ताह में सभी कर्मचारियों को कम से कम 90 घंटे काम करना चाहिए।

उपरोक्त घटनाएँ बढ़ती प्रतिस्पर्धा व उससे उत्पन्न तनाव की स्थिति को प्रदर्शित करती हैं जहाँ व्यक्ति ने आगे बढ़ने की दौड़ में अपने मानसिक स्वास्थ्य को पीछे छोड़ दिया है।

मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य भावनात्मक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तौर पर स्वस्थ रहने की स्थिति से है! WHO मानसिक स्वास्थ्य को मानसिक कल्याण के रूप में परिभाषित करता है, जिसमें व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का अनुभव होता है। जिससे वे जीवन के सामान्य तनावों का सामना कर सकते हैं।

ILO की रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक तौर पर 15% कार्यशील वयस्क मानसिक विकारों से ग्रस्त हैं।

उदासी महसूस करना, अरुचि उत्पन्न होना, व्यवहार में बार–बार बदलाव महसूस करना, नींद न आना, आत्महत्या संबंधी विचार आना आदि परिस्थितियाँ मानसिक विकार के संकेत हैं।

भाग दौड़ भरी जिंदगी ने लोगों के मध्य संवाद पर संपर्क को धूमिल किया है। रिश्तों को निभाना हो या किसी शुभ अवसर पर शुभकामनाएँ देना हो, हम मात्र सोशल मीडिया तक सिमट कर रह गये हैं। किसी के द्वारा किया गया लाइक और अच्छा कमेंट हमें प्रसन्नता देने की ताकत रखता है और गलत कमेंट या डिस्लाइक हमें दुखी कर सकता है!

वर्तमान सूचना के युग में व्यक्ति ने एक आभासी दुनिया का निर्माण कर लिया है जब तक इस आभासी दुनिया में चीजें हमारे अनुरूप होती हैं, तब तक हम प्रसन्न रहते हैं जब हम वास्तविक दुनिया की किसी स्वास्थ्य और तनाव संबंधी समस्या का सामना करते हैं और यह आभासी दुनिया हमारी मदद करने में सक्षम नहीं रहती है तब हमारा मतिभ्रम टूटता है और मानसिक अवसाद जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

बढ़ता भौतिकवाद, प्रकृति से दूरी, अकेलापन, प्रतिस्पर्धा का दौर, टूटते पारिवारिक संबंध सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग आदि कारकों ने मानसिक विकार की स्थिति को बढ़ाया है।

आवश्यकता है कि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे को प्राथमिकता देने की। प्रारंभ से ही बच्चे को प्रकृति से जोड़ा जाए, योग व ध्यान की परंपरा को जीवित किया जाए, संवाद के वातावरण को आभासी की बजाय प्रत्यक्ष बनाया जाए। सरकार व नागरिक समाज द्वारा मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जाए व इसके उपचार को प्रसारित किया जाए।

समाज की यह जिम्मेदारी है कि इस मुद्दे के प्रति संवेदनशीलता का परिचय दे व हर एक मानसिक विकार को पागलपन से न जोडे।

सरकार द्वारा मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हुए निम्न प्रयास किए गए हैं मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम 2017, मनोदर्पण पोर्टल (छात्रों, परिवार के सदस्यों व शिक्षकों, को मानसिक स्वास्थ्य संबंधी सहायता)।

छात्रों के नकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य को प्रदर्शित करती कोटा की स्थितिः –

राजस्थान का कोटा शहर जिसे इंजीनियरिंग व मेडिकल तैयारी का गढ़ माना जाता है वर्तमान में वह छात्रों की आत्महत्या के नगर के रूप में प्रसिद्ध हो गया। बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा व परिवार की आकांक्षाओं के दबाव का बोझ छात्र सहन नहीं कर पा रहे हैं और उनकी सांसें दम तोड दे रही हैं।

हाल ही में 7 जनवरी 2025 हरियाणा के महेंद्रगढ़ निवासी नीरज जाट ने अपने हॉस्टल में फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली, वह कोटा में जेईई की तैयारी कर रहा था।

मध्यप्रदेश के ग्वालियर निवासी अभिषेक लोधा ने पढ़ाई के तनाव के कारण आत्महत्या की उसने अपने सुसाइड नोट में परिवार से माफी माँगते हुए लिखा, "मैं पढ़ाई नहीं कर पाया I am Sorry!"

उपरोक्त आत्महत्या के उदाहरण बच्चों पर अत्यधिक पढ़ाई के दबाव, घर से दूर रहने की चुनौतियों और मानसिक अवसाद की स्थिति को प्रदर्शित करते हैं।

इन घटनाओं के बाद कोटा जिला प्रशासन ने 'कामयाब कोटा' अभियान शुरु किया है, जिसके तहत कलेक्टर ने छात्रों से संवाद किया और फैकल्टी को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करने के निर्देश दिए हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दा वर्तमान समय का एक प्रमुख मुद्दा है जिस पर परिवार, समाज, शैक्षणिक संस्थान व सरकार आदि को मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।

श्रेया वर्मा
बी.ए. तृतीय वर्ष

"समानता, स्वतंत्रता और न्याय हर व्यक्ति का अधिकार है। इन मूल्यों को संरक्षित करना ही मानवता की सच्ची सेवा है।"

मानव दिवस, जिसे अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस भी कहा जाता है, हर वर्ष 10 दिसंबर को मनाया जाता है। यह दिन मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता फैलाने और सभी व्यक्तियों के लिए स्वतंत्रता, समानता और गरिमा सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है। यह दिन 1948 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा "सार्वभौमिक मानव अधिकार घोषणा" को अपनाने की स्मृति में मनाया जाता है।

महत्व – मानव दिवस का उद्देश्य दुनिया भर के लोगों को उनके मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति जागरुक करना है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि जाति, धर्म, भाषा, लिंग, या राष्ट्रीयता के आधार पर भेदभाव से बचते हुए सभी को समान अधिकार और सम्मान मिलना चाहिए।

मानवाधिकार और उनकी सुरक्षा – मानवाधिकार हर व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसमें जीवन का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता शामिल है। हालाकि कई देशों में आज भी इन अधिकाओं का हनन होता है।

गरीब, वंचित और अल्पसंख्यक समुदायों के साथ अकसर अन्याय किया जाता है। ऐसे में मानव दिवस हमें अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की याद दिलाता है कि हम इन आधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रयास करें।

मानव दिवस की गतिविधियाँ – मानव दिवस पर विश्वभर में अनेक जागरूकता अभियान, संगोष्ठियां और रैलियां आयोजित की जाती हैं। स्कूल कॉलेज और संगठनों में मानवाधिकारों पर चर्चा और वाद–विवाद प्रतियोगिताएं होती हैं। संयुक्त राष्ट्र और अन्य संगठनों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

हमारी जिम्मेदारी – मानवाधिकारों की रक्षा करना केवल सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हर नागरिक का कर्तव्य है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समाज में किसी के साथ अन्याय या भेदभाव न हो । हर व्यक्ति को गरिमा और सम्मान के साथ जीने का अधिकार है, और हमें इसे सुरक्षित रखने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

निष्कर्ष– मानव दिवस हमें यह याद दिलाता है कि मानवाधिकार केवल अधिकार नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी भी हैं। यह दिन समाज में समानता, न्याय और स्वतंत्रता स्थापित करने का आह्वान करता है। जब तक हर व्यक्ति को उसके अधिकार नहीं मिलते तब तक मानवता का उद्देश्य अधूरा रहेगा। इसलिए, हमें यह प्रण लेना चाहिए कि हम अपने जीवन में मानवाधिकारों के मूल्यों को अपनाएंगे और समाज को बेहतर बनाने के लिए योगदान देंगे।

आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम

डॉ निशी मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर अर्थशास्त्र विभाग

आत्मनिर्भर भारत एक ऐसा विजन है जिसमें भारत को एक आत्मनिर्भर और सशक्त राष्ट्र बनाने का लक्ष्य है। इसका अर्थ है कि भारत अपनी जरूरतों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर न हो, बल्कि अपने संसाधनों और क्षमताओं का उपयोग करके अपनी समस्याओं का समाधान करे।

आत्मनिर्भर भारत एक वाक्यांश है जिसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार ने देश की आर्थिक विकास योजनाओं के संबंध में उपयोग किया और लोकप्रिय बनाया। यह वाक्यांश मोदी सरकार की विश्व अर्थव्यवस्था में बड़ी भूमिका निभाने और इसे और अधिक कुशल, प्रतिस्पर्धी और लचीला बनाने के लिए मोदी सरकार की योजनाओं के लिए एक सार्थक अवधारणा है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान का प्रथम लोकप्रिय उपयोग 2020 में भारत के कोविड–19– महामारी से सम्बन्धित आर्थिक पैकेज की घोषणा के दौरान हुआ था। तब से, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय द्वारा इस वाक्यांश का उपयोग किया गया है। सरकार ने भारत की नूतन राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारत के 2021 के केन्द्रीय बजट के सम्बन्ध में भी इस वाक्यांश का उपयोग किया है।

स्वदेशी आन्दोलन भारत के सबसे सफल स्वतंत्रता पूर्व आंदोलनों में से एक था। 1947 और 2014 के बीच कई पंचवर्षीय योजनाओं में देश के योजना आयोग द्वारा आत्मनिर्भरता की अवधारणा का उपयोग किया गया है। भारत स्वतंत्रता के बाद से ऐसी नीतियाँ बना रहा है और संस्थानों का निर्माण कर रहा है जो आत्मनिर्भरता की वृद्धि करते हैं। निजी कम्पनियों और उनके उत्पादों को पेय पदार्थ औटोमोटिव, सहकारी समितियों, वित्तीय सेवाओं और बैंकिग, औषधि निर्माण और जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता के उदाहरण के रूप में माना गया है।

भारत में कोरोनावायरस महामारी की पृष्ठभूमि में, महामारी प्रेरित लॉकडाउन, और घरेलू अर्थव्यवस्था के विकास में पहले से मौजूद मंदी और महामारी के आर्थिक प्रभाव के कारण, सरकार आत्मनिर्भरता के एक अनुकूलित विचार के साथ सामने आई। 12 मई 2020 को, प्रधान मंत्री मोदी ने पहली बार लोकप्रिय रूप से हिंदी वाक्यांश का इस्तेमाल किया जब उन्होंने कहा विश्व की आज की स्थिति हमें सिखाती है कि इसका मार्ग एक ही है– आत्मनिर्भर भारत। भारत सरकार आने वाले दिनों में एक आर्थिक पैकेज लेकर आई जिसे **आत्मनिर्भर भारत मिशन** के रूप में लेबल किया गया।

अनुकूलित आत्मनिर्भरता जो उभरी, वैश्वीकृत दुनिया के साथ जुड़ने और चुनौती देने के लिए तैयार थी, वह पिछले दशकों के स्वतंत्रता पूर्व स्वदेशी आंदोलन से विपरीत थी। हालाँकि, स्वदेशी को भी वोकल फॉर लोकल जैसे नारों के साथ रूपांतरित किया गया है, साथ ही साथ वैश्विक अंतर्संबंध को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार का लक्ष्य इसे समेटना है। इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट बताती है, "मोदी की नीति का उद्देश्य घरेलू बाजार में आयात को कम करना है, लेकिन साथ ही साथ अर्थव्यवस्था को खोलना और दुनिया के बाकी हिस्सों में निर्यात करना है।"

आत्म निर्भर भारत के लिए कदम

1. स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना : स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करना और उन्हें बढ़ावा देना।

2. उद्योग और विनिर्माण को बढ़ावा देना : उद्योग और विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए सरकारी नीतियों और योजनाओं का समर्थन करना।

3. कृषि और खाद्य सुरक्षा के लिए काम करना : कृषि और खाद्य सुरक्षा के लिए काम करना और सरकारी योजनाओं का समर्थन करना।

4. ऊर्जा स्वतंत्रता के लिए काम करना : ऊर्जा स्वतंत्रता के लिए काम करना और अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना ।

5. शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाना : शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए सरकारी योजनाओं का समर्थन करना और सामाजिक संगठनों के साथ काम करना।

विकास योजनाएं

1. प्रधानमंत्री आवास योजना : गरीबों के लिए आवास उपलब्ध कराना।
2. प्रधानमंत्री जन धन योजना : गरीबों के लिए बैंक खाते खोलना।
3. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना : गरीबों के लिए एलपीजी कनेक्शन उपलब्ध कराना।
4. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना : किसानों के लिए फसल बीमा उपलब्ध कराना।
5. प्रधानमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना : गरीबों के लिए स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराना।

बच्चों के खाद्य उत्पाद पर मीडिया और विज्ञापन का प्रभाव

आरती वर्मा,
रिसर्च स्कॉलर
गृहविज्ञान विभाग

आज के समय में लगभग हर उम्र के बच्चे अपने खाली समय का उपयोग प्रायः टेलीविजन, केबल सहित विभिन्न प्रकार के मीडिया संयोजनों जैसे डीवीडी, वीडियो गेम, कंप्यूटर, इन्टरनेट और सेल फोन पर व्यतीत करते हैं। मीडिया के उपयोग की अधिकता से बच्चों की पसंद प्रभावित होती है तथा उनमे मोटापे और दीर्घकालिक बीमारियों का खतरा होने लगता है, इसमें टेलीविजन विज्ञापन विशेष रूप से बच्चों के खाद्य और पोषण सम्बंधित ज्ञान के साथ–साथ उनके खरीदने के निर्णय को प्रभावित करता है। हर रोज हमारे बच्चे टेलीविजन के विज्ञापनों और मीडिया के बढ़ते तकनीकों के उपयोग के साथ बढ़ते जा रहे हैं। यद्यपि विज्ञापन को सीधे बचपन के मोटापे से नहीं जोड़ा गया है लेकिन कई मीडिया चौनलों के माध्यमों से बच्चों को लक्षित विज्ञापनों में खाद्य पदार्थों, पेय पदार्थों और इसके बारे में बच्चों की पसंद को दिखाया जाता है जिससे यह स्पष्ट है कि विज्ञापन से बच्चों द्वारा खाद्य उत्पाद को खरीदने की इच्छा बढ़ जाती है। आधे से अधिक टेलीविजन विज्ञापन बच्चों के लिए प्रत्यक्ष रूप से उनके खाद्य तथा पेय पदार्थों जैसे कैंडी, फास्ट फूड, स्नैक्स, शीतल पेय पदार्थ, मीठे खाद्य पदार्थ जो कैलोरी और वसा में उच्च तथा फाइबर और अन्य पोषक तत्वों में निम्न होते हैं ऐसे खाद्य पदार्थों का सीधे विज्ञापन करते हैं, ऐसे विज्ञापन प्रायः बच्चों के लिए विनाशकारी साबित होते हैं, तथा बच्चो में मोटापा बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं। बच्चों के लिए टेलीविजन के विज्ञापन दाता पहले बच्चों के माता–पिता से अपील करते थे, लेकिन अब वे सीधे बच्चों से अपील करते हैं।

कम उम्र में बच्चे टेलीविजन के प्रति आकर्षित हो जाते हैं, जो हमारे लिए जीवन शैली, मूल्य और सामाजिक प्रतिमानों को चित्रित करने में सबसे अधिक सक्षम हैं। एक अन्वेषक का अनुमान है कि प्राथमिक विद्यालय के बच्चे प्रति सप्ताह 20– 25 घंटे औसतन अपने समय का उपयोग टेलीविजन देखने पर व्यतीत करते हैं। जिसमें दिखाए गये विभिन्न खाद्य उत्पादों के विज्ञापनों के अनुसार वे अपने माता–पिता से उस खाद्य उत्पाद की मांग करते हैं। विज्ञापनों में प्रायः पिज्जा, बर्गर, चॉकलेट, बिस्कुट, बेफर, नूडल्स और सॉफ्ट ड्रिंक इत्यादि जैसे जंक फूड बच्चों के खाद्य पदार्थ टीवी पर काफी प्रचारित किए जाते हैं। यह बच्चों में वसायुक्त, शर्करा और फास्ट फूड जैसे खाद्य पदार्थों को खाने की लालसा को विकसित करते हैं, जिससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे विज्ञापन बच्चों को उत्पादों की खरीद के लिए अपने माता–पिता को मनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं यदि वे उत्पाद नहीं खरीदे जाते हैं, तो वे अपनी जिद पर अड़े रहते हैं जिससे उनके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है।

बच्चों के खाद्य संबंधित आदतों पर विज्ञापन का प्रायः निम्न प्रभाव पड़ता है :

- भोजन संबधी रूचि – अरुचि
- अधिक तला भुना तथा मसाले युक्त भोजन का अभ्यस्त होना

खाद्य पदार्थों के विज्ञापन की सामग्री, गुणवत्ता और विज्ञापन की प्रस्तुति के आधार पर बच्चों पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दोनों हो सकते हैं।

सकारात्मक प्रभाव

बच्चों के खाद्य पदार्थों से सम्बंधित विज्ञापन के कुछ सकारात्मक प्रभाव निम्न हैं –

१. स्वस्थ भोजन विकल्प का सही तरीके से विज्ञापन बच्चे को अधिक संतुलित आहार चुनने के लिए भी प्रेरित करते हैं

२. शराब और धूम्रपान के परिणामों को दिखाने वाले विज्ञापन बच्चों को उनसे सम्बन्धित जोखिमों को समझने में मदद कर सकते हैं, और उनसे ऐसे उत्पादों से दूर रहने का आग्रह करते हैं।

नकारात्मक प्रभाव

बच्चों के खाद्य पदार्थों से सम्बंधित विज्ञापन के कुछ नकारात्मक प्रभाव निम्न हैं –

१. विज्ञापित खाद्य पदार्थों का एक बड़ा हिस्सा जंक फूड है जो कि बच्चों के लिये बहुत ही आकर्षक होते हैं। ये बच्चे की खाने की आदतों को प्रभावित करते हैं और एक अस्वास्थ्यकर जीवन शैली को बढ़ावा देते हैं।

इस शोध का उद्देश्य खाद्य पदार्थों के प्रति बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके खाने के व्यवहार पर मीडिया तथा विज्ञापनों के लाभकारी और हानिकारक दोनों प्रभावों का पता लगाना और विज्ञापन जगत में बच्चों के अधिक जोखिम को रोकने के लिए एकीकृत कानून तैयार करके विज्ञापन उद्योग को कैसे विनियमित किया जा सकता है, इसकी पहचान करना है।

वादा

तसमान्या बी.कॉम (स्वरचित)

जो तू कर सकती है, वो वादा भी कर, बातें औकात से ज्यादा भी कर।आसमान को छूने की तमन्ना तो कर, लेकिन किसी को गिराकर आगे बढ़ने का वादा न कर, सभी को साथ में खुशी से लेकर चलने का इरादा भी कर।

एक नई सुबह

सुधा चौरसिया
एम.0ए0 प्रथम वर्ष
समाजशास्त्र विभाग

एक नई सुबह, एक नया सवेरा,
जीवन की नई उमंग, नई आशा का संचार।
सूरज की पहली किरण, नई रोशनी का संदेश,
एक नई सुबह, जीवन को नई दिशा देने का अवसर।।

नई सुबह की हवा, नई उमंग को जगाती है,
नई सुबह की धूप, नई आशा को बढ़ाती है।

जीवन की नई शुरुआत, नई सुबह के साथ होती है,
नई सुबह की खुशियाँ, जीवन को रंगीन बनाती हैं।
एक नई सुबह, जीवन को नई ऊर्जा देती है,
नई सुबह की सुंदरता, जीवन को आनंदित करती है।

परिश्रम ही तो जीवन है

रिया मिश्रा
बी.एस–सी द्वितीय वर्ष

परिश्रम ही तो जीवन का आधार है,
यही तो सफलता का सच्चा द्वार है।
बिना श्रम के सपने अधूरे रह जाते हैं,
जैसे बिना जल के फूल मुरझा जाते हैं।
मेहनत से ही मिलती ऊँचाई,
इसी–से चमकती है किस्मत की कलाई।
जो थककर बैठ जाए मंजिल से पहले,
सपने उसके रह जाते अधूरे पल में।
जीवन एक रण है, कर्म है हथियार,
परिश्रम से ही मिलता है संसार।
भाग्य को मत दो दोष उठो और करो प्रयास,
मेहनत का साथ पाकर मिलेगा हर सुख खास।
पर्वत भी झुकता है परिश्रम के सामने,
हर रुकावट पिघलती है इंसान के हाथों में।
जिन्होंने किया मेहनत पर विश्वास,
उनके नाम हुआ दुनिया का इतिहास।
इसलिए कहता है हर ज्ञानी,
परिश्रम से बढ़कर नहीं कोई कहानी।
जीवन का सार यही है सच्चा,
परिश्रम ही तो है सबसे अच्छा।

मेरा गांव

वैष्णवी दुबे
बी.एस–सी द्वितीय वर्ष

बड़ा भोला बड़ा सादा बड़ा सच्चा है।
तेरे शहर से तो मेरा गांव अच्छा है।
वहां मैं, मेरे पिता के नाम से जाना जाता हूँ।
और यहाँ मकान नंबर से पहचाना जाता हूँ।
वहाँ फटे कपड़ों में भी तन को ढका जाता है,
यहाँ खुले बदन पर टैटू छापा जाता है।
यहाँ कोठी है बंगले हैं. और कार है
वहाँ परिवार है, और अच्छा संस्कार है।
यहाँ चीखों की आवाजें दीवारों से टकराती हैं।
वहाँ दूसरों की सिसकियाँ भी सुन ली जाती हैं।
यहाँ शोर–शराबे में कहीं खो जाता हूँ।
वहाँ टूटी खटिया पर भी आराम से सो जाता हूँ।
मत समझो कम हमें की हम गांव से आये हैं।
तेरे शहर के बाजार मेरे गाँव ने ही सजाये हैं।
वहाँ इज्जत से हम सूरज की तरह ढलते हैं
चल आज उसी गांव में हम चलते हैं।

रंग

Satyam Sangya
Research Scholar, Commerce,

निश्छल बनना है तो रंग बनो,
जो न जाति देखता है और न ही धर्म,
न रंग देखता है और न ही रूप।
नहीं सोचता मैं किससे मिल रहा हूँ,
नहीं सोचता मैं किसमें घुल रहा हूँ।
सोचता है तो बस एक दुनिया,
जो उसी के जैसे रंग–मित्रों से बनी हो,
खूबसूरत, मनमोहक, चटकदार और सौम्य।
जहाँ कोई भेद न हो,
मन में कोई खेद न हो,
जहाँ सभी एक–दूसरे से गले मिलें,
हाथ मिलाएं, सहायता करें,
क्योंकि निश्छल होना इसे ही कहते हैं।

लोग हैं !

पूजा शुक्ला
एम०ए० प्रथम वर्ष

तू अपनी खूबियाँ ढूँढ,
कमियां निकालने के लिए **लोग हैं।**

अगर रखना ही है कदम तो आगे रख
पीछे खींचने के लिए **लोग हैं।**

सपने देखने ही हैं तो ऊंचे देख,
नीचा दिखाने के लिए **लोग हैं।**

अपने अंदर जुनून की चिंगारी भड़का,
जलने के लिए **लोग हैं।**

अगर बनानी है तो याद बना,
बातें बनाने के लिए **लोग हैं।**

प्यार करना है तो खुद से कर,
दुश्मनी करने के लिए **लोग है।**

जीत पक्की है

मुस्कान
एम०ए० प्रथम वर्ष

कुछ करना है, तो डटकर चल
थोड़ा दुनिया से हटकर चल।।
लीक पर तो सभी चल लेते हैं
कभी इतिहास को पलटकर चल।।
बिना काम के मुकाम कैसा...?
जब तक न हासिल हो मंजिल।।
तो राह में आराम कैसा....?
अर्जुन–सा निशाना रख मन में ।।
न कोई बहाना रख,
जो लक्ष्य सामने है।।
बस उसी पर अपना ठिकाना रख
सोच मत साकार कर।।
अपने कर्मों से प्यार कर
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।।
किसी और का न इंतजार कर
जो चले थे अकेले।।
उनके पीछे आज मेले हैं,
जो करते रहे इंतजार सही समय का।।
उनकी जिंदगी में आज झमेले हैं
सोच बदलो जिदंगी बदलो।।
संकल्प के साथ विकल्प,
अपने आप मिल जायेंगे ।।

भौतिक विज्ञानी प्रकृति –प्रेमी और प्रेरणास्त्रोत सर सी० वी० रमन

वैशाली गौतम
बी.एस–सी तृतीय वर्ष
पीसीएम

एक तेजस्वी और प्रतिभावान व्यक्तित्व के धनी सर सी० वी० रमन असाधारण वैज्ञानिक, जिन्होंनें आधुनिक युग के भारत को विश्व स्तर पर एक नयी पहचान दी। रमन के पिता **चन्द्रशेखर अय्यर** विशाखापट्टनम स्थित **ए. वी. नरसिम्हा राव महाविद्यालय** में गणित और भौतिकी के प्रवक्ता थे और फिर मद्रास में प्रेसिडेंसी कॉलेज में नियुक्त रहे। रमन को प्रारम्भ से ही बेहतर शैक्षिक वातावरण प्राप्त हुआ। अपने पिता से प्रेरणा लेते हुए, रमन बहुत छोटी उम्र में ही विज्ञान से जुड़ गए। रमन को विज्ञान और अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकों तथा संगीत से बहुत लगाव था। रमन एक अत्यंत ही प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे और उन्हें अनेक पुरस्कार और छात्रवृत्तियाँ प्राप्त होती रहीं। वे अपने आसपास की दुनिया के बारे में हमेशा बहुत ही उत्सुक रहे। उनकी यही ज्ञान पिपासा और जीवंत जिज्ञासा उन्हें वैज्ञानिक खोजों के लिये प्रेरित करती थी। स्वाधीन भारत में हर चुनौती का सामना करते हुए भी विज्ञान में अध्ययन और शोध को जारी रखते हुए रमन ने भारत में विज्ञान को नई ऊँचाईयो पर ले जाने के लिए सबको जबरदस्त प्रोत्साहन दिया। रमन ने अपने पूरे जीवनकाल में निरन्तर वैज्ञानिक शोध किये। आज रमन **स्पेक्ट्रोस्कोपी,** का आधार है। जिसका अणुओं की पहचान करने के लिये और कैंसर जैसी बीमारियों का पता लगाने के लिये जीवित कोशिकाओं और ऊतकों का विश्लेषण करने के लिये दुनिया भर की प्रयोगशालाओं में किया जाता है। उन्होंने अपने पूर्व विद्यार्थी से कहा था और कि वे कभी भी संस्थान की अकादमिक पुस्तकों को बंद न होने दें क्यूंकि ये देश में किए जा रहे विज्ञान की गुणवत्ता के संवेदनशील संकेतक हैं। **21 नवम्बर 1970** को 82 वर्ष की आयु में प्राकृतिक कारणों से स्वर्गवास हो गया। रमन के सिद्धांत और स्मृतियाँ सदैव हमारे साथ हैं।

रंगोली

नैन्सी गुप्ता
बी.ए. तृतीय वर्ष

रंगोली भारतीय संस्कृति का प्रतीक है, जो त्योहार और विशेष अवसरों पर शुभता सकारात्मकता और सुन्दरता का प्रतीक बनकर और कार्यक्रमों के स्थल की शोभा बढाती हैं। इसे देवताओं के स्वागत, नकारात्मक ऊर्जा को रोकने और सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने के लिए बनाया जाता है। यह रचनात्मकता सांस्कृतिक धरोहर और सामुदायिक भावना को प्रकट करती है। रंगोली का उपयोग उत्सव में सौन्दर्य और उमंग जोड़ने, अतिथियों के सम्मान और आयोजन को विशेष बनाने के लिए किया जाता है। पहले रंगोली बनाने के लिए आटा, हल्दी, कुमकुम और फूलों का उपयोग करते थे, जो पक्षियों और चीटियों के लिए भोजन का स्त्रोत बनता था। यह पर्यावरण के प्रति भी संवेदनशीलता को दर्शाता है। रंगोली को मंगल चिन्हों **(स्वास्तिक, ओम, कमल)** अन्य धार्मिक चिन्ह के रूप में भी बनाया जाता है।

विज्ञान से मानव कल्याण

कशफ़
बी.एस–सी तृतीय वर्ष

विज्ञान का वास्तविक अर्थ और सार्थकता इसी में है कि वह मानव के विकास और कल्याण में काम आए सनातन धर्म में हजारों वर्ष से वर्णित ज्ञान–विज्ञान का आधार मानव जीवन को सुगम सुरक्षित और अनुशासित बनाना रहा है। पुरातन काल में अपने ज्ञान – विज्ञान के कारण भारत विश्व गुरु रहा। शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार विज्ञान और मानव कल्याण के अंतः संबंध को परिभाषित और पुष्पित पल्लवित करने का एक उपक्रम हैं। बीते दिनों 12 वैज्ञानिकों को यह पुरस्कार दिए जाने की घोषणा हुई है। इनमें कुछ ऐसे शोध कार्य भी हैं जो आमजन के जीवन को आधुनिक चुनौतियों से पार पाने हेतु सक्षम बनाने में काफी उपयोगी साबित हो सकते हैं। इनमें ऐसे चार शोध – अनुसंधानों पर प्रकाश डाल रहे हैं।

बायोफिल्म पर शोध से टीबी पर नियंत्रण

विज्ञानी– डा० अश्विनी

संस्थान– इस्टीट्यूट आफ माइक्रोशियल टेक्नोलाजी चडीगढ़

विश्व को टीबी मुक्त कराने के लिए अभियान तेज है किन्तु कुछ क्षेत्रों में यह रोग फिर से सर उठा रहा है। एमडीआर टी बी खाँसी खतरनाक मानी जा रही है। लोगों को इस खतरनाक रोग से सुरक्षित रखने की दशा में डा० अश्वनी का शोध अति महत्वपूर्ण है।

100 वर्ष के लिए वैकल्पिक ईधन की तलाशी राह –

विज्ञानी– प्रो0 रजनीश कुमार

संस्थान – आईआईटी मद्रास

रूस–यूक्रेन युद्ध भले ही बीते वर्ष शुरु हुआ लेकिन आईआईटी मद्रास के प्रो0 रजनीश ने लगभन 10 वर्ष पहले सोचना आरंभ कर दिया था। प्रो0 रजनीश बताते हैं कि वर्ष 2004 में इस शोध का विचार आया तो भारत में उस पर कोई काम शुरू नहीं हुआ था। वह कनाडा में पीएचडी के दौरान वैकल्पिक ईधन पर काम तो रहे थे, लेकिन बेहतर अवसर मिला तो वह भारत लौट आए थे।

भवन बने भूकंपरोधी

विज्ञानी– प्रो० दीप्ति रंजन साहू

संस्थान– आईआईटी दिल्ली

हाल ही में मोरक्को में आए भूकंप ने पूरी दुनिया को हिला दिया भारत का भी बड़ा भूभाग भूकंप के लिहाज से खतरनाक माना जाता है। आईआईटी दिल्ली की विज्ञानी प्रो० दीप्ति रंजन साहू का शोध है, उन्होंने कम लागत वाला भूकंपीय ऊर्जा अवशोषण उपकरण (संरचनात्मक फ्यूज) विकसित किया है इससे केवल नए भवन व पुलों को नहीं बल्कि पुराने भवनों को भी सुरक्षित बनाने का लक्ष्य है।

जल संकट पर समझ होगी बेहतर

विज्ञानी– प्रो० विमल मिश्र

संस्थान – आईआईटी गांधीनगर

गाँव से जुड़े होने के कारण प्रोफेसर विमल मिश्र जलसंकट की भयावहता से भलीभाँति परिचित रहे हैं। प्रो० मिश्र भारत में भूगर्भ जल की उपलब्धता और जल विज्ञान की चरम स्थितियों को पकड़ने वाले प्रभाव को राष्ट्रस्तरीय अध्ययन की दिशा प्रदान कर रहे हैं। प्रो० विमल मिश्र की यात्रा उत्तरप्रदेश में गुरसहायगंज के निकट स्थित इस्माइलपुर गांव से आरंभ होकर कानपुर और खडगपुर होते हुए अमेरिका तक जाती है।

भारत के लिए सौर ऊर्जा की उपादेयता

अर्पिता शर्मा
बी.एस–सी तृतीय वर्ष

ऊर्जा मानव विकास के सबसे महत्वपूर्ण रचना खंडों में से एक है। साथ ही यह विभिन्न देशों के आर्थिक विकास के मापन का एक प्रमुख साधन भी हैं। किसी राष्ट्र के समग्र विकास तथा वहां की प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत में सीधा संबंध पाया जाता है। ऊर्जा के विभिन्न स्त्रोत हैं, जिनमें पारम्परिक एवं गैर पारंपरिक स्त्रोत शामिल हैं। पारम्परिक ऊर्जा स्त्रोत वे हैं, जो प्रकृति में तय तथा सीमित मात्रा में उपलब्ध होते हैं। भारत में पारम्परिक तौर पर सौर ऊर्जा का प्रयोग घरेलू तथा कृषि कार्यों मे सदियों से होता रहा है। सूर्य की धूप का प्रयोग खद्यानों, वस्त्रों को सुखाने और घरेलू सामानों एवं कृषि उपकरणों के उपचार के लिए होता रहा है। सौर पैनलों द्वारा सौर ऊर्जा को विद्युत में बदल दिया जाता है। भारत में सौर ऊर्जा के विकास की असीम संभावना है। क्योंकि देश के अधिकतम हिस्सों में वर्ष भर में 250–300 दिनों सूर्य चमकता रहता है। अतः सौर ऊर्जा को ताप एवं विद्युत दोनों में रूपान्तरित करकें हर जगह इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

युवाओं के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का विचार

डॉ० स्मिता पाण्डेय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान

एक ऐसा युग पुरूष जो मानवता के लिए विषाद के गहनतम अनुभूतियों को मौन रहकर सहता है और अपने ज्ञान से युग को ज्योतित करता है। वह ज्योतिपुंज होता है। वह युग को ऐसी आकांक्षाएँ देने में समर्थ होता है, जो उसे कुछ सृजन करने के लिए प्रेरित और विवश करती है। वह एक तीर्थ यात्री के समान सबको सुखानुभूति प्रदान करते हुए और सबके दुःख रूपी पहाड़ जैसा बोझ को धारण कर इस संसार से विदा होता है। वह मोह बंधन से अपने को मुक्त रखते हुए सांसारिक सुख–दुःख में मानवता की सेवा करते हुए अपने को तटस्थ रखता है। जो राह भी बने और मंजिल भी, जो सूर्य की तरह स्वयं जलकर दूसरों को ताप देने की शक्ति भी रखे तथा चन्द्रमा बनकर शीतलता भी प्रदान करे। ऐसा युगपुरूष भौतिक एवं मानवीय सुखों से उन्मुक्त व स्वतंत्र होता है। ज्ञान प्रतिभा व आदर्श का संगम उनमें प्राप्त होता है। वह एक ऐसा संत होता है, जिसकी पूजा विवेक और संयम करते हैं। ऐसे ही युगपुरूष संत का नाम स्वामी विवेकानन्द है।

स्वामी विवेकानन्द के राजनीतिक विचार धार्मिक एवं समाजिक चिन्तन के सहगामी हैं। युवा राष्ट्र को शक्ति प्रदान करता है। इस संदर्भ में भारत की राजनीतिक दासता से मुक्ति प्राप्त करने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा था "आज देश को जिन चीजों की आवश्यकता है वे हैं लोहे की मांसपेशियाँ, इस्पात की तंत्रिकाएँ, प्रखर संकल्प, जिसका कोई प्रतिरोध नहीं कर सके, जो अपना कार्य हर प्रकार से पूरा कर सके। चाहे उसके लिए महासागर के तल में जाकर मृत्यु से साक्षात्कार ही क्यों न करना पड़े। यह है, जिसकी हमें आवश्यकता है और इसका हम तभी सृजन कर सकते हैं, जबकि हम अद्वैत के आदर्श का साक्षात्कार कर लें, सबकी एकता के आदर्श की अनुभूति कर लें और अपने पर विश्वास कर लें। क्या कारण है कि हम तैतीस करोड़ लोगों पर पिछले एक हजार वर्ष से मुट्ठीभर विदेशी शासन करते आये हैं ? क्योंकि उन्हें अपनों में विश्वास था और हम में नहीं।'

हीगल की तरह राष्ट्र के महत्ता के प्रतिपादक स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि भारत को अपने अध्यात्म से पश्चिम को पराजित करना होगा। "एक बार पुनः भारत को विश्व की विजय करनी है। उसे पश्चिम की अध्यात्मिक विजय करनी है।

स्वामी विवेकानन्द युवाओं को पश्चिम के अंधानुकरण से सचेत करते हुए कहा था कि भारत के पढ़े लिखे लोग ने पश्चिमी शिक्षा एवं संस्कृति को अपनाना प्रारम्भ कर दिया हैं। वे पाश्चात्य विचारों के नैतिक एवं मानवीय विशेषताओं को ग्रहण करने के लिए शुभ मानते थे, किन्तु उनकी नकल करना उन्हें पसन्द नहीं था, क्योंकि वह भारतीयता को जीवित रखने के लिए वेद, वेदान्त, प्रननिषद् आदि से नियंत्रित संस्कृति को श्रेष्ठ मानते थे, जिससे वह अपनी मूल पहचान बरकरार रख सकें।

विवेकानन्द उत्कृट देशभक्त थे और उनके हृदय में देश के लिए अगाध प्रेम था। वे संवेगात्मक देशभक्ति के मूर्त रूप थे। उन्होंने स्वदेश मंत्र के माध्यम से युवाओं को प्रेरित किया– हे भारत ! तुम मत भूलना कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता. सावित्री, दमयन्ती हैं। मत भूलना कि तुम्हारे उपास्य सर्वत्यागी उमानाथ शंकर है, मत भूलना कि तुम्हारा विवाह, धन और जीवन, इन्द्रिय सुख के लिए अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं है। तुम मत भूलना की तुम्हाना समाज उस विराट महामाया की छायामात्र है, मत भूलना नीच, अज्ञानी, दरिद्र, चमार और मेहतर तुम्हारे रक्त हैं, तुम्हारा भाई हैं। हे वीर ! साहस का आश्रय लो। गर्व से कहो कि मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। भारतवासी मेरे प्राण हैं, भारत के देव–देवियाँ मेरे ईश्वर हैं, भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है भारत के कल्याण से मेरा कल्याण है और रात–दिन कहते रहो – हे गौरीनाथ ! हे जगदम्वे! मुझे मनुष्यत्व दो, माँ मेरी दुर्बलता और कायरता दूर कर दो। माँ मुझे मनुष्य बना दो।"

कर्म के सिद्धान्त पर प्रकाश डालते हुए स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं को गीता से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित किया, वे कहते हैं कि तुम अपना कर्म करो, तुम्हारे लिए तुम्हारे सिर पर बहुत से कर्मों का भार है। संसार में ज्ञान का विस्तार करो। प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करे, जब तक सभी लोग भगवान के समीप नहीं पहुँच जाते, तब तक तुम्हारा कार्य शेष नहीं हुआ है।

जाति के विषय में विवेकानन्द कहते हैं कि संस्कृत में जाति का अर्थ वर्ग या श्रेणी विशेष। अब यह सृष्टि के मूल में ही विद्यमान है जाति का अर्थ ही सृष्टि है। "एकोहं बहुस्याम्" (मैं एक हूँ–अनेक हो जाऊ) विभिन्न वेदों में इस प्रकार की जात पाई जाती है। मुझे अपने युवा देशवासियों से यही कहना है कि जाति उठा देने से ही देश का पतन हुआ है। प्रत्येक दृढ़ मूल सामन्त शाही अथवा विशेष अधिकार प्राप्त सम्प्रदाय जाति का द्योतक है– वह जाति नहीं है। जाति को स्वतंत्रता दीजिए जाति की राह से प्रत्येक रोड़े को हटा दीजिए, बस इतना होने से ही हमारा उत्थान होगा।

भारतीय युवाओं को ललकारते हुए कहा है कि "हे वीरों! निर्भय बनो, साहस धारण करो, इस बात पर गर्व करो कि तुम भारतीय हो और गर्व के साथ घोषणा करो कि मैं भारतीय हूँ और प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है। बोलो ज्ञानहीन भारतीय, दरिद्र, अछूत भारतीय मेरा भाई है। तुम भी कमर में लंगोट बाँधकर गर्व के साथ उच्च स्वर में घोषणा करो, भारतीय मेरा भाई है। भारतीय मेरा जीवन है। भारत का कल्याण नेरा कल्याण है। हे गौरीशंकर, जगजननी मुझे पुरूषत्व प्रदान करो, मेरी पौरुषहीनता को हर लो और मुझे मनुष्य बना दो। उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द की व्यापक दृष्टि भारत के युवाओं के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के समस्त युवाओं का मार्ग प्रशस्त करती है।

द्वैतवेदान्तः

डॉ0 पूनम पाण्डेय
असि0 प्रोफेसर
संस्कृत

द्वैतवेदान्तस्य प्रतिपादकाचार्यः मध्व इति स्वीक्रियते। सः 'पूर्णप्रज्ञः' 'आनन्दतीर्थः' इत्यपि कथ्यते। एतस्य जीवनचरितं श्रीनारायणरचिते 'मध्वाचार्यविजये' 'मणिमञ्जर्या' च वर्णितम् अस्ति। अस्य जन्म 1295 ई. कर्णाटके (मैसूरक्षेत्र) उडिपीजिलान्तर्गते विल्वग्रामे अभवत्। केचन विद्वांसः अस्य जन्म 1138 ई. तमे वर्षेऽभवदिति मन्यते। अयमाचार्यः विजयनगरस्य हरिहरस्य तथा बुक्का चेत्यनयोः द्वयोः राज्ञोः मुख्यमन्त्री पदे सुशोभित आसीत्। अस्य पिता सायणः माता च श्रीमती आसीत्। कैश्चिदसौ वायोः अवतारोऽपि मन्यते। मृत्युसमये एतस्यावस्था प्रायः नवतिवर्षात्मिका आसीत। एवं माध्वाचार्यस्य जीवनकालः 1295 ई. तः 1385 ई. पर्यन्तं स्वीकरणमुचितं भाति।

यद्यपि अन्यवैष्णववेदान्तसम्प्रदायवत् मध्वस्य द्वैतवादोऽपि शङ्कर विरुध्य ब्रह्मवाद–परिणामवाद–जगत्सत्यत्ववाद–भक्तिवादादि–सिद्धान्तानां प्रतिपादनं करोति तथापि केषुचिद् अंशेषु वैष्णव–वेदान्त परम्पराः विच्युतः सन् सः द्वैतवादस्य आत्यन्तिकभेदवादस्य वा समर्थनं करोति। वेदान्तेन सह न्याय–वैशेषिक–सांख्यादि–सिद्धान्तानां समन्वयं स्थापयित्वा तेन किञ्चित् मिश्रितमेव दर्शनं निर्मितम्। एतद्दर्शनस्य प्रसिद्धिः रामानुजदर्शनवदस्ति। एतेन अनेक ग्रन्थानां रचनाऽपि कृता। प्रस्थानत्रयमधिकृत्य निर्मितं भाष्यम् अस्य मुख्यग्रन्थः अस्ति। एतदतिरिक्तम् एतेन ब्रह्मसूत्रमधिकृत्य अणुव्याख्यानम् इति ग्रन्थोऽपि लिखितः। भागवत–पुराणामाश्रित्य 'भागवत–तात्पर्यनिर्णय' इत्याख्या टीकाऽपि अनेन रचिता। उपाधिखण्डनं, मायावादखण्डनं, मिथ्यात्वानुमानखण्डनं, तत्वविवेकः, तत्वसंख्यानादयोऽपि अस्यैवाचार्यस्य रचनाः वर्तन्ते।

मध्वाचार्यः आध्यात्मिक–दृष्ट्या उग्रद्वैतवादी वर्तते तथा धार्मिक–दृष्ट्या च भक्तिवादसमर्थकः अस्ति। सः शङ्करस्य अद्वैतवाददर्शनस्य परमशत्रुत्वेन परिगणितः। अद्वैतवादः तथा मायावादश्च बौद्धाभिमतस्य शून्यवादस्य विकृतम् औपनिषदिकं संस्करणं मन्यते। तदनुसारं मायावादिनः ब्रह्मणः, शून्यवादिनः शून्यस्य चाभिन्नं स्वरूपं वर्तते। अद्वैतवादिनस्ते 'मायिदानवाः' इति कथ्यन्ते ये अज्ञानान्धकारे उच्छलन्ति। स चान्धकाराः तर्कागमयुक्तद्वैतसूर्यस्य उदये सति निलीयते यथा सर्वज्ञस्य शंखचक्रयुक्तस्य हरेः आगमने दानवाः पलायन्ते।

मध्वेन अन्तिमसत्तायाः प्रकारद्वयं स्वीकृतम्। स्वतन्त्रः अस्वतन्त्रश्च। संभवतः एतस्मादेव कारणात् सः 'द्वैतवाद' इति कथ्यते। केवलं भगवान् विष्णुः यः पुरुषोत्तम–परमात्मा ब्रह्मादिनामभिः अभिहितः स्वतन्त्र सत्तारूपेण स्वीकृतोऽस्ति। तद्व्यतिरिक्तं सर्वमेव यत् तदधीनं वर्तते तदस्वतन्त्रं वर्तते। एतन्मतानुसारं संसारस्य प्रत्येकं वस्तुना सह भेदबुद्धिः योजिताऽस्ति। प्रत्येकं च वस्तुरूपं विलक्षणं वर्तते।

मध्वेन संसारे पञ्चविधः मूलभेदः स्वीकृतः। इमे च भेदाः जीवेश्वरयोः जीव–भौतिकद्रव्ययोः, भौतिकद्रव्येश्वरयोः, जीव–जीवयोः तथा भौतिकद्रव्य– भौतिकद्रव्ययोश्च मध्ये सन्ति। एते भेदाश्च यथार्थं न तु भ्रामकाः यतोहि एतत् सर्वं भगवान् जानाति। स तस्य रक्षामपि करोति। सर्वज्ञत्वात् ईश्वरः कदापि भ्रान्तः न भवति । भ्रमस्तु निश्चित–ज्ञानस्य न्यूनत्वादेव भवति। अयं च भेदः शाश्वतोऽस्ति। संसारः स्वकीयैः सर्वैः भेदैः सह यथार्थः अनादिश्च वर्तते। एतेषां पञ्चविधभेदानां ज्ञानं मुक्तौ साधकमस्ति।

अस्माभिः अनुमानेनैव ईश्वरजीवयोः भेदः बुध्यते यतोहि स जीवस्य पूज्यो वर्तते। शास्त्रेऽपि भेदस्य प्रतिपादनं कृतम् अस्ति। उदाहरणार्थं तत्र उक्तम् अस्ति यत् आत्मा सत् अस्ति जीवश्च सत् अस्ति तथा तयो भेदः अपि सत् वर्तते। मध्वेन शास्त्रसम्मतस्य ब्रह्मणः पारमार्थिकी सत्ता स्वीक्रियते। 'अद्वैतं परमार्थतः' इत्यादि श्रुतिवाक्यानाम् अर्थः एवमेवोच्यते यद् विष्णुः एव परमः पूर्णः श्रेष्ठसत्तात्मकश्च वर्तते इति। तत्सदृशी अन्यस्य कस्यचित् सत्ता न वर्तते। इत्थं सः अद्वैतोऽस्ति तस्य जीवेन भेदश्च सिद्धयति। मध्यमतानुसारं छान्दोग्योपनिषदः 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यस्य अर्थोऽपि अयमेव अस्ति यद् जीव–ब्रह्मणोर्मध्ये सादृश्यं वर्तते। 'तत्' नाम किञ्चित् दूरं परोक्षं च वस्तु सङ्केतयति, 'त्वम्' इति शब्दः सम्मुखवर्तिनः प्रत्यक्षपुरुषस्य च वाचकोऽस्ति। अतः निष्कर्षरूपेण इदं वक्तुं शक्यते यत् द्वयोः तादात्म्यम् अबुद्धिग्राह्यम् अस्ति। केवलमेतदेव न किन्तु जीवब्रह्मणोर्भिन्नतां शास्त्रदृष्ट्या प्रमाणयितुं ते तत्त्वमसि इति महावाक्यम् 'अतत्त्वमसि' इत्येवं रूपेण परिवर्तयन्ति।

विशिष्टाद्वैतवेदान्तवत् मध्वस्य द्वैतदर्शनेऽपि विष्णुः ब्रह्म–स्वातन्त्र्य–शक्ति–ज्ञान–आनन्दादिभिर्नामभिः अनन्तकल्याणगुण–सम्पन्नः मन्यते। स च विष्णुः संसारस्य केवलं निमित्तकारणमस्ति, उपादानकारणं तु प्रकृतिरेवास्ति।

रामानुजवत् मध्वोऽपि जगदेतत् सदिति मन्यते तथा सृष्टिं च ईश्वरस्य लीलेति मनुते। ईश्वरश्चतेन 'सत्यसङ्कल्प' इति कथ्यते। तेन एवमप्युच्यते यत् ईश्वरस्य न कश्चनापि सङ्कल्पः मिथ्या भवितुम् अर्हति। अतः सङ्कल्परूपा सृष्टिरपि मिथ्या भवितुं न शक्नोति।

लक्ष्मी भगवतः शक्तिरस्ति अतः ततो भिन्ना वर्तते। केवलं सा तस्य अधीनेति मन्यते। भगवांश्च नित्यमुक्तः, अप्राकृतो दिव्यदेहसम्पन्नः एवं च देश–कालयोः व्यापकोऽस्ति। लक्ष्मी च गुणेषु भगवतो न्यूना वर्तते।

मध्वः अपि 'विशिष्टाद्वैतवेदान्तवत्' मुक्तये भक्तिः आवश्यकीति मन्यते। भगवन्तं प्रति ज्ञानपूर्वकम् अनन्यस्नेह एव भक्तिरस्ति। भक्तिः उपासना ध्यानरूपा वा मन्यते। ध्यानं नाम इतरविषयाणां तिरस्कारपूर्वकं भगवतः अखण्डस्मृतिरस्ति। भगवतः अपरोक्षज्ञानात् यदा अनन्यभक्तिः उत्पद्यते तदा भगवतः परमानुग्रहेण मोक्षः प्राप्यते। मुक्तजीवेष्वपि ज्ञानानन्दगुणानां तारतम्यं विद्यते। मुक्तजीवानाम् आनन्दभोगः चतुःप्रकारको भवति।

1. सालोक्यं
2. सामीप्यं
3. सारूप्यं
4. सायुज्यञ्चेति।

एतेषु भगवता सह वैकुण्ठलोके निवसनं सालोक्यमस्ति । भगवतः समीपे वासः सामीप्यमस्ति। भगवान् सदृशं रूपधारणं सारूप्यमस्ति । भगवतः शरीरे प्रविश्य तस्य शरीरेण आनन्दभोग एव सर्वश्रेष्ठः मोक्षोऽस्ति । अत्रापि तारतम्यं विद्यते।

जीवस्तु अनेकः, अणुपरिमाणः, ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता तथा ईश्वरेण नियाम्यः अस्ति। जीवः नित्यमुक्तबद्धत्वेन त्रिधा विभक्तोऽस्ति। नित्यजीवाः ते सन्ति ये लक्ष्मीसदृशाः सर्वदा मुक्ताः सन्ति। मुक्तजीवस्तु स एवास्ति। यः सर्वविधबन्धनात् मुक्तो वर्तते। देवता–ऋषि तथा अन्येभ्योऽपि बन्धनेभ्यो मुक्तः जीवः अस्यां श्रेण्यामन्तर्भवन्ति। तृतीयः बद्धजीवोऽस्ति। बद्धजीवास्तु त्रिधा सन्ति।

आयुर्वेदे व्याधिः

अशोका रुइदास
(शोध–छात्रा)
संस्कृत विभाग

आयुर्वेदस्य शाब्दिकार्थःहि आयोर्वेदः। अर्थात् जीवनविषये ज्ञानप्रदं विज्ञानं यस्मिन् शास्त्रे विधितं सः हि आयुर्वेदः। आयुर्वेदः विश्वस्य प्राचीनतमेषु चिकित्साव्यावस्थासु अन्यतमः अस्ति। भारते, नेपाले, श्रीलङ्कादेशे च आयुर्वेदस्य बहुप्रसिद्धं दृश्यते। आयुर्वेदस्य लक्षणविषये चरकसंहितायामुक्तम् –

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तश्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।

अर्थात् भेदचतुष्टयमायुर्दृश्यते यथा – हितः, अहितः, सुखं दुःखञ्च। चतुर्विधस्य लक्षणं यस्मिन् शास्त्रे वर्णितमस्ति स हि आयुर्वेदः। तथाहि सुश्रुतेनोक्तम् –

आयुरस्मिन्विन्दति वेत्ति वा आयुर्वेदः।

आयुर्वेदस्य त्रयः प्रसिद्धाः ग्रन्थाः ये बृहत्रयी इति स्मृताः। यथा –
1. चरकसंहिता – चरकस्य
2. सुश्रुतसंहिता – सुश्रुतस्य
3. अष्टांगहृदयः – वाग्भट्टस्य।

प्रतिग्रन्थाकारः आयुर्वेदस्य भागविशेषस्य क्षेत्रविशेषस्य वा विस्तृतं वर्णनं करोति, अन्तिमे सामान्यवर्णनं च ददाति। अस्मिन् सन्दर्भे उक्तम्–

निदाने माधवः श्रेष्ठः सुत्रस्थाने तु वाग्भट्टः।
शरीरे सुश्रुतः प्रोक्तः चरकस्तु चिकित्सिते।।

आयुर्वेदः अथर्ववेदस्य उपवेदः इति स्मृतः। आयुर्वेदग्रन्थपरम्परायां ब्रह्मा आयुर्वेदस्य प्रथमः आचार्यः अस्ति। आयुर्वेदस्योद्देश्यं हि स्वास्थस्य, आरोग्यस्य च रक्षणं, रोगी रोगस्य च चिकित्सा। तथाहि उक्तं चरकसंहितायाम् –

प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं
आतुरस्यविकारप्रशमनं च।।

सुश्रुतसंहितानुसारेण यस्य संयोगे पुरुषस्य दुःखं उत्पादितं तस्य नाम व्याधिः। तथाहि उक्तम्–

तद्दुःखसंयोगा व्याधय उच्यन्ते।

अष्टांगहृदयम् अष्टांगसंग्रहशास्त्रञ्च ग्रन्थे रोगलक्षणविषये उच्यते दोषत्रयस्य (वात, पित्तः, कफः) विषमावस्थायाः नाम रोगः। "रोगस्तु दोषवैषम्यम्" ।

रोगस्य भेदविषये ग्रन्थाकाराणां मध्ये मतानैकं दृश्यते। चरकसंहितायाः सूत्रस्थाने रोगस्य भेदत्रयं दृश्यते – निजः, आगन्तुकः मानसश्च। चरकसंहितायाः निदानस्थानेऽपि भिन्नभेदत्रयं दृश्यते। यथा–आग्नेयः (पित्तजन्यः), सौम्यः (कफजन्यः), वायव्यः (वायुजन्यः) इति।
चरकसंहितायां रोगस्य भेदचतुष्टयं स्वीक्रियते। यथा – **1.** आगुन्तकः **2.** शारीरिकः **3.** मानसिकः **4.** स्वाभाविकः इति।
अष्टांगहृदये भेदद्वयं स्वीक्रियते। यथा – **1.** निजः **2.** आगन्तुजः इति।

रोगस्य मूलकारणमस्ति शरीरः मनश्च। चरकसंहितायां निदानस्थाने रोगोत्पत्तिविषये त्रयः भेदाः दृश्यन्ते –

1. असामेन्द्रियार्थसंयोगः
2. प्रज्ञापराधः (बुद्धेः दोषः)
3. परिणामः (कालः)

चरकसंहितायां निजरोगविषये आगन्तुजरोगविषये चोक्तम् –

तत्र निजः शरीरदोषसमुत्थः, आगन्तुर्भूतविषवायुवाग्निसम्प्रहारादिसमुत्थः। इति।

अर्थात् शारीरिकवातादुत्पादितः रोगः निजः। आगन्तुजरोगः आघातेन, भूतदंशेन, सर्पदंशादिना, शीत–उष्ण–अग्नि–अम्लादिदाह्यद्रव्येषु वा गदा–खड्गादिभिः आघातेन वा भवति। अतएवः वात–पित्त–कफ–रक्तानां साम्यविषम्यभावेन रोगोत्पत्तिर्भवति।

चरकसंहितायां रोगप्रतिकारविषये उक्तम् –

प्रशाम्यत्यौषधैः पूर्वा दैवयुक्तिव्यपाश्रयैः।
मानसो ज्ञानविज्ञानधैर्यस्मृतिसमाधिभिः।।

शारीरिकदोषाः दैव्य–युक्तिव्यापाश्रयौषधैः निवृत्ताः भवन्ति। मानसिकदोषज्ञानेन (आत्मादिना), विज्ञानेन अर्थात् शास्त्रज्ञानेन (धैर्यम्), चित्तस्थिरतया (स्मृतिः), अनुभूतपदार्थस्मरणेन (समाधिः), लौकिकविषयेभ्यः मनः निवृत्त्य आत्मायां एकाग्रं कृत्वा मानसिकदोषाः शान्ताः कर्तुं शक्यन्ते।

निषेवते प्रशस्तानी निन्दितानी न सेवते ।
अनास्तिकः श्रद्धान एतत् पण्डितलक्षणम् ॥

भावार्थः

सद्गुण, शुभ कर्म, भगवान् के प्रति श्रद्धा और विश्वास, यज्ञ, दान, जनकल्याण आदि, ये सब ज्ञानीजन के शुभ– लक्षण होते हैं ।

क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च ह्रीः स्तम्भो मान्यमानिता। यमर्थान् नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥

भावार्थः

जो व्यक्ति क्रोध, अहंकार, दुष्कर्म, अति–उत्साह, स्वार्थ, उद्दंडता इत्यादि दुर्गुणों की और आकर्षित नहीं होते, वे ही सच्चे ज्ञानी हैं ।

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः ।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते ॥

भावार्थः

जो व्यक्ति सरदी–गरमी, अमीरी–गरीबी, प्रेम–धृणा इत्यादि विषय परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता और तटस्थ भाव से अपना राजधर्म निभाता है, वही सच्चा ज्ञानी

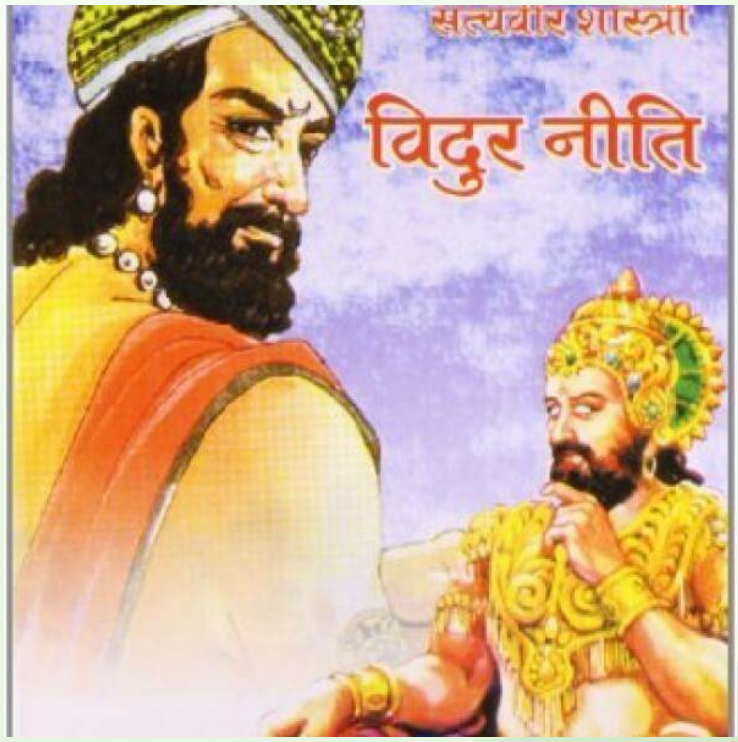

श्रीमद्वाल्मीकिरामायणे श्रीरामस्य चरितम्

सावित्री
शोधछात्रा

संस्कृत नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः।
भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाण भारती।।

सर्वथा सार्थकतां धत्ते सूक्तिरियम्–संस्कृतभाषा दिव्यगुणसम्पन्न खलु। अनयैव भाषया देव स्तुति सकलं च देवकार्यं सम्पद्यते। देवाः संस्कृतभाषायामेव व्यवहार चक्रुः। इयं देववाणी अमरगिरा, सुरभारती, गीर्वाणी, देवभाषा चेत्यादिभिर्विशेषणैरलांक्रियते। वेदाः वेदाङ्गानि, उपनिषदः पुराणानि, सकलानि च शास्त्राणि सस्कृत भाषायामेव निबद्धानि। आसारेऽस्मिन् संसारे त्रिविधतापोपपीडिताः सन्तो नराः ततो निवृत्तिमिच्छन्ति तदर्थं वैज्ञानिकैः ऋषिभिः कोविदैश्च नैके मार्गाः प्रतिष्ठापिताः। तेषु काव्यमार्गः सरसः सरलश्च यतो हि काव्यं श्रुत्वा सर्वे मोदन्ते। अनेन दुःख निरासः सद्यः एव च सुखावाप्तिः।

सत्काव्यस्य मूलं वेदेषु विद्यते। लौकिक साहित्यस्य आदिकाव्यं रामायणं अस्ति। अस्य रामायणाख्यस्यादिकाव्यस्य प्रणता महर्षिः वाल्मीकिरस्ति। एकदा महर्षिः वाल्मीकिः माध्यन्दिन सवनाय तमसानदीं ययौ। तत्र प्रसन्नसलिलं संवीक्ष्य विचचार। तत्र स निषादेन निपातितं शोणितपरीताङ्गम् भूतले चेष्टमानं क्रौचाख्यं द्विजं ददर्श तस्य पक्षिणोजाया निहतं पतिं विलोक्य सकरुणं रूराव, परमसहृदयो महर्षिः वाल्मीकिः रूदतीं क्रौंची दृष्ट्वा सहसा इदं वचनम् अब्रवीत् –

मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौंचमिथुनादेवकमवधीः काममोहितम्।।

एतत् पद्यम् अनुशील्य स मुनिपुङ्गवोचिन्तयत् –

पद बद्धोऽक्षरसमः तन्त्रीलयसमन्वितः ।
शाकार्त्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा।।

एवमस्य शोक एव श्लोकतां गतः। ततः तत् समीपे लोक कर्ता ब्रह्मा समाजगाम, अब्रवीच्च, वाल्मीके ! रामस्य चरितं लिख। एवं पितामह प्रेरितो वाल्मीकिः रामचरितं लिलेख। नलचम्पू काव्यस्य त्रिविक्रमभट्टस्य प्रसिद्ध पद्यमिदम् –

सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला।
नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा।।

महर्षि वाल्मीकिना प्रस्तुताया रामायणकथाया रम्यात्वं किम्? स्वयं त्रिविक्रमभट्ट एव तस्याः कथायाः रम्यात्वहेतुभूतं कारणद्वयं निर्दोषात्वं सुकोमलात्वं चेति।
वाल्मीकि रामायणेऽपि –

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।
तावत् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति ।।

अस्य रामायणस्य नैकानि अभिधानामानि सन्ति–काव्यम्, महाकाव्यम्, आर्षकाव्यन्, दिव्यकाव्यम् आदिकाव्यम्, उत्तरकाव्यम्, आरण्यानम्, पुरातनेतिहासकाव्यं च।

आदिकविः वाल्मीकिः विरचितमिदं रामायणं नाम महाकाव्यं लोकेषु त्रिषु कालेषु च त्रिषु प्रथितं रम्यं सकलकलुषं विनाशनैः कान्तासम्मिततयोपदेशजननश्च विद्यते। संस्कृत भाषा निबद्धम् आदिकाव्यं रामायणं काव्यङ्गसरिद्धारेव सकलं जगत् पुनाति। वाल्मीकि समये संस्कृतभाषा लोकभाषा रूपेण विकासभवाय। सा च काव्यरचना सामर्थ्य शालिनी महर्षिणा येन सम्पादिता।

संस्कृत साहित्यस्यारुणोदय एष आदिकविः महर्षिवाल्मीकिः कामनीय काव्यकला संमलङ्कृतं रामायणाख्यमति महनीयम् महाकाव्यं जुगुम्फ। यस्मिन् भगवतः श्रीरामचन्द्रस्य त्रिभुवन पावनं चारित्र्यं वर्णितमास्ते। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राममतिरिच्य आर्य संस्कृतेरभिनवरमणीयतरं चरित्रं सर्वथा दुर्लभं लोकेऽन्यत् । भगवान् रामः खलु आर्यावर्तस्य भारतीय इतिहासस्य प्रतिनिधि रूपे सर्वेषाम् अत्र प्रेरणास्त्रोतो वर्तते। मानवजीवनस्य विभिन्न रूपाणां य आदर्शा भवितुर्महन्ति ते समग्रा अपि अस्मिन महनीयमहिमाऽमण्डिंत पुरुषोत्तम एव घटिता भवतन्ति। श्रीरामः किल आदर्शा भूपति, आदर्शः पुत्र, आदर्शः पतिः, आदर्शभ्राता, आदर्शः स्वामी च विद्यते।

रामायणस्य साहित्यिक परिशीलनं पश्चात् रामायणस्य सामाजिक, दार्शनिक, राजनैतिक स्थितिंच किं अस्ति अयं विवेचनम् करणीयम्।

रामायणे सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितयः साहित्यं हि भवति समाजस्य दर्पणः। कस्यापि देशस्य समाजस्य च वास्तविकं स्वरूपं तस्य साहित्ये एवं प्रतिबिम्बं भवति। या च समाजस्य संस्कृति साऽपि तत्रत्ये साहित्य एवं प्रतिबिम्बता भवति। रामायणं हि अस्माकं देशस्य सम्साहित्य तस्मिन् साहित्ये तात्कालिक समाजस्य संस्कृतेश्च याः स्थितयः ताः तस्य पर्यालोचनेनैव ज्ञातुं शक्यन्ते। अतः रामायणकालिकाः सामाजिक संस्कृतिकपरिस्थितयः अत्र विवेच्या वर्तन्ते।

अस्ति मानव एकः सामाजिकः प्राणी । आत्मरक्षा दृष्ट्या समुदायं निर्माय अवस्थानस्य सहजयाप्रवृत्या समाजस्य निर्मितिर्भवति। तस्मिन् समाजे विभिन्नाः सदस्याः स्वाधिकारेण सह अन्येषामपि अधिकारणाम् आदरं कुर्वन्ति। समय प्रवाहेण साकं समाजस्य विविधाः परम्पराऽपि एक निश्चितमाकारं धारयन्ति। तासु परम्परासु युगधर्मानुकूलं किमपि परिवर्तनं ज्ञायते। सामाजिक अवस्थायां मुख्यतो वर्णाश्रम नियमाः परिवारः, संस्कारः, नारीस्थितिः, शिक्षा, आहार, विहारौ, वस्त्राभूषणम्, मनोरन्जनं साधनानि च विवेचनाकोटौ समागच्छन्ति ।

अन्तिके अलौकिकगुण विभूषितस्य अस्य रामायण कोविदैः प्रशस्तिः कृता । रामायण काव्यरसामृतं निपीय नरः परं पदं प्राप्तुं शक्नोति। यथोक्तम् –

वाल्मीकेः कवि सिंहस्य कविता वन चारिणः ।
श्रृण्वन् रामकथानादं को न याति परं पदम् ।।

रामायणस्य प्रसिद्धिः स्वकीय गुणगौरवेणैव रामायणं सर्वत्र प्रसिद्धिं लोकप्रियतां च प्राप। व्यक्तेः समाजस्य च जीवनोपयोगिनः सर्वे विषयाः रामायण समाविष्टाः। रामायणस्य अध्ययनं–विदुषां–अविदुषाम्–धनिनां–निर्धनानाम्, सन्यासिनां–गृहीणाम्, बालवृद्धयूनां द्विजानां–शुद्राणाम्, स्त्रीणां च स्वान्तं नितान्तमाकर्षति। रामायणस्य लोकप्रियत्वं सर्वकालस्थायित्वं च प्रख्यापयता भगवता वाल्मीकिना कथितम् –

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति । ।

रामायणस्य लोक प्रियताया एतत् प्रत्यक्षं प्रमाणं यद् रामायणोत्तर कालिकैः कविभिः रामकथामाश्रित्य बहूनि काव्यानि, नाटकानि च विरचितानि। तानि यथा–प्रतिमानाटकम्, रघुवंशमहाकाव्यम्, कुन्दमाला, भट्टिकाव्यम्, उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्, अनर्घराघव, रामायणमंजरी, रामायणचम्पूः, चेत्यादीनि। इत्थं रामायणस्य उपजीव्यत्वमपि सिद्धयति ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. वाल्मीकि रामायणम् 1/2/15
2. वही
3. नल चम्पू
4. वाल्मीकि रामायणम् 1/2/36–37
5. वाल्मीकि गिरि संभूता राम सागर गामिनी ।
   पुनाति भुवनं पुण्या रामायण पयस्विनी ।।

संस्कृत के माध्यम से समय देखना सीखे –

निशी शुक्ला
बी.ए.द्वितीय

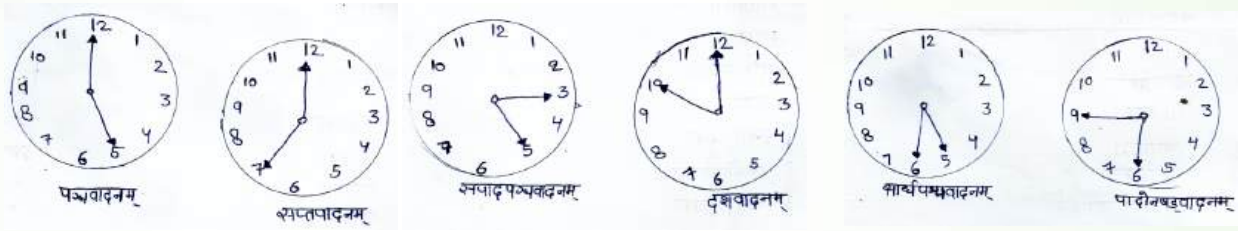

वासराणां नामानि

1 भानुवासरः
2 सोमवासरः
3 मङ्गलवासरः
4 बुधवासरः
5 गुरुवासरः
6 शुक्रवासरः
7 शनिवासरः

मासानां नामानि

1 चैत्रः
2 वैशाखः
3 ज्येष्ठः
4 आषाढ़ः
5 श्रावणः
6 भाद्रपदः
7 आश्वयुजः
8 कार्त्तिकः
9 मार्गशीर्षः
10 पुष्यः
11 माघः
12 फाल्गुनः

वस्तुनि नामानि

	संस्कृत शब्दः	हिन्दी शब्द
1	गृहम्	घर
2	द्वारम	दरवाजा
3	वस्त्रम्	कपड़े
4	व्यजनम्	पंख
5	भोजनम्	भोजन / खाना
6	तूलम्	रजाई
7	चुल्लिका	चूल्हा
8	दर्वी	कड़छी
9	स्थालिका	थाली
10	कसोरिका	कटोरी
11	कर्पट्टिका	रोटी
12	करवस्त्रम्	रूमाल
13	शटिका	साड़ी
14	द्विचक्रिका	साइकिल
15	पेटिका	बक्सा
16	आसन्दिका	कुर्सी
17	कुञ्जिकाः	चाभी
18	अग्निपेटिका	माचिस
19	कटः	चटाई
20	जवनिकाः	पर्दा
21	पुष्पाः धानीः	गुलदस्ता
22	गोलदीपः	बल्ब
23	चषकः	गिलास
24	चमसः	चम्मच
25	कपाटिका	अलमारी
26	मार्जनी	झाड़ू
27	उपनेत्रम्	चश्मा

संस्कृतिः संस्कृताश्रया

शिवानी रावत
बी.ए. द्वितीय वर्ष

संस्कृतं संस्कृतेर्मूलं ज्ञानविज्ञानवारिधिः ।
वेदतत्त्वार्थसंजुष्टं लोकाऽऽलोककरं शिवम्।।(कपिलस्य)

संस्कृतेः स्वरूपम् — का नाम संस्कृतिः ? परिष्करणं, संस्करणं, दुरितव्यपोहनम्, दुर्भावदहनं च संस्कृतिरिति। संस्कृतिर्हि जीवनोन्नतिसाधिनी, सद्गुणग्राहिणी, सत्पथपिहारिणी ज्ञानज्योतिः प्रचारिणी च। यथा कृषिकर्मणि तृणादिहेयपरिहारेण अभीष्टाङ्कुरादिरक्षणं तथैप संस्कृत्या दुर्भावनिरोधपूर्वकं दुर्गुणदमनपुरः सरं च सद्गुणरत्नसङ्ग्रहोऽअनुष्ठीयते।

संस्कृतिः संस्कृताश्रया— वेदेषु, धर्मसूत्रेषु, उपनिषत्सु दर्शनेषु, स्मृतिग्रन्थेषु च महता विस्तरेण पुरुषार्थचतुष्टयस्य, कर्तव्याकर्तव्यस्य च विवृति रूपस्थाप्यते। वेदेषु अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहादीनाम् अवश्यकर्तव्यत्वेन निर्देश उपलभ्यते। वेदमूलकमेव उपनिषदादीनामनुशासनम्। उपनिषत्सु आत्मज्ञानं ब्रह्मप्राप्तिर्वा परमकर्तव्यत्वेन निर्दिश्यते। आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यांसितव्यः। आत्मनि खल्वरे दृष्टे श्रुते मते विज्ञाते इदं सर्वं विदितम् (बृहदा.5/5/15) धर्मस्य स्वरूपं विवेचयता वैशेषिकदर्शनकृता कणादेन व्यवस्थापितं यत् येन ऐहिकमामुष्मिकं च क्षेममासाद्यते स धर्मः। (यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः)। ईश्वरास्तित्वम्, अनास्तिक्यं, धर्मबुद्धिश्चेति संस्कृतेवैशिष्ट्यम् संस्कृते—वैशिष्टयम्। अत एव यंजुर्वेदे ईशोपनिषदि च निगद्यते ईशावास्यमिदं सर्वम् (यजु. ४०/२)। ब्रह्मसाक्षात्कारः यदि जीवनेऽस्मिन् न क्रियते तर्हि जीवनस्य नैष्फल्यमेव। ब्रह्मज्ञानेनैव जीवनस्योपयोगित्वम्।

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति, न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचिन्व्य धीराः, प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।। केन. २—५

जीवने कर्तव्यनिष्ठता, अनासक्तिभावनया कर्मणि प्रवृत्तिश्च जीवनस्य साफल्यं दिशति। भगवद्गीतायामपि एतदेव सैद्धान्तिकरूपेणोपदिश्यते।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।(यजु. ४०—२)
कर्मव्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।(गीता २—४७)

एषैव संस्कृतिर्लोकेषु विश्वबन्धुत्वभावनां जागरयति। समत्वदृष्टिसम्पादनेन च स्वपरहितविभेदनिवारणद्वारा सार्वभौतिकी, सार्वलौकिकीं चोन्नतिं निर्दिशति —

'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'(यजु. ३६/१८)
'तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः'(यजु. ४०/७)

भौतिकवादे प्रवृत्तिश्वेत मानवस्य तर्ह्यध्यात्मसाधनं तत्त्वज्ञानाधिगमश्च न कथमपि सम्भाव्यते। भौतिकविषयेष्वनवलिप्तस्यैव तत्त्वज्ञानं सत्यदर्शनञ्च —

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्व पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये (ईश. १५)।।

जीवनमेतद् यज्ञमयम् । यज्ञस्याश्रयणं सर्वाङ्गीणोन्नतिसाधकाम्। जीवनस्य परार्थसाधनेनैव साफल्यम् । तदर्थं परोपकारभावोदयः स्वार्थपरित्यागः, त्यागवृत्तित्वं चावश्यकम् —

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म (शत. १/७/१/५)।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम् (यजु. ४०/२)।।

भारतीया संस्कृतिः

मनीषा अवस्थी
स्नातक
बी.ए. द्वितीय वर्ष

संस्कृतिः – 'सम्' उपसर्गपूर्वकात् 'डुकृञ्करणे' धातोः 'क्तिन्' प्रत्यये कृते सति संस्कृतिशब्दो निष्पद्यते। यस्यार्थो भवति या खलु सम्यग् उचिता कृतिः, यां शिष्टपुरुषाः मननशीलाः मनीषिणो व्यवहरन्ति, कुर्वन्ति, समाचरन्ति च, अत् एव सा सम्यक् कृतिः = संस्कृतिः इति कथ्यते। अयं भावो जगतीतलेऽस्मिन् प्रायः सर्व एव प्राणिनः कुर्वन्ति, केचन् अकर्मापि कुर्वन्ति, एवं सर्वे किमपि कुर्वन्ति एव। तेषु येषां कृतिः सम्यक् कृतिः परिष्कृतिः, सा एव संस्कृतिः। अत्र तावदिदमवधेयं यत् परिष्करणं संस्करणं वा आत्मनोऽपेक्षितमस्ति। यतो हि आत्मनः परिष्करणे सर्वत्र कार्येषु स्वयमेव परिष्कारो जायते। संस्कृतिविषये श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचारी एवं उल्लिखितम्– कस्याश्चिदपि जातेः कस्यचिदपि राष्ट्रस्य शिष्टपुरुषेषु क्रियावाणीविचाराणां यद् रूपम् अभिव्याप्तमस्ति, तस्यैवाभिधानं संस्कृतिः।"

डॉ. सम्पूर्णानन्दमहोदयः संस्कृतिस्वरूपं निरूपयन एवं कथयति– "अनारतं प्रगतिशीलस्य मानवजीवनस्य मानवसमाजस्य च यैरपरिमेयैरनुभावैः संस्कारैश्च मानवः प्रभावितः संस्कृतश्च जायते, ते समष्टिगताः भावाः संस्कृतिरेव। मानवानां समे विचाराः, प्रत्येककृतिः संस्कृतिर्नास्ति, परन्तु यैः कार्यैः कस्यचिदपि देशविशेषस्य सम्पूर्णसमाजो भृशं प्रभावितो भवति स एव स्थायी प्रभावः संस्कृतिरिति कथ्यते–

टी.एस. इलियटमहोदयाः संस्कृतेः मीमांसामेवं कुर्वन्ति– Cultuer is not merely the sum of activities but a way of life.

भारतीया संस्कृतिः – भारतीयसंस्कृतिः सर्वासु, संस्कृतिषु प्राचीनतमा श्रेष्ठा ज्येष्ठा चास्ति। अत्र यद वैशिष्टय वरीवर्ति तदन्यत्र न।

पुरा किलासौ परमां प्रतिष्ठां प्राप।

अस्या निरवद्यं हृद्यं स्वरूपं संवीक्ष्य सर्वे खल्वाश्चर्यम् अन्वभवम्। अस्माकं भारतदेशः तदानयैव जगद्गुरोः गौरवमयीं पदवीम् अलभत्। अत एवं कथयति महर्षिः मनुः–

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् प्रथिव्यां सर्वमानवाः।। मनुस्मृति

अस्या भारतीयायाः संस्कृतेः प्रमुखतत्वानि धर्मः, सद्वृत्तम्, दर्शनम्, ज्ञानम्, भक्तिः, साहित्यम, संगीतम, कलादयश्च सन्ति। भारतीयाः जनाः पुरा किल एतै तत्त्वैः विभूषिताः आसन्, अत एव ते सभ्याः संस्कृतः, वीराः शीलवन्तश्च बभूवुः।

भारतीयसंस्कृतेः वैशिष्ट्यमः – अत्र समासेन भारतीयसंस्कृतेः काश्चन् विशेषताः प्रस्तूयन्ते–

1. पुरातना – भारतीया संस्कृतिः पुरातनतमा वर्तते । यदा अन्ये देशाः ज्ञानविज्ञानविषये शून्याः आसन् तदा आस्माकं संस्कृतिः पूर्ण–विकसितासीत। अन्ये देशाः अनया ज्ञानार्जनं चक्रुः।

2. सनातनता – भारतीया संस्कृतिः सनातनस्वरूपा वर्तते। जगतो नैकाः संस्कृतयः समुन्नतिं प्राप्य विनष्टाः परन्तु भारतीया संस्कृतिः विविधविघ्नबाधाभिराहता सत्यपि स्वकीये पुरातनरूपे अद्यापि विलोक्यते। तत्र युगानुरूपं विकासस्तु वर्तते न पुनः ह्रासः। एषा ऋग्वेदकालादारभ्य सम्प्रत्यपि अक्षुण्णा संशोभते।

3. धर्मप्राधान्यम् – भारतीयसंस्कृतौ धर्मस्य प्राधान्यमस्ति धर्मस्य महिमा महीयान्। धर्म एवं मानवान् पशुभ्यो व्यवच्छेदयति। धर्मस्य विषये महाभारतमेवं ब्रूते–

" धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।।

केचन धर्मपदेन सम्प्रदायविशेषं मत्वा तं नाद्रियन्ते । परंतु धर्मशब्दो नात्र सम्प्रदायविशेष – वाचकः। धर्मशब्दस्तु जगद्धारकाणि सर्वाण्यपि मूलतत्वानि खलु प्रस्तौति। यथोक्तम् –

" धारणाद्धर्म इत्याहुः, धर्मो धारयते प्रजाः। (महाभारत)
यः स्याद् धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः।।

वैशेषिकदर्शने धर्मस्वरूपमेवं प्रतिपादितमास्ति –

"यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः।।"(वैशेषिक दर्शन)

गीता गायति यत् स्वकीये, धर्मे निधनं खलु श्रेयः परन्तु कदाचिदापि परधर्मो नात्रयणीयः – 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह

4. मानववाद – एषा संस्कृतिः मानवमात्रस्य कल्याणं कामयते।
अस्या समुद्घोषोऽयमस्ति –

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।।"

5. अध्यात्मिकी भावना – भारतीय जनजीवनम् अध्यात्मभावनया अनुस्यूतमस्ति। अत्र अध्यात्म विद्या एव स्तुतास्ति "अध्यात्मविद्या विद्यानाम् एषा अध्यात्मविद्या मानवं देवत्वं प्रापयति। श्रेयो मार्ग प्रशंसन् कठोपनिषद् कथयति–

"श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।"

भारतीय मनीषिणामभिमतमस्ति यत् कृत्स्नमिदं जगत् परमात्माना व्याप्तमस्ति, तस्यैव सर्वत्र सत्ता –

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।"

6. सदाचारसंस्थापनम् – भारतीयसंस्कृतिः सदाचारं प्रशंसयति। सर्वैः सदा सदाचारः परिपालनीयः – "आचारः परमो धर्मः।"

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

मानो हि महतां धनम्

प्रिया सक्सेना
बी.ए. द्वितीय वर्ष

अस्मिन लोके जनाः सर्वदा कर्मणि सक्ताः सन्ति। ते जीवने सुखसमृद्धयर्थं कर्म भजन्ते। तेन च सुखादिकमपि लभन्ते। परन्तु कर्मणा उपार्जितं धनमेव जीवनस्य सर्वस्वभूतं नास्ति। जीवने धनेन सह मानस्य महती अपेक्षास्ति। वित्तं तु भाग्यक्रमेण आयाति याति च। परन्तु मानहानि लब्ध्वा जनाः तस्य पुनः तथा लाभं कर्त्तुं नहि प्रभवन्ति । अत एव खलु मान आवश्यकः।

मानस्तावत् खलु चित्तसमुन्नतिरस्ति। यस्य समीपे चित्तसमुन्नतिरस्ति नास्ति सः कदापि समुन्नतिं कर्तुं नहि प्रभवति। मनुस्तु एव कथयति यत् कदापि आत्मानं नहि अवमन्येत –

"नात्मानमवमन्येत पूर्वाभिरसमृद्धिभिः।
आमृत्योः श्रियमन्विच्छेन्नैनां मन्येत दुर्लभाम्॥"

महापुरुषाणां तु मान एव धनमस्ति ते कदापि धनस्य तथा चिन्तां नहि कुर्वन्ति यथा खलु मानस्य। ते सर्वदा मानमेव भजन्ते। मानहानिं कृत्वा ते कदापि न वर्तन्ते। अत एव कथयति महात्मा भर्तृहरिः –

"क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिलप्राणोऽपि कष्टां दशामापन्नोऽपि विपन्नदीधितिरितिप्राणेषु नश्यत्स्वपि।।
मत्तेभेन्द्रविभिन्न–कुम्भपिशित प्राणेषु नश्यत्स्वपि किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी।।"

महापुरुषाः कदर्थिता अपि विषमपतिता अपि मानं नहि व्यजन्ति। ते खलु कदापि पराश्रितां वृत्तिं नहि स्वीकुर्वन्ति। अत एव ते प्राणानपि तदर्थं पणन्ते। यदा भगवान् कृष्णः कुन्तीम् उपमच्छति तदा सा तं भणति यत् कृष्ण ! गत्वा युधिष्ठिरं युद्धाय प्रेरय। यतो हि सम्प्रति तेन विना तु जीवनमेव निष्फलमस्ति। यदि मानो नास्ति तदा जीवनमपि व्यर्थमेवास्ति। सा कथयति –

पराश्रिता या जीवति वासुदेव धिगस्तु ताम्।
वृत्तेः कार्पण्यलब्धाया अप्रतिष्ठैव ज्यायसी।।"

ये खलु रात्रिन्दिवं धनमेव कामयन्ते तदर्थं खलु अवमानमपि सहन्ते। परान्नं भोक्तुम् इच्छन्ति। तेऽत्र क्षुद्रा अत एव निन्दिताः मताः। तानेव उद्दिश्य कथयन्ति पण्डिताः –

"अवमानं पुरस्कृत्य मानं कृत्वा च पृष्ठतः।
स्वार्थं समुद्धरेत्प्राज्ञः स्वार्थभ्रंशो हि मूर्खता।"

ये खलु "परान्नं दुर्लभं लोके शरीरं तु पुनः पुनः" एवमुक्त्वा अहर्निशं परान्नमेव खलु कामयन्ते। ते लोभावृतमानसाः मानवाः कदापि सम्मानं लब्धु नहि शक्नुवन्ति।

गीतायां गोविन्दः क्लैब्यं निन्दति। स तत्र अर्जुनमेवम् उपदिशति यत् मानमाश्रित्य व्यवहर। त्वयि क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं मनागपि न शोभते –

"क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौबल्यं व्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप।।"

मानिनः पुरुषाः यत्र खलु मानहानिः जायते तत्र एकादिनमपि नहि तिष्ठन्ति। यत्र तेषाम् अनादरो जायते तत्र ते न निवसन्ति, वने वासं स्वीकुर्वन्ति असून्वा मुञ्चन्ति। परन्तु कस्मिन्नपि स्थले अवमताः नहि निवसन्ति। ते खलु नवनवानि दुः खानि सेवन्ते, बुभुक्षिताः तिष्ठन्ति, वस्त्ररहिता विहरन्ति परन्तु मानमङ्गीकृत्य स्वेच्छया विचरन्ति । कथितमव्यस्ति–

"वरं श्रृङ्गोत्संगाद् गुरुशिखरिणः क्वापि विषमे
पतित्वाऽयं कायः कठिनदृषदन्ते विगलितः।
वरं न्यस्तो हस्तः फणिपतिमुखे तीक्ष्णदशने
वरं वह्नौ पातस्तदपि न कृतः शीलविलयः।।"

अन्यच्च–

"सतां माने स्लाने मरणमथवा दूरसरणम्।।"

Scope of Psychology in India for Students: Career Opportunities and Emerging Trends

By

Mamta Ambujanani

Asst. Prof.

Department of Psychology

Psychology is a rapidly evolving field in India, offering diverse career opportunities across various sectors. With increasing awareness about mental health and well-being, the demand for skilled psychologists has significantly grown. For students pursuing a Master's degree in Psychology, numerous career paths are available in clinical, industrial, educational, forensic, and research domains. Here's an in-depth look at the various scopes of psychology in India.

1. Clinical Psychology

Clinical psychology is one of the most sought-after fields in India. With the rise in mental health concerns such as anxiety, depression, and stress-related disorders, clinical psychologists are in high demand.

Career Opportunities:

- Hospitals & Mental Health Clinics – Work with psychiatrists and other healthcare professionals to diagnose and treat mental health disorders.
- Private Practice – Establishing a personal clinic or collaborating with healthcare centers.
- Rehabilitation Centers – Helping individuals recover from addiction, trauma, or mental illnesses.
- NGOs & Social Welfare Organizations – Providing mental health support to underprivileged communities.

Relevant Courses & Certifications:

- M.Phil in Clinical Psychology (for RCI accreditation in India).
- Certificate programs in Cognitive Behavioral Therapy (CBT) or Dialectical Behavioral Therapy (DBT).

2. Counselling Psychology

Counselling psychology focuses on providing emotional and psychological support to individuals dealing with personal, social, or work-related challenges.

Career Opportunities:

- **Educational Institutions** – School and college counselors help students cope with academic stress and career planning.
- **Corporate Sector** – Employee wellness programs, career guidance, and stress management in companies.
- **Marriage & Family Counseling** – Assisting couples and families with relationship challenges.
- **Crisis Intervention Centers** – Support for individuals facing trauma, grief, or distress.

Relevant Courses & Certifications:

- PG Diploma in Counselling Psychology.
- Certifications in Relationship Counselling, Career Counselling, and Mindfulness Therapy.

- 3. Industrial/Organizational Psychology

- This field focuses on workplace behavior, employee performance, and organizational development.

Career Opportunities:

- **Human Resource (HR) & Talent Development** – Recruitment, training, and employee engagement.
- **Corporate Consultancy** – Helping businesses improve productivity and workplace culture.
- **Consumer Psychology & Market Research** – Understanding customer behavior for marketing strategies.
- **Leadership & Executive Coaching** – Guiding professionals in career development and decision-making.

Relevant Courses & Certifications:

- MBA in HR with a specialization in Organizational Behavior.
- Certifications in Leadership Coaching, Behavioral Analysis, and Workplace Psychology.

4. Forensic Psychology

Forensic psychologists work at the intersection of psychology and law, providing expert analysis for criminal investigations and legal cases.

Career Opportunities:

- **Law Enforcement & Crime Investigation** – Assisting police and agencies in profiling criminals.
- **Courts & Legal System** – Providing psychological assessments for legal proceedings.
- **Correctional Facilities & Rehabilitation** – Working with offenders to support rehabilitation.
- **Academic & Research Institutions** – Studying criminal behavior and publishing research.

- Relevant Courses & Certifications:
  - PG Diploma in Forensic Psychology.
  - Certifications in Criminal Profiling and Psychological Autopsy.

5. Educational Psychology

This field focuses on learning processes, student behavior, and academic interventions.

Career Opportunities:

- **School Psychologists** – Assessing learning difficulties, ADHD, and developmental disorders.
- **Curriculum Developers** – Creating effective educational programs.
- **Special Education Needs (SEN) Counselors** – Working with children with disabilities.
- **Research & Policy Development** – Studying learning patterns and improving teaching methodologies.

Relevant Courses & Certifications:

- PG Diploma in Educational Psychology.
- Certifications in Learning Disabilities, Autism Spectrum Disorder (ASD), and Child Psychology.

6. Sports Psychology

- Sports psychology focuses on enhancing the performance and mental well-being of athletes.
- Career Opportunities:

- **Professional Sports Teams & Academies** – Working with athletes to improve focus and confidence.
- **Rehabilitation & Injury Recovery Centers** – Helping athletes recover psychologically from injuries.
- **Corporate & Workplace Productivity Coaching** – Applying sports psychology principles in corporate environments.

Relevant Courses & Certifications:

- PG Diploma in Sports Psychology.
- Certifications in Performance Enhancement Psychology and Mental Coaching.

7. Health Psychology

Health psychologists study how psychological factors affect physical health and vice versa.

Career Opportunities:

- **Hospitals & Healthcare Institutions** – Supporting patients with chronic illnesses.·
- **Wellness & Lifestyle Coaching** – Helping individuals make healthy lifestyle choices.
- **Public Health Campaigns** – Creating awareness on mental health and lifestyle diseases.

Relevant Courses & Certifications:

- PG Diploma in Health Psychology.
- Certifications in Stress Management and Behavioral Medicine.

8. Neuropsychology

Neuropsychologists study the relationship between brain function and behavior.

Career Opportunities:

- **Hospitals & Neurological Centers** – Assisting in diagnosing and treating neurological disorders.
- **Cognitive Rehabilitation Centers** – Helping patients with brain injuries or memory loss.
- **Research & Development** – Studying brain-behavior relationships.

Relevant Courses & Certifications:

- **M.Phil in Neuropsychology.**
- **Certifications in Cognitive Rehabilitation Therapy.**

9. Social Psychology

Social psychologists study human interactions and behaviors in different social contexts.

Career Opportunities:

- **Media & Advertising** – Understanding consumer behavior and social trends.
- **Public Policy & Government Organizations** – Analyzing social issues and shaping policies.
- **Non-Profit & Advocacy Groups** – Working on social change initiatives.

Relevant Courses & Certifications:

- PG Diploma in Social Psychology.
- Certifications in Community Psychology and Behavioral Science.

10. Research & Academia

- Many psychology graduates choose research and teaching careers.

Career Opportunities:

- **University Professors & Lecturers** – Teaching at colleges and universities.
- **Research Scientists** – Conducting studies on human behavior and mental health.
- **Psychometric Testing & Development** – Designing psychological tests and assessments.

Relevant Courses & Certifications:

- PhD in Psychology.
- Certifications in Research Methodology and Data Analysis in Psychology.

Emerging Trends & Future Prospects

1. **AI & Psychology** – The integration of artificial intelligence in mental health apps and therapy bots.
2. **Virtual & Online Counselling** – Growth of teletherapy and mental health support via online platforms.
3. **Military &Defense Psychology** – Psychological assessments for soldiers and trauma recovery for veterans.
4. **Positive Psychology & Happiness Coaching** – A growing focus on well-being and resilience training.

Conclusion

The scope of psychology in India is expanding rapidly, offering a range of career opportunities in healthcare, education, corporate, legal, sports, and research fields. A Master's degree in Psychology equips students with diverse skills and knowledge, allowing them to pursue a career that aligns with their interests and expertise. With growing mental health awareness and technological advancements, psychology professionals have an exciting and promising future in India.

New Generation"-

Riya Mishra
B.Sc II Year

Oh! This new Generation
School and Colleges are only for recreation.
Bike and Scooty are only Transportation.
Without jeans there is no impression.
Shoes are the Centre of attraction.
Hair Style is a new generation.
Working days are like Vecations
Teachers say it is a bad situation
Oh God! This new Generation
Parents and Teachers have high expectation
Alas! It's just their imagination
For Parents there is no affection
Oh God! This new Generation
Oh God! Bring a new revolution
Stop this Circulation.
Otherwise there is no solution.
For this new Generation.

A True Human

Shambhavi Tripathi
B.A. I Semester

Let's stop judging the people and
making the differences among them.
Light up the kindness everywhere
by being honest with them.

Let's start admitting our mistake
and start believing in ourselves.
unfold the positiveness all around as
there are many reasons for happiness.

Let's begin forgiving others
and become an inspiration.
Keep learning to keep growing
Let's become a true human.

ROLE OF PROTEIN, CALCIUM, IRON IN WOMEN

Dr. Rashmi Srivastava
Department of Home Science

These days, women are giving their best to fill the nutritional requirements of their families and children with healthy foods. However, It usually gets difficult to manage your own self along with the busy schedule and so many responsibilities of home and workplace. Everyone should know that for women also nutrient-rich food is essential.

Balanced diet and a healthy diet can support your body in many ways. Whether you're looking to improve your energy and mood, combat stress, or boost fertility, what you fuel your body with can make an impact. To help explain how nutrition can impact your body. It's very important to acknowledge that every gender and age group have differing nutritional needs as a result of differences in their bodies. For example, hormonal changes associated with menstruation, childbearing, and various nutritional deficiencies. For this reason, it's important for women to include foods rich in calcium, vitamin D, vitamin B, and iron in their diet to maintain bone health and prevent anaemia. Women also tend to lose more lean muscle mass over time due to age and childbearing.

A quarter of women of reproductive age in India are undernourished, with a body mass index (BMI) of less than 18.5 kg/m (Source: NFHS 4 2015-16). It is well known that an undernourished mother inevitably gives birth to an undernourished baby, perpetuating an intergenerational cycle of under snutrition .

Proper nutrition is essential for women as maternal nutrition can have a direct impact on the health, growth and development of the nest generation. It is seen the most women these days experience problem such as hair fall, hormonal imbalance, body pain, depression and mood swings. these symptoms of PCOD can also be due to the deficiency of nutrients in a woman's body. Along with that, due to an imbalance of nutrients, signs such as fatigue, wrinkles on the face at a young age, less glow and dullness can also be seen in women. Specific nutritional deficiencies such as iron, vitamin D and vitamin B12 are more commonly seen in women.

Energy allowances range 1,900-2,200 kcal/day for adult women.
In the 2020 recommendation the RDA for protein is 0.83g/kg/day instead of 1g/kg/day (RDA 2010) and the EAR IS 0.66 g/kg/day and calcium 1000 mg/day and iron 29 mg/day (Table 2a & 2b).

Screen Time Effect on the Cognitive and Social skill of the Adolescent

Reema Yadav
(Research Scholar)
Department of Home Science

In recent years, screen time and its impacts on adolescents has received a lot of attention. This is mainly because digital gadgets are becoming more common and are being used more often in everyday life. adolescent spend engaging with screens whether through cellphones, smartphones, laptops, or video games affects their cognitive and social development, Cognitive skills are important for academic perfomance and lifelong learning. These skills include the mental processes of perception, memory, judgment, and reasoning. On the other hand, social skills, which include communication, empathy, and relationship-building, are important for maintaining healthy relationships with other and for emotional well-being.

Many studies have tried to understand the complicated connection between screen time and these developmental aspects. these studies have pointed out both the possible advantages, such as better technological literacy and access to educational content, and the disadvantages, such as shorter attention spans, lower academic performance, and impaired social interactions. It is essential to carefully evaluate how the nature and context of screen time, such as passive consumption versus active involvement, contribute to these outcomes. It is also important to consider the role that parental guidance and contextual factors play in molding teenagers' screen experiences. By examining the positive and negative effects of screen time, there is a better understanding of its role in the lives of today's adolescents. This understanding provide families, educators, and policymakers with information about effective strategies to encourage healthy digital habits and promote balanced developmental outcomes in this 10-19 age group of adolescents as per the world health organization. There is a complex interaction between screen time, cognitive skills, and social abilities, and it require the groundwork for a more sophisticated understanding of how to navigate the digital world in a way that promotes the overall development of teenagers in a constantly changing technological environment. In the recent previous review, it was found that there was a significant effect of the screen time on the cognitive and social skill of the adolescent.

India's Employment Growth

A ROBUST JOURNEY

Kavya Srivastava
Class-B.Sc I st Year (ZBC)

India has witnessed significant employment growth over the years, with the employment increased by nearly 36% adding around 170 million jobs during 2016-17 and 2022-23, India's economic trajectory demonstrates sustained job creation across key sectors. With a robust democracy, dynamic, economy and a culture that celebrates unity in diversity, India's journey towards becoming a global powerhouse continues to inspire the world .

Recent data and economic analysis challenge the notion of jobless growth in India, a concept that suggests GDP growth occurs without corresponding increases in employment. A recent report from Observer Research Foundation titled 'Bursting the Myth of Jobless Growth: Insights from data, theory and logic' explains the employment trend in India over the years to present a different story.

Some key highlights from various surveys and reports tells that India Employment in India increased by 36% (170 million jobs) between 2016-17 and 2022-23. During the same period, GDP grew at an average rate of over 6.5%

Employment data from the Reserve Bank of India's KLEMS database, which relies on surveys like the Employment and Unemployment Survey (EUS) and Periodic labour force Survey (PLFS) indicates a steady rise in employment since the 1980s.

The PLFS data from 2017-2023 also suggests that Worker Population Ratio (WPR) has increased by a percentage points or almost 26 percent during the period. Therefore, the rhetoric of joblessness" really does not hold water in terms of cross - comparison of database. India's growth has been driven by consumption which is closely tied to employment .

A rise in consumption implies that employment generation is occurring as consumption would decline if employment was predominantly in unpaid or low-wage jobs.

Employment Elasticity is a rational measure for checking the casual relation between growth and employment generation in an economy. The report's estimates, based on a linear econometric model, show that for a period 2017-23 there was a 1.11 percent increase in jobs for a percent increase in value added.

The labour - capital ratio in the economy as a whole is around 1.11 and that of services sector in 1.17 . Thus, the supply side argument that services fail to generate jobs due to their low labour intensity is not corroborated by these observations - rather it is the other way around. Hence, from both the supply and demand side. India's economic orientation is inconsistent with any from of joblessness.

In Conclusion, India's employment growth linked to its consumption - driven economic model, disproves the joblessness myth.

Resilience is accepting your new reality, even if it's less good than one you had before - Elizabeth Edwards

Yogita Tripathi
M.A. III Sem

This beautiful quote in the title by Elizabeth Edwards defines everyone's life. But one wonders what is resilience.

"I failed, I failed again, I can't do this, I am not made for this, it is certainly not my cup of tea" etc etc.., and then one day you yourself drink the tea of success in that same cup well this is what resilience is. When one cries in difficulties but never stops trying and continues with what he has, this passion of going on and bouncing back with your everything is resilience. As humans we all face fluctuations but one who focuses on what he has instead of what he had, one who accepts the changes to be the change is what defines resilience.

Well, as an Indian this element runs in our blood. India's freedom was no bed of roses. We lost many gems and we are forever indebted to them. It was our nations determination and resilience that we our standing on world's pedestal independent.

30 January 2020 was the day which was the beginning of the closing world. The covid-19 cases from the three towns of kerala were the alarms of the shutters which later closed everything including breath of lakhs of people round the globe. Even the earth felt short. In that state of pandemonium we stood stronger than ever and sustained.

Harmanpreet Singh the captain of Indian Hockey and his team ended the drough of forty one years when they won the bronze at Tokyo Olympics. They must have felt of giving up but their want was much stronger than their losses and result of their efforts was, that they adorned India with such a prestige.

After winning in a row India lost to New Zealand in 2019 World Cup semifinals. Millions of hearts broke but we went to pray for 2023. It was even more harrowing as India was outclassed by Australians. Players cried and with them whole nation cried. We were mocked as chokers. And then pages turned, what we witnessed in B arbados is history. Rohit and team personified determination dedication and passion and thirteen years of wait finally ended with a glorious win.

In contrast with these historic examples here is a common man with uncommon achievement. A man with amputated past but a full-fledged future. A man for whom differently abled is an ordinary attachment because he is wonderfully abled. A man who makes me think in my lows to get up and move because he never stopped. I am talking about IAS Suraj Tiwari who got 917 rank, a paragon of resilience from Mainpuri district of U.P. Despite going through physical casualties because of an unfortunate accident he achieved implausible. He proves that resilience is a mental condition in which he certainly mastered.

Adversity is part and parcel of our lives but with our perseverance and will power we can put in the shade the biggest obstacles. Twenty-three old Nancy Tyagi stole the show and compelled us to watch her even when she was surrounded with the beauties of the world. Her journey from the small village of Barnawa to the carpet of Cannes was filled with many tribulations to such an extent that she often had suicidal thoughts but nevertheless she proved her mettle.

Being an Indian we never forget our neighbours so tighten up your seatbelts as we are going all the way to Pakistan. There is lady named Muniba Mazari also known as Iron lady of Pakistan. She is Baloch born on 3 March 1987 got married at 18. Hell broke loose when she met an accident and it was a terrible one. She was physically maimed but not mentally which led her to be the Pakistan's first model and anchor on wheelchair.

As a student of literature I find Paradise Lost to be the most beautiful creation but it amazes me that person who wrote this work was actually blind when he created such a masterpiece. Milton accepted the superficial darkness because inside him it was all lightning. He became flexible with his adversity which made him to prosper.

"Awake, arise, or be forever fallen" says the Satan. But I believe awake, arise, but why to fall when you can fly, Your luck can lack but your hardwork will always be fruitful. Hence to sum up don't let your difficulties surpass you, just surpass the difficulties. Remember why you started and you will reach. Be like a phoenix rising from its own ashes, flying high.

IAS Suraj Tiwari

Harmanpreet Singh

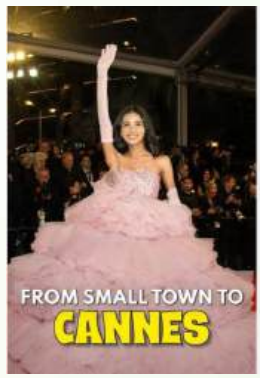

Nancy Tyagi

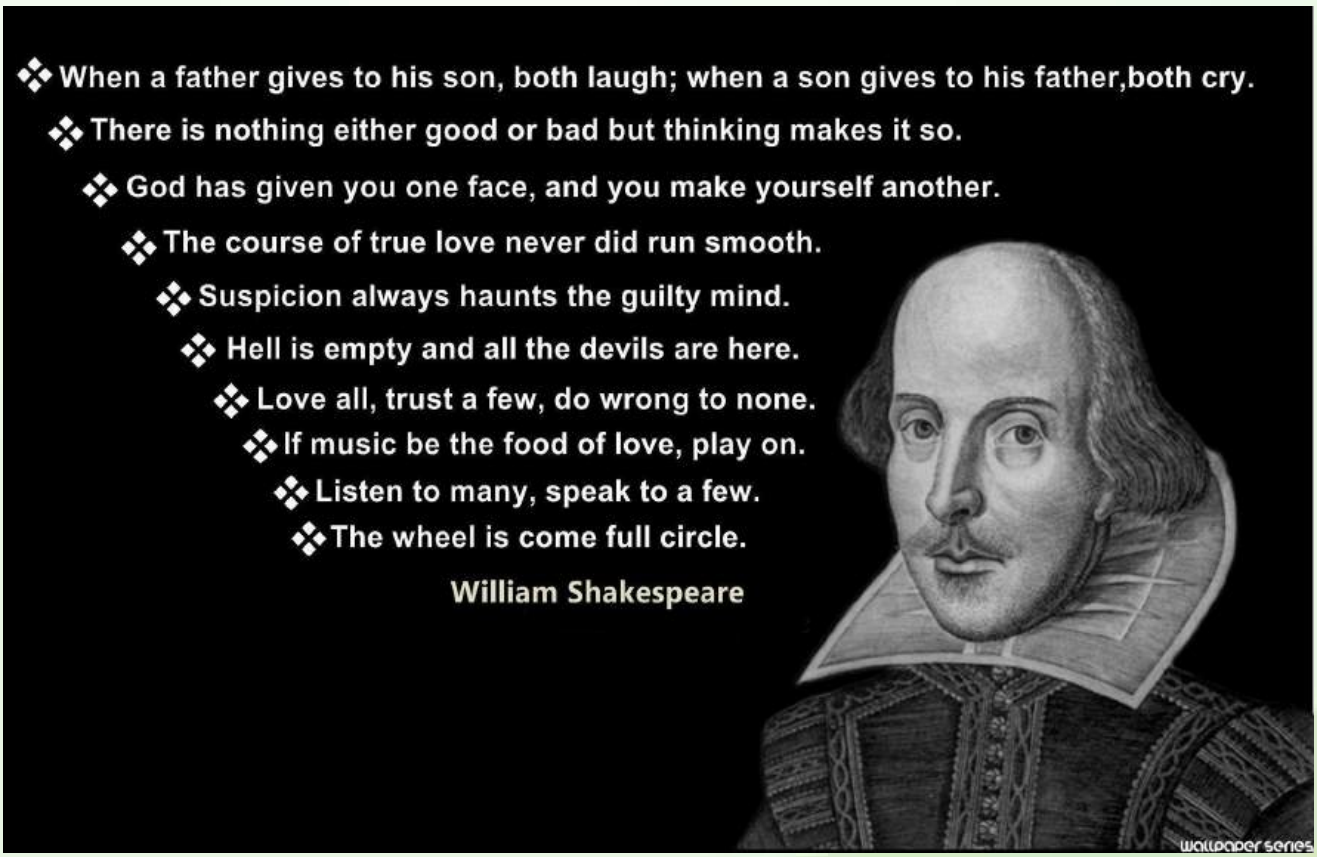

The Bond Between a Father and Daughter

Deepshikha Saini
BA-3yera 5sem

A Relationship of Strength and Love- the relationship between a father and daughter is one of the most cherished and unique bonds in life. Rooted in unconditional love, mutual respect, and enduring support, this connection shapes the lives of both individuals in profound ways. A father's influence on his daughter is unlike any other, leaving a lasting impression on her self-esteem, confidence, and view of the world.

A Foundation of Trust and Support

From the moment a daughter is born, a father's protective instincts come into play. As she grows, he become her first hero, someone she trusts implicitly. This trust forms the foundation of their relationship, helping her feel secure and valued. A father's unwavering support empowers a daughter to take risks, pursue her dreams, and develop a sense of independence.

A father's words and actions teach his daughter about integrity, resilience, and kindness. He sets an example for how men should treat women, influencing her future relationships and shaping her expectations for respect and love.

While traditionally seen as providers and protectors, fathers also play an essential role in nurturing their daughters emotionally. Open communication, shared moments of laughter, and honest conversations create a bond that deepens over time. Fathers who express their emotions openly teach their daughters that vulnerability is a strength, not a weakness.

Daughters often turn to their father for guidance, reassurance, and a listening ear. Whether it's a school dilemma, career decision, or personal struggle, a father's advice can provide clarity and comfort.

Challenges and Growth

Like any relationship, the father-daughter bond is not without challenges. Misunderstandings, generational gaps, or differing perspectives can create friction.

However, these challenges also offer opportunities for growth. Navigating conflicts with patience and mutual understanding strengthens the relationship, fostering a deeper connection.

As daughters grow older and build liver of their own , the relationship with their father evolves. the dynamics may shift, but the love and respect remain constant. Fathers become cheerleaders, celebrating their daughters' achievements and providing wisdom through life's ups and downs.

A Lifelong Impact

The impact of a father-daughter relationship extends far beyond childhood. Studies show that daughters with strong, positive relationships with their fathers are more likely to have higher self-esteem, healthier relationships, and a greater sense of self-worth.

For father, the relationship with their daughters often brings out their gentler, nurturing side. it allows them to experience the joy of unconditional love and the pride of watching their daughter grow into a confident, capable individual.

Celebrating the Bond

The father-daughter relationship is a testament to the beauty of unconditional love and mutual respect. It is a bond that deserves to be nurtured and celebrated. Whether it's through shared traditions, quality time, or heartfelt conversations, the connection between a father and daughter is one of life's greatest treasures.

As the poet George Eliot once said, " A father's love is as steadfast as a mountain, and a daughter's love for her father is as enduring as the stars." This timeless bond is a reminder of the strength, support, and love that a father and daughter bring to each other's lives.

Importance of Education

Lubna Hashim
BA-IIIsem

What Can Be Considered as Good Education?

To put it in simple terms, education is the process of acquiring knowledge and skills, building morals, values, and developing habits. Education dose not just consist of these. The process of education can be said to be complete only if you are able to put the knowledge you are able to put the knowledge you acquire to good use. So education is not just gaining knowledge and gathering information but developing the ability to apply what you have learned to daily life scenarios.

Is there good education and bad education ?

This is a question that has been asked for years now. Good education works towards the goal of preparing and empowering individuals to lead a productive life that definitely impacts the economic growth of the society and country they are a part of. Good education is meant to stimulate logical and critical thinking in individuals. Good education does not mean scoring high marks in your assessments. People usually perceive the notion that schooling and scoring good marks in your assessments. People usually perceive the notion that schooling and scoring good marks in examinations is education. Education is beyond all that. Schooling alone does not lead to learning. Getting a good education depends on a lot factors, including the environment or society you are in. the social and economic background and the ability of the individual to understand, analyse and act according to the need of the hour.

It is a fact that quality education and skill development comes from strong education systems. Having trained and empathetic teachers is one of the prerequisites to availing good education. Education includes learning about different cultures, religions, communities, economic and social standards and grooming oneself to become a socially responsible individual. With the advancement of technology, teachers have been taken for granted because most children nowadays have their own mobile phones and internet access with which they can find answers to any question, sometimes question their parents, siblings, or teacher cannot explain. This is a huge drawback in the process of building a healthy society.

The Power of Being Educated

Being educated often makes you feel powerful. Why is that ?

Imagine you did not know how to use a mobile phone, a laptop, a match stick or a bulb. What is the use of possessing something that you do not know how to use? In the beginning of time, it was found out that hitting two rocks together produces sparks that can start a fine. Every little thing you come across can teach you something or the other. The more you know, the more powerful you become.

Knowing how to drive a car would come in handy when you have to go somewhere with more people travelling with you. Knowing how to fix a pipe can help you when someone accidentally breaks off a pipe and water keeps flowing. Likewise, everything you learn will help you in one or the other way. Therefore, good education can be defined as the general and specific knowledge people gain by being taugh or by experience.

Knowledge and education is power. Education enables individuals. Enables them to innovate, understand, adapt and overcome. Everything we learn helps us in life in one way or the other. It helps make our life convenient and easy. Good education is basically the knowledge that gives people perspective and information about things which can range from being simple as fixing a water pipe to building a rocket destined for moon. When we are education, we can adapt to each and every aspect of life better and it also helps us overcome many hurdle of life and gives perspective about a lot things such as finance, planning, etc. All this can , make any individual feel powerful because there remains nothing in life that they cannot tackle.

How Can Your Education Benefit Your Society ?

Every nation's integral part is its society, and the growth and development of the same are dependent upon the individuals, which in turn helps the social and economic progress of the nation. The education system has been evolving from the very first day and now it has several modes and means of the same. It is quite correct to say that any amount or money spent on being educated never goes waste. The more you learn, the more you will be able to grow in life.

Every aspect of education, in one way or another, will help you in your life.

When an individual is educated, they can significantly contribute to the growth of society and the nation, much more than a wealthy person. Education helps develop character, personality, and social behavior. It Shapes the way people think and act, and ultimately, it influences how a society will grow. This highlights the importance of education in society, as it plays a crucial role in creating a more informed, responsible, and progressive community.

For this to happen, it is essential that all people understand the importance of education and its impact on personal and societal growth.

Conclusion

"Education is not the learning of facts, but the training of the mind to think" says Albert Einstein. Gathering a load of information is easily possible in the present age of the internet and technology. Being able to answer every question does not guarantee or prepare you for a life where experience and knowledge is accounted for.

Cyber Security in a Digital World: Are We Prepared for the Next Threat ?

Divyanshi Nigam
V semester

In today's hyper-connected world, the rapid evolution of technology has transformed the way we live, work, and interact. While this digital revolution has brought unparalleled convenience and innovation, it has also opened the door to unprecedented cyber security threats. From ransom ware attacks on critical infrastructure to sophisticated phishing schemes targeting individuals and organizations, the question looms: are we truly prepared for the next wave of cyber threats?

The Growing Threat Landscape:

The increasing reliance on interconnected systems has exponentially expanded the attack surface for cybercriminals. Key factors contributing to the surge in cyber security threats include:

1. Expanding Internet of Things(IoT): With billions of devices connected to the internet, from smart appliances to industrial sensors, IoT devices often lack robust security measures, making them prime targets for exploitation.

2. Advanced Persistent Threats (APTs): State-sponsored actors and organized cybercriminal groups are deploying sophisticated tactics, leveraging artificial intelligence (AI) and machine learning to breach networks and evade detection.

3. Data Breaches and Identity Theft: As data becomes a critical asset, cybercriminals target sensitive information, including personal details, financial records, and intellectual property, for financial gain or strategic advantage.

4. Critical Infrastructure Vulnerabilities: Healthcare, energy, transportation, and financial systems are increasingly digitized, making them vulnerable to attacks that could disrupt essential services or endanger lives.

5. Ransom ware Epidemic: High-profile ransom ware attacks have underscored the growing threat to businesses, governments, and individuals. The demand for crypto currency payments has made it easier for attackers to evade law enforcement.

Are Governments and Organizations Prepared ?

Governments and organizations worldwide face immense pressure to fortify their defenses against these evolving threats. However, challenges persist:

Skills Gap: A significant shortage of skilled cyber security professionals limits the ability to respond effectively to threats.

Legacy Systems: Many institutions rely on outdated technologies that are difficult to secure and integrate with modern solutions.
Global Coordination: Cyber threats often transcend national borders, making it imperative for nations to collaborate on intelligence sharing and policy standardization.

Strengthening Cyber Security: A Way Forward

To mitigate the risks and stay ahead of cybercriminals, governments must adopt a multi-faceted approach;
1. Investing in Cyber Resilience: Allocating resources to modernize IT infrastructure, implement advanced threat detection systems, and regularly update software can reduce vulnerabilities.
2. Public-Private Partnerships: Collaboration between governments and private sector entities fosters information sharing and joint initiatives to combat cybercrime.
3. Promoting Cyber Hygiene: Public awareness campaigns and education programs can empower individuals and organizations to adopt better cyber security practices, such as using strong passwords and enabling multi-factor authentication.
4. Regulatory Frameworks: Governments must establish clear and enforceable cyber security regulations, including standards for IoT security and penalties for non-compliance.
5. Global Cooperation: Cyber security is a shared responsibility. International treaties and agreements can facilitate coordinated responses to cross-border threats and reduce safe havens for cybercriminals.
6. AI-Driven Defense: Leveraging artificial intelligence for threat detection and response enables faster identification and mitigation of risks.

Conclusion

As our dependence on digital systems continues to grow, so too will the threats to cyber security. The next major cyber attack is not a question of "if" but "when." Proactive measures, robust partnerships, and a commitment to continuous improvement are essential to ensure that governments, organizations, and individuals are prepared for the challenges ahead. In a world where the stakes have never been higher, investing in cyber security is no longer an option - it is a necessity.

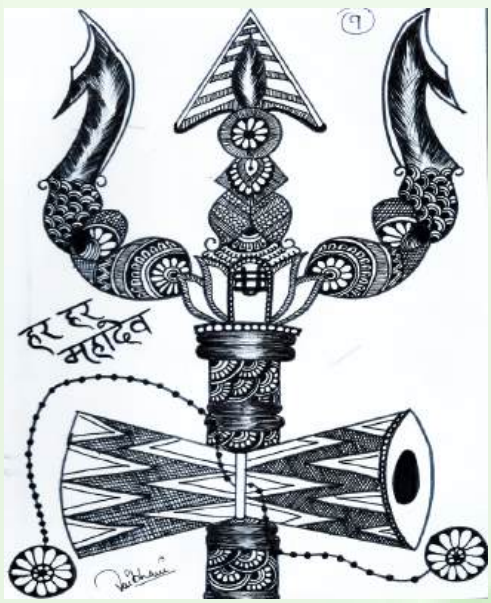

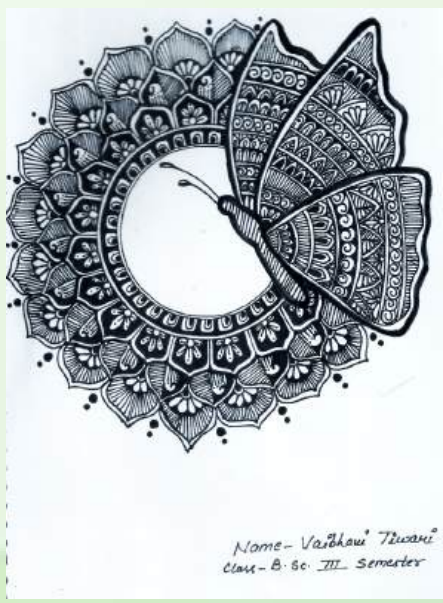

Smile

Komal Jaiswal
II year 3rd sem

- Smile is the thing which is always called for in every situation.
- If you are sad, smile to the reason behind your sadness.
- If someone is more beautiful or intelligent then you smile to his/her aptness.
- If you are feeling low or empty from inside smile to that emptiness.
- If you are not well then smile for your wellness.
- If someone is in misery, smile to God and pray for their happiness.
- If you have faced failure in love then Smile to your lovers loveline.
- Because smile is to cure every pain.
- Smile is like an umbrella in sadness and rain.
- Smile is for removing every sorrowful strain.
- Smile is imperative for being more qualitative.

Education is The Key to Success

Ummey Hani
MA-II year 3rd sem

The Key to freedom.
The passport to success.
The inheritance of no Stress.

The pillar of a kingdom, Education is the best property to have.
It is the only assurance of a better future.
Thank you God for giving us education.

Because that is the cause of celebration.
My mama told me education is the best .

That it will make to be a relevant person in life.
Now I know what she meant .
I have overcome my discrimination by my education.

Education is important in human life.
It will cost you but it will never lost you.
Friends may betray but education will never betray
Value it in yours life.

Nothing is Impossible

"Remember nothing is impossible for you,
You can do, What you never thought,
This life is one and time is also limited so live yours self rather than waste it for others."

"Nothing is Impossible the word,
It self says
"I m' possible."

Never Give Up

"If I made a mistake then, I would have to retake, and do it once again even feel the Pain.

But there also lies a prize and that made me realise that even if I was to Fail,
It would be a learning trail"

If I hope for medals and a cup,
I can't just rely on luck,
I must do hard work, to show the world my worth.

That's the essence of never giving up."

Time is Money

Time is slow
When you wait

Time is Fast
When you're late

Time is Short
When you're happy

Time is endless
When you're in Pain

Time is a Currency
Be careful How you spent it.

"Time is more Valuable than money."

Emerging Tech Trends - "AI"

Vaishnavi Pandey
BA-Ist

The rapid race of technological innovation continues to reshape industries and everyday life. Among the most transformative trends in the current tech landscape are Artificial Intelligence (AI). blockchain, cybersecurity and other cutting-edge technologies. These innovation not only drive business growth but also present new challenges and opportunities across sectors. Here's an expiration of these key energing tech trends.

Artificial Intelligence (AI):

AI is arguably the most talked- about technology of the 21st century, and its influence spans a wide range of fields, including healthcare, finance, education, and entertainment. Advances in machine leaning (ML), natural language processing (NLP), and computer vision are making AI more powerful and accessible.

- **Key Developments**

1. Generative AI: Tools like open AI's GPI models, Google's Bard and image generators like DALL. E have revolutionized creativity and content generation. They can now generate text, images and even music based on prompts, reducing the need for human input and accelerating workflow.

2. AI in heath care: AI's ability to analyze vast amounts of data has made it a game-changer in healthcare. Predictive analytics, personalized medicine and diagnostics powered by AI help clinicians make better decisions and improve patient outcomes.

3. AI in Automation: Robotic Process Automation (RPA) powered by AI is enhancing officiency in industries like manufacturing, logistics and customer service by automating repetitive tasks.

4. Ethical AI: As AI becomes more integrated into society, there are concerns about fairness, bias and transparency in AI models. Developing ethical AI frameworks will be crucial.

5. AI as a service: Cloud-based AI services are expected to become mainstream, enabling even small business to leverage AI without significant upfront costs.

6. AI in cyber security: AI is playing an important role in the detection and prevention of cyber threats. Machine learning models are being used to identify patterns of suspicious behaviour, automate responses, and predict future attacks.

7. AI in 5G Networks: The rollout of 5G Technology is set to revolutionize industries by offering ultra-fast data speeds and low latency. This will enable innovations in IoT, autonomous vehicles, and smart cities, supporting a new wave of connected devices.

8. AI in Edge Computing: By processing data closer to where it is generated (at the 'edge' of the network). edge computing reduces latency, minimizes bandwidth requirements. and enhances real-time decision-making. This is critical for applications like autonomous driving and smart manufacturing.

Conclusion:

The convergence of these emerging technologies promises a future marked by greater automation, enhanced connectivity, and innovative solutions to global challenges. However as these technologies evolve, businesses, and individuals. must be mindful of ethical considerations, regulatory compliance, and the potential risks associated with rapid technological change.

Whether it's the transformative capabilities of AI. The decentralization promised by blockchain, the need for robust cybersecurity, all the other ground breaking technologies on the horizon, the next few years will see these trends reshape industries and society as a whole. For organizations, staying informed and agile will be key to harnessing the full potential of these disruptive technologies

Mahakumbh: A Symbol of India's Rich Heritage and Spirituality

Sweta Sharma
English Department
Research Scholar

The Mahakumbh Mela is one of the most profound symbols of India's rich heritage and spiritual legacy. It is one of the largest peaceful gatherings on Earth, drawing millions of pilgrims, sadhus, and spiritual seekers for a ritual bath in the holy river. It is a vibrant festival that showcases India's cultural heritage through traditional music, dance, art, and craftsmanship. It's a blend of cultures, traditions, and languages, where people from diverse backgrounds come together. The Mahakumbh Mela is a living heritage that binds generations through shared beliefs and traditions. The Mela stands as a symbol of devotion, faith, and cultural heritage, playing a crucial role in shaping the spiritual fabric of India. It is held every twelve years at the sacred confluence of the Ganga, Yamuna, and the mythical Saraswati rivers, this grand event is much more than a religious gathering.

Origin of Mahakumbh

The origin of the mahakumbh is linked to the mythological tale of the Samudra Manthan, the churning of the ocean by gods and demons to obtain the nectar of immortality. According to Hindu tradition, drops of this divine nectar fell at four locations: Prayagraj, Haridwar, Ujjain, and Nashik. These places became sacred, and the Mahakumbh Mela has since been celebrated as a mark of this divine occurrence. It is a unique blend of faith, mythology, and scientific principles, offering a deeper appreciation of the universe's influence on human life.

Spiritual Significance

The mahakumbh is a beacon of spiritual awakening. Devotees believe that bathing in the sacred waters during the Kumbh cleanses the soul of sense and paves the way for liberation(moksha). Astrologically, whenever the planet Jupiter enters the astrological sign of Taurus when simultaneously the sun and the moon are in Capricorn, a powerful supercharge of positive charge happens at Prayag. The whole area is energized- the water, the air, and the entire atmosphere become charged with that force. Pilgrims from all corners of the world gather at the confluence, confronting harsh weather and long journeys, driven by a rigid faith. This act of purification and devotion transcends religious and social boundaries, promotes a deep sense of spiritual growth, health, and emotional strength, and puts you on the path of moksha.

Cultural Spectacular

The Mahakumbh is also a cultural spectacle, bringing together a kaleidoscope of India's traditions and philosophies. It is a meeting ground for saints, ascetics, scholars, and spiritual seekers. The sight of Naga sadhus, their bodies covered in ash and chanting ancient mantras, creates a surreal and captivating atmosphere.

Alongside these spiritual rituals, religious discourse, cultural performances, and exhibitions add vibrancy to the event, making it a true reflection of India's diversity and artistic heritage. In a nation known for its diversity, the Mahakumbh stands out as a powerful symbol of unity. It attracts people from various regions, languages, and social strata, all united in their shared reverence for the sacred occasion. The festival exemplifies the ability of India to harmonize differences and celebrate its collective spiritual identity.

Conclusion

The mahakumbh is not just a religious gathering; it is a living embodiment of India's cultural and spiritual ethos. It serves as a reminder of the timeless values of faith, tolerance, and unity that define the nation. Rooted in ancient Vedic and Puranic texts, it serves as a bridge between past and present, highlighting India's enduring connection to its spiritual and cultural identity. As millions converge to celebrate this festival of devotion and heritage, the mahakumbh continues to inspire awe and reverence, standing as a testament to India's enduring spiritual legacy. The grand congregation also reflects the communal spirit of cooperation, harmony, and respect for diversity, which are central to Indian society.

"From 'Rasa' to 'Rasayana': Understanding the Chemical Foundations of Ancient Indian Rejuvenation Sciences"

Dr. Mishu Singh
Associate Professor,
Department of Chemistry

The fascinating journey from 'Rasa' to 'Rasayana' in ancient Indian rejuvenation sciences is both an exploration of spiritual wisdom and a convergence with early chemical understandings of human health and longevity. These terms, which are deeply embedded in the Vedic traditions, point toward an integrated approach to health, vitality, and the process of aging. While modern science has only recently begun to appreciate the complexities of holistic well-being, the ancient Indian systems of medicine, particularly Ayurveda, have long included chemical elements in their medicinal practices and healing rituals. The practice of alchemy, or Rasa Shastra, forms the cornerstone of these ancient traditions. Understanding how alchemy, 'Rasa', and 'Rasayana' (rejuvenation) coalesce can offer modern-day scientists and practitioners a more comprehensive understanding of rejuvenation, longevity, and wellness.

The Concept of 'Rasa' in Ancient Indian Traditions

In ancient Indian traditions, particularly within the framework of Ayurveda, the term 'Rasa' has a multidimensional significance. It is most commonly interpreted as the essence or sap of life, particularly in reference to the vital fluids or the 'nectar' of living organisms. In this context, 'Rasa' is the first stage in the transformation of food into energy, which is believed to be crucial for the sustenance of life itself. From an Ayurvedic perspective, 'Rasa' refers to the bodily fluid derived from digested food, which then nourishes the body's tissues, replenishes the blood, and ultimately sustains the life force or Prana. It is understood that the quality of 'Rasa' determines one's overall health and well-being. Therefore, the medical practitioners of ancient India placed immense value on ensuring that the 'Rasa' remained pure, balanced, and in harmony with the natural processes of the body. However, 'Rasa' is also a term deeply intertwined with the practice of alchemy, or Rasa Shastra. In this context, 'Rasa' is seen as the fundamental material substance that holds the potential for transmutation and transformation. Ancient Indian alchemists viewed 'Rasa' as the root of all metals and minerals, and by manipulating these substances, they believed it was possible to create medicinal compounds with extraordinary properties.

The Emergence of 'Rasa Shastra' (Alchemy)

'Rasa Shastra' is an ancient Indian tradition that sought to understand the chemical properties of metals and minerals to prepare life-enhancing elixirs and medicinal formulations. The word Rasa in Rasa Shastra refers to mercury and other essential substances that can be manipulated chemically to produce medicines that purportedly cure diseases, slow aging, and prolong life. This tradition is thought to have been practiced in India as far back as the first century CE, and it shares similarities with other alchemical traditions around the world, such as those of Ancient Egypt, China, and Greece. Mercury, known as Rasa in Sanskrit, was a key substance used in these alchemical processes. Ancient Indian alchemists developed complex techniques to purify mercury and combine it with other substances, including gold, silver, and herbal extracts, to create powerful medicinal compounds. These concoctions were believed to have the power to rejuvenate the body, improve vitality, and even reverse the aging process. The concept of rejuvenation through alchemy is deeply tied to the belief in Rasayana, which seeks to restore the youthful essence of the body and mind.

The Role of 'Rasayana' in Rejuvenation

'Rasayana' is a Sanskrit term meaning "path of essence" or "path of the elixir." It refers to the ancient practice of rejuvenation, which is a vital part of the Ayurvedic system of medicine. The primary goal of Rasayana therapy is to enhance longevity, improve vitality, strengthen immunity, and slow down the aging process. Rasayana is seen not just as a set of medicinal formulations but as a philosophy for living, emphasizing the cultivation of balance in mind, body, and spirit.

According to Ayurvedic texts, Rasayana therapies are designed to nourish the body and improve its metabolic functions. In ancient India, the Rasayana system included various treatments such as herbal preparations, mineral compounds, detoxification practices, and even specific lifestyle routines. The rejuvenating effects were believed to result from purifying the body's 'Rasa' and fortifying it with essential nutrients and vital energies. Herbs such as Amla (Indian gooseberry), Ashwagandha (Withania somnifera), and Brahmi (Bacopa monnieri) have been long celebrated in Rasayana practices for their powerful rejuvenating properties. In ancient texts like the Charaka Samhita and the Sushruta Samhita, Rasayana is described as both a medicinal treatment and a spiritual discipline. These texts outline numerous Rasayana drugs and therapies meant to balance the body's energies, improve the function of internal organs, and create a sense of well-being and vitality.

The Intersection of Alchemy and Rasayana

The practices of Rasa Shastra and Rasayana are intimately connected. Alchemical processes focused on purifying metals and mercury (rasa) were seen as the primary way to create potent Rasayana remedies. In this sense, alchemy and Rasayana formed a symbiotic relationship, with alchemists working to refine and transmute materials to generate life-enhancing substances. Alchemical preparations like Rasa Bhairava, Rasa Sindura, and Rasa Kalpana are known to have been used in Rasayana therapies. These preparations were intended to treat ailments, enhance vitality, and even prolong life. One notable example from the alchemical tradition is the use of mercury amalgams combined with gold or silver to create powerful elixirs. The idea of transforming base metals into more refined substances was linked to the belief that one could transform and purify the body and spirit as well. In the process of Rasa Shastra, metals and minerals were subjected to a series of purification rituals, including heating, grinding, and combining them with medicinal herbs. The resulting compounds were then used for various therapeutic purposes, with rejuvenation being a central theme. This connection between alchemy and rejuvenation illustrates how ancient Indian practitioners sought to bridge the material and spiritual realms, believing that the body could be both physically and metaphysically transformed.

Modern Perspectives on Ancient Practices: A Chemical Exploration

In the modern world, the practice of alchemy is often regarded with skepticism. However, the fundamental principles behind ancient Indian alchemy and Rasayana are starting to find validation in contemporary scientific research. For example, modern pharmacology has begun to explore the healing potential of herbs such as Amla, Ashwagandha, and Brahmi, all of which have been used in Rasayana preparations for centuries. Moreover, the notion of rejuvenation through the regulation of bodily fluids is not so far removed from modern concepts of health. In biochemistry, the human body is understood as a dynamic system of fluid balance, and many rejuvenation treatments today focus on optimizing these biological systems. Whether through the regulation of hormones, enzymes, or the revitalization of cells through antioxidants, contemporary science is beginning to mirror the ancient wisdom embedded in Rasayana practices.

One example is the increasing interest in telomeres, the protective caps on the ends of chromosomes, which play a crucial role in aging. Modern research has shown that preserving telomere length may be key to slowing down the aging process. This is strikingly similar to the ancient concept of rejuvenation, wherein the body's life force (Rasa) and vital energies are preserved and renewed. Furthermore, modern medicine has begun to acknowledge the importance of holistic health practices, incorporating stress reduction, balanced nutrition, and mental well-being — all key components of Rasayana philosophy. The idea that rejuvenation involves more than just the physical body, but also the mental and spiritual spheres, is an idea that has been passed down through centuries, and its relevance today is more pronounced than ever.

The transition from 'Rasa' to 'Rasayana' in ancient Indian rejuvenation sciences reflects an intricate understanding of chemistry, biology, and spirituality that sought to transcend the limitations of the human body. While the practice of alchemy, particularly Rasa Shastra, has largely been relegated to the realm of myth and folklore in the modern world, it offers valuable insights into the early intersections of science and healing. Modern biochemistry and pharmacology are beginning to validate many of the concepts that ancient alchemists and Ayurvedic practitioners knew intuitively: that health is a holistic, interconnected system,

that rejuvenation is possible through both external remedies and internal balance, and that transformation—whether of materials or the body—can lead to greater vitality and well-being. By revisiting and exploring the ancient practices of alchemy and Rasayana, modern scientists and practitioners may not only uncover lost knowledge but also gain new insights into the pursuit of health, longevity, and a balanced life. The alchemical traditions of ancient India remind us that the journey toward rejuvenation is not merely a physical pursuit but a deeper, more holistic path that requires nurturing both body and mind.

Behavioral Finance and Financial Literacy: The Psychology Behind Money Management

Prince Kumar
Research Scholar
Department of Commerce

When we talk about financial literacy, we usually mean things like making a budget, saving money, spending, and handling debt. But one important but often ignored part of financial knowledge is understanding the psychology behind the choices we make with our money. Here's where behavioral finance comes in. This is a new area that looks at how feelings and psychological biases affect how people handle money.

Even though many people know a lot about money, they still have trouble handling it well because of cognitive flaws, making decisions based on emotions, and not being able to control themselves. People can make better financial decisions and avoid
common mistakes if they understand these psychological factors.

I. What is Behavioral Finance?

Behavioral finance is a field of finance that mixes psychology and economics to explain why people often make irrational financial choices. It challenges the standard
belief that people always act rationally and in their best financial interest. Instead, it recognizes that human emotions, biases, and heuristics (mental shortcuts) play a major role in shaping financial behaviors.

II. Why is Behavioral Finance Important for Financial Literacy?

While financial literacy equips people with information, behavioral finance empowers them to apply that knowledge wisely. Even well-informed people can make bad financial choices due to mental traps such as:

1. **Emotional Spending:** Buying things impulsively based on feelings rather than needs.
2. **Overconfidence Bias:** Overestimating one's financial understanding and taking unnecessary risks.
3. **Herd Mentality:** Following the crowd without conducting personal study, leading to financial bubbles.
4. **Loss Aversion:** Fear of losing money, which often stops people from taking calculated chances.
5. **Present Bias:** Preferring instant satisfaction over long-term financial planning.

III. Common Behavioral Biases That Affect Financial Decisions

Anchoring Bias:

- **P**eople tend to rely heavily on the first piece of information they receive (the "anchor") when making financial decisions.
- Example: Seeing a high initial price tag makes a discounted price seem like a bargain, even if it's still expensive.
- Status Quo Bias:
- A tendency to stick with the current financial situation instead of making beneficial changes.
- Example: Keeping money in a low-interest savings account instead of
- investing it for better returns.
- Mental Accounting:

- Treating money differently based on its source or purpose.
- Example: Spending a bonus on luxury items instead of using it for savings.
- Confirmation Bias:
- Seeking out information that supports one's existing beliefs and ignoring contradictory data.
- Example: Investing in stocks based only on positive reviews while disregarding potential risks.
- Endowment Effect:
- Overvaluing something simply because one owns it.
- Example: Holding onto losing investments for too long due to emotional attachment.
- IV. How to Overcome Behavioral Biases and Improve Financial Literacy
- Recognizing and managing behavioral biases is essential to becoming financially
- literate in the truest sense. Some strategies to overcome these biases include:
- Set Clear Financial Goals:
- Having well-defined short-term and long-term financial goals can help counter emotional decision-making and impulse spending.
- Automate Financial Decisions:
- Automatic savings and investments reduce the temptation to spend impulsively and help maintain financial discipline.

Diversify Investments:

Avoid putting all your money into a single investment based on emotional attachment; diversification helps mitigate risks.

Educate Yourself Continuously:

Regularly updating financial knowledge helps in making rational choices based on facts rather than emotions.

Seek Professional Advice:

Financial advisors can provide unbiased opinions and help navigate complex financial decisions.

V. Why Behavioral Finance Deserves More Attention

The increasing complexity of financial products and the rise of digital financial platforms have made behavioral finance more relevant than ever. With targeted advertisements and easy access to credit, people are more prone to impulsive financial decisions. By incorporating behavioral finance concepts into financial literacy programs, individuals can gain a deeper understanding of their spending and saving habits, leading to better financial health and long-term wealth accumulation.

Conclusion

Financial literacy is not just about numbers and financial jargon; it is also about understanding **how our** minds work when it comes to money. By combining knowledge with self-awareness and discipline, individuals can take control of their financial future and avoid common behavioral pitfalls. The key to true financial empowerment lies not only in knowing what to do but also in developing the right mindset to act wisely.

The silent language of the heart: Unlocking the power of sign language

Anshika Shukla
B.Sc. Istyear (PCM)

As we navigate the world, we often take for granted, the gift of communication But for the deaf and hard of hearing community, sign language is more than just a means of expression -it's a Life-Line.

Sign language is a vibrant, visual language that convey emotions, thoughts, and experiences through intricate handshakes, facial expressions and body language. It's a language that requires empathy, understanding and connection.

By sign language, we not only gain a new skill but also bridge The gap between the deaf and hearing worlds. We open doors to new friendships, new experiences, and a deeper understanding of the human spirit.
So let's take the first step. Let's learn to sign, to communicate, and to connect .Let's show the world that we care, that we're willing to listen, and that we value the beauty of silence.

Start with a simple "hello" today and unlock a world of possibilities tomorrow.

" The Weight of Expectations"

Fehmina Naz
MA-II year

A backpack slung, a syllabus in hand. The weight of grades a constant demand. Ambition's fire, a flickering flame, But fear of failure, a whispered name.

Professors lecture, knowledge descends, But anxieties linger, no peaceful amends. The pressure mounts, a crushing decree, To excel, to succeed, eternally.

Yet whispers arise of passions untold, of dreams dormant, stories yet untold. A gentle nudge, to break from the mold, To find your own path, brave and bold.

For in this chaos, a quiet truth resides, your journey's unique, nowhere to hide. Embrace the unknown, let your spirit soar, and find your own rhythm, forevermore.

Nature

Shreya Shukla
MA-English-II sem

I am a human, I'm tired of city life,
I am going to nature to find peace.

Long and Shady tress, and that cool Breeze,
Made me relax and calm, and found tree of palm.

The plain ground, with flora and fauna,
and Silence all over the area, made me feel peace.

The cloud were as light as air, and blew with the wind,
And the Sun set, was the day's end.

Terracotta: A Sustainable Art Form

Smita Dubey
Research Scholar,

Terracotta, derived from the Italian term meaning "baked earth," is a historic material experiencing renewed appreciation in modern art and design. Known for its aesthetic appeal and eco-friendly qualities, terracotta has become a preferred medium for artists and architects seeking sustainable solutions. This article highlights its environmental advantages, cultural significance, and applications in contemporary art.

Environmental Benefits

Terracotta is crafted from natural clay, an abundant and easily sourced material. Its production process is energy-efficient compared to synthetic materials like plastic or metal, as it is fired at relatively low temperatures, leading to reduced greenhouse gas emissions. The material is also biodegradable, minimizing its environmental impact throughout its lifecycle. Additionally, its durability ensures longevity, reducing waste and the need for frequent replacements.

Terracotta's thermal properties further enhance its sustainability. It acts as an excellent insulator, regulating indoor temperatures and reducing dependence on artificial heating and cooling systems. Buildings incorporating terracotta elements thus experience lower energy consumption and carbon footprints. These attributes make terracotta a practical choice for eco-conscious design.

Cultural Significance

Terracotta holds a deep connection to cultural heritage, with a history spanning civilizations such as the Indus Valley, Mesopotamia, and Ancient Greece. It has traditionally been used in pottery, sculptures, and architecture, often serving as a medium for storytelling and religious expression. The tactile, earthy quality of terracotta connects creators and audiences to the natural world, lending each piece a sense of origin and permanence.

By incorporating terracotta into contemporary art, artists preserve traditional techniques while reinterpreting them for modern audiences. This blend of old and new helps bridge cultural narratives, ensuring that the material's rich history remains relevant in today's context.

Practical Applications in Art

Terracotta is celebrated for its versatility in modern art. Artists can mold it into various shapes and forms, allowing for creative expression across sculptures, pottery, and installations. Its natural colors and textures provide an organic aesthetic that aligns with current design trends emphasizing sustainability and simplicity. In architecture, terracotta is often used for tiles, bricks, and panels, providing both visual appeal and functional benefits such as energy efficiency. Broken terracotta pieces can be recycled or repurposed into new artworks or construction materials, reinforcing its alignment with sustainable practices. These qualities make terracotta an ideal medium for environmentally conscious creators.

Conclusion

Terracotta stands as a testament to the harmony between sustainability and cultural heritage. Its eco-friendly properties, including the use of natural materials, low energy consumption during production, durability, and recyclability, make it a responsible choice for artists and designers. Moreover, its historical significance and tactile nature connect modern creators to centuries of artistic tradition, bridging the past and present.

As society increasingly values sustainability, terracotta's role in art and design will continue to grow. It offers a unique combination of aesthetic beauty, practical functionality, and environmental responsibility, ensuring its enduring relevance in a rapidly changing world.

Millets in Uttar Pradesh: A Growing Trend for Sustainable Agriculture and Nutrition

Km Priyanka
Research Scholar,
Home Science Department

Uttar Pradesh (UP), one of the largest agricultural states in India, has long been known for its production of staple crops like wheat, rice, and sugarcane. However, in recent years, there has been a renewed interest in millets, a group of small, nutrient-dense grains that have been an essential part of India's agricultural history. As the demand for nutritious, climate-resilient crops increases, millets are making a significant comeback in UP's farming landscape. This article explores the rise of millets in Uttar Pradesh, the benefits they offer, and the state's potential for becoming a hub for millet production.

What are Milliets?

Millets refer to a group of small-seeded grasses that are grown primarily for food and fodder. Common varieties of millets include pearl millet (bajra), finger millet (ragi), foxtail millet, barnyard millet, and sorghum (jowar). These grains are hardy and adaptable to a wide range of climatic conditions, making them ideal for dryland farming. In India, rnillets have been cultivated for centuries but were gradually overshadowed by rice and wheat as staple crops due to changing agricultural practices and government policies that favored these grains.

The Role of Millets in Sustainable Agriculture

One of the most significant advantages of millets is their environmental resilience. In a state like Uttar Pradesh, where farming is heavily dependent on the monsoon season, millets offer a drought-resistant alternative to more water-intensive crops like rice. They require less water, fewer chemical inputs, and can grow in poor soil conditions, making them ideal for farmers in semi-arid regions or areas facing water scarcity.

Millets also have a shorter growing cycle, which allows farmers to grow multiple crops in a year, thus improving overall agricultural productivity. Moreover, they are less susceptible to pests and diseases, reducing the need for chemical pesticides and fertilizers, which is a major step toward sustainable farming practices.

Health Benefits of Millets

Millets are a powerhouse of nutrition. They are rich in proteins, fiber, and essential minerals like iron, magnesium, and calcium. They also have a low glycemic index, making them a great option for people with diabetes or those looking to manage blood sugar levels. Millets are gluten-free, which makes them an excellent choice for individuals with gluten intolerance or celiac disease.

In a state like UP, where malnutrition remains a concern, especially in rural areas, the inclusion of millets in the diet can provide a simple yet effective solution. Millets are considered "superfoods" because of their potential to combat various health issues, from anemia to cardiovascular diseases. As part of government initiatives to promote better nutrition, millets are being incorporated into school midday meal schemes and public distribution systems.

Uttar Pradesh's Millet Revival

Uttar Pradesh has begun to recognize the potential of millets in improving both agricultural sustainability and public health. The state government, along with the central government, is taking steps to promote the cultivation and consumption of millets. This includes providing subsidies, promoting millet-based food products, and setting up training programs for farmers to familiarize them with millet farming techniques.

The government's initiatives to revive millets are part of a larger national movement, as India celebrated 2023 as the "International Year of Millets."

Uttar Pradesh, with its vast agricultural network and large rural population, is well-positioned to benefit from this global trend. Several districts in UP, especially in the Bundelkhand region, have started experimenting with millet cultivation, and the results are promising.

Challenges and the Way Forward

Despite the growing interest in millets, several challenges remain in expanding their cultivation in Uttar Pradesh. Farmers often lack the technical knowledge needed to grow millets effectively, and the infrastructure for processing and marketing millet products is still underdeveloped. Additionally, there is a need for greater awareness among consumers about the nutritional benefits of millets and the various ways they can be incorporated into the diet.

To address these challenges, the state government, along with NGOs and agricultural research institutions, must focus on providing training and resources to farmers. Furthermore, there is a need to build stronger supply chains, including processing units and retail markets, to increase the accessibility of millet-based products.

Conclusion

Millets hold tremendous potential for transforming agriculture and nutrition in Uttar Pradesh. As the state moves towards more sustainable and resilient agricultural practices, millets could play a key role in improving food security, boosting farmer incomes, and enhancing public health. With continued government support, technological advancements, and greater consumer awareness, Uttar Pradesh can become a leading producer of millets, contributing to a healthier and more sustainable future for the state and the country.

Language of Theatrical Performance

Jyoti Sharma

Research Scholar

Department of English

Before discussing language of theatrical performance, one must have understanding about performance and theatre. The term 'Theatre' is derived from Greek term 'Theatron' which means 'a place for viewing' or 'a physical location of performance'. To put into simple words theatre refers to the space used for dramatic presentation or for other performances. It includesscript,stage-setting, costume, lights, sound, etc.Asa medium of communication, in words of Oscar Wilde, theatre is “the greatest of all art forms, the most immediate way in which a human being can share with another the sense of what it is to be a human being”.

To define performance according to Richard Schechner, performance is not only limited to stage and theatre but it includes our everyday life activity.Any definition of performance cannot confine it to theatres, or any licensed entertainment. Performance includes any piece of behaviour/ doing/ action which is in some way marked off, or framed. He says that every action is a new

performance but it is an imitation of earlier action at the same time. It is important to note that theatrical performance, unlike many social performances, is not possible and cannot happen without audience. This article is on language of performance in theatre. So, it would discuss language of performance in the context of theatre.

As we know, language is a medium of communication among people of same or different places and fields. Mostly verbal or oral way of expression, which is present in written form also, is considered as language. But in theatre, language of performance includes body movement, gestures, facial expression, costume, sound, lighting and set- design as language with or without verbal or oral speech. Its detailed explanation is given in Natyashastra, a treatise on plays and theatre, written by Bharatmuni. It has deep description of actor and acting. According to Natyashastra, there are eight primary emotions which are known as "rasas", whichare as following, love (sringara), laughter (hasya), sorrow (karuna), heroism (veera), anger (raudra), fear (bhayanka), disgust (bibhatsa) and wonder (adbhuta). Later on, peace (shanth) is added to it as ninth emotions. All these basic emotions have its sub-types as well. The given picture shows above mentioned primary emotions discussed in Natyashastra.

In theatre, spoken words seem less effective without emotions. Only words (of any oral or written language) cannot create or show meaning in its whole sense. It needs emotional expression, gesture, body movement in same alignment to communicate the whole sense. Communication and expression of emotions is possible even without utterance of a single word. In the above picture, which is a collection of stills of a performance, it is clearly seen that each posture with different facial expression conveys different emotion. Words are not necessary for the same. Sometimes, in theatrical performance, verbal language cannot express what silence, pause or a gesture can do.

Stage setting, lighting and sound not only creates an environment suitable for performance but reveals a lot about it. Like darkness on stage with horror sounds creates a terrifying and negative environment whereas bright lights on stage with happy music creates joyful and positive mood. Similarly, costume of characters speak so many things and opens up the layering of characters. For example, in a scene of house party, character A wearing three-piece suit shows that he is the centre of the party or his high class standard whereas a character wearing shirt and pant shows that is a common person in the party or that he belongs to lower class. Costume explains characters'role, psychology and social position.

So, in language of theatrical performance, the word 'language' is not only limited to oral or written wordsbut it opens up its wings and covers facial expression, gestures, body movement, stage setting, lighting, sound and costume. Theatrical performance doesn't always need words to convey its message. In theatre, even without a word a successful performance is possible.

English Department
Report 2023-24

Prof.(Dr.) Reeta Agnihotri
Smt. Sadhana Singh Yadav
Assitant Professer

- **Formation of English Association 2023-24**

1. Saiyad Sania Zehra	M.A. II Semester	President
2. Yogita Tripathi	M.A. I Semester	Vice-President
3. Laxmi Verma	B.A. IV Semester	Secretary
4. Jaya Upadhyay	B.A. II Semester	Joint Secretary
5. Shambhavi Dixit	B.A. I Semester	Cultural Programme Secretary

Activities organized in the session 2021-2022

- **Quiz for B.A. I Students & Second Students**

1. Anushka	First
2. Deepakshi	Second
3. Swejal Gupta	Third

- **Quiz for B.A. II Students**

1. Preeti Kannaujia	First
2. Somal	Second
3. Salini Yadav	Third

- **Essay Competition for B.A. III Students**

1. Aishwarya Singh	First
2. Palak Awasthi	Second
3. Divyanshi Singh	Third

English Department organised a Research Paper writing and Presentation Competition for MA student

1. Jyoti Negi	Semester II	First
2. Saiyad Sania Zehra	Semester II	Second
3. Mariyam Hasan	Semester II	Third
4. Medha Mishra	Semester I	Third
5 Prachi Goel	Semester III	First
6. Alankriti	Semester II	Second

Jyoti Negi
MA. English Topper

Poem Recitation Competition for MA I student

1. Yogita Tripathi	First
2. Fahmina Naz	Second
3. Farheen Khan	Third

Session 2024-2025
Formation of English Association

The following students were selected as the office-bearer of the English Association for the session 2024-2025.

Patron - Dr. R.C. Verma

1. President - Fehmina Naaz (MA-II)
2. Vice President - Laxmi Verma (MA-I)
3. Secretary - Versha Srivastava (BA-III)
4. Joint Secretary- Unnati Raj (B.A- II)
5. Cultural Secretary - Lipi Sharma

Class Representative-

1. Archita Panday (MA-II)
2. Aditi Srivastava (M.A-I)
3. Tanu Maurya (B.A-III)
4. Anshika Tiwari (B.A-II)
5. Vaishnavi Panday (B.A-I)

Komal kumari

NET Qualified - 2024

Departmental progams organised for **B.A Students**

Poem Recitation -	**(B.A -I)**
Preet Malik.	I
Lipi Sharma	II
Vaishnavi Panday	III
Role Act -	**(B.A -II)**
Anshika Tiwari	I
Unnati Raj	II
Afreen th	III
Literary Diveces chart Competition	**(B.A -III)**
Akansha Sharma	I
Surabhi	II
Priyanka	III

Yogita Tripathi

First Prize District Level

Speech Competition

Sadak-Suraksha-2024

Departmental progams organised for M.A Students

PPT Presentation: -	**(M.A-II)**
Yogita Tripathi	I
Deepika Mishra	II
Fehimina Naz	III
Research Paper Presentation	**(M.A-I)**
Ekla Panday	I
Shivangi Bappace	II
Laxmi Verma	III

हिन्दी विभाग परिषद

सत्र 2024–25

डॉ सुरंगमा यादव
विभाग प्रभारी हिन्दी

महाविद्यालय में छात्राओं की बहुमुखी प्रतिभा के विकास हेतु पठन–पाठन के साथ–साथ वर्ष पर्यन्त अनेकानेक सह–शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है। इसी क्रम में हिन्दी विषय का अधययन करने वाली समस्त छात्राओं की सहमति से सत्र 2024–25 के लिए हिन्दी विभाग परिषद् का गठन निम्नवत् किया गया–

अध्यक्ष –	नन्दिनी यादव	बी.ए. III
उपाध्यक्ष –	नैनसी चौरसिया	बी.ए. III
सचिव –	मनीषा अवस्थी	बी.ए. II
कक्षा प्रतिनिधि –	मानसी गौतम	बी.ए. III
	प्रतिज्ञा सोनी	बी.ए. II
	शालिनी यादव	बी.ए. I

छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करने हेतु हिन्दी परिषद के तत्त्वावधान में आशु व्याख्यान, निबन्ध एवं पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजयी प्रतिभागी निम्नवत् हैं–

1. आशु व्याख्यान

प्रिया सक्सेना	बी.ए. II	प्रथम
शिवानी रावत D/o श्री फूलचन्द रावत	बी.ए. II	द्वितीय
नैनसी चौरसिया	बी.ए. III	तृतीय

2. निबन्ध प्रतियोगिता

शिवानी रावत D/o श्री फूलचन्द रावत	बी.ए. II	प्रथम
मनीषा अवस्थी	बी.ए. II	द्वितीय
वैशाली गुप्ता	बी.ए. II	तृतीय

3. पोस्टर प्रतियोगिता

दीपाक्षी शुक्ला	बी.ए. II	प्रथम
सलोनी प्रजापति	बी.ए. I	द्वितीय
आनिया कश्यप	बी.ए. I	तृतीय

उ0प्र0 भाषा संस्थान एवं महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में संगोष्ठी
विषय– वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपादेयता

दिनांक 29.07.2024 को भाषा संस्थान, उ0 प्र0 शासन के नियंत्रणाधीन उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान एवं पं0 दीन दयाल उपाध्याय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय (हिन्दी विभाग), लखनऊ के संयुक्त तत्त्वावधान में वर्तमान समय में पारंपरिक ज्ञान की उपादेयता विषय पर वृहद् संगोष्ठी का आयोजन महाविद्यालय के सभागार में किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन अतिथि प्रो0 विष्णु गिरि गोस्वामी, विशिष्ट अतिथि प्रो0 रश्मि श्रीवास्तव, वरिष्ठ साहित्कार डॉ० रश्मिशील, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 रमेश चन्द्र वर्मा तथा हिन्दी विभाग प्रभारी डॉ0 सुरंगमा यादव ने संयुक्त रूप से किया। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे प्रो0 विष्णु गिरि गोस्वामी, पूर्व प्रो0 लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ विधि संकाय ने अपने वक्तव्य में कहा कि "प्राचीन समय में ज्ञान परम्परा में संस्कारों की प्रधानता रही है तथा शिक्षा व्यावहारिक दी जाती थी। आज के परिवेश में सुधार की आवश्यकता है। जीवन मूल्यों का अनुपालन किया जाना आवश्यक है, हमें अपनी प्राचीन ज्ञान परम्परा को पुनः धीरे–धीरे व्यवहार में लाना आवश्यक है।

विशिष्ट अतिथि प्रो0 रश्मि श्रीवास्तव, महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ ने कहा–भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित शैक्षिक प्रावधान आज बड़े प्रासंगिक हैं। हमारी आज की शिक्षा सैद्धान्तिक है, व्यवहारिक पक्ष नगण्य है। भारत की पारम्परिक व्यवस्था में सिद्धान्त के सभी व्यवहारिक पक्ष को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता था। श्रवण– मनन विधि का पारम्परिक व्यवहार आज की जरूरत है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इन पारम्परिक मूल्यों को रेखांकित किया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डा0 रमेश चन्द्र वर्मा, प्राचार्य पं0 दीन दयाल उपाध्याय स्नातकोत्तर महाद्यियालय, लखनऊ ने अपने वक्तव्य में कहा कि, नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे की ओर ले जाने वाले बहुत बिन्दु समाहित हैं। यह प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों और संस्कारों की पुनर्स्थापना की ओर किया गया महती प्रयास है। हम शिक्षकों का दायित्व है कि हम अपने विद्यार्थियों को संस्कारित, अनुशासित, विनम्र इंसान बनाएँ। यही मानव जीवन का लक्ष्य है। डा0 सुरंगमा यादव, ने भारतीय ज्ञान परम्परा के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि, भारतीय ज्ञान परम्परा की सबसे बडी विशेषता ये है कि वह वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक चिंतन पर आधारित है। इसमें विश्वबन्धुत्व की भावना तथा लोक कल्याण की कामना है। ऐसे में हमारी प्राचीन ज्ञान परम्परा की उपादेयता और भी अधिक बढ़ जाती है, ताकि विश्व शांति की स्थापना हो सके। हमारी सनातन ज्ञान परम्परा पूरे विश्व में अपनायी जा रही है। यह हम भारतीयों की बहुत बडी उपलब्धि है। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन डा0 रीता अग्निहोत्री, द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा0 रश्मि शील ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षण गण एवं छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहीं।

हिन्दी दिवस समारोह

उ0प्र0 भाषा संस्थान एवं महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में संगोष्ठी

विषय– राजभाषा हिन्दी : पुनर्विचार

अपनी भाषा के बिना संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती–प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित

भाषा विभाग उत्तर प्रदेश शासन के नियंत्रणाधीन उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान है, एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजी पुरम, लखनऊ (हिन्दी विभाग) के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर दिनांक 13–9–2024 को महाविद्यालय के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में राजभाषा हिंदीः पुनर्विचार' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित, अति विशिष्ट अतिथि पद्मश्री डॉ0 विद्याबिन्दु सिंह, विशिष्ट अतिथि प्रो0 हरिशंकर मिश्र, कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य प्रो0 रमेश चन्द्र वर्मा, भाषा संस्थान के प्रभारी श्री दिनेश कुमार मिश्र, श्रीमती अंजू सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ रश्मि शील तथा हिन्दी विभाग प्रभारी डॉ0 सुरंगमा यादव ने विद्या और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं सम्मुख दीप प्रज्वलन कर संयुक्त रूप से किया। तत्पश्चात् मनीषा अवस्थी, दृष्टि चौरसिया, मुस्कान राठौर तथा सलोनी प्रजापति ने भावपूर्ण स्वर में सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें हिन्दी दिवस के स्थान पर 'राजभाषा दिवस' कहना चाहिए। हिंदी को राजभाषा बने 75 वर्ष पूरे हो गए, अतः आज हम राजभाषा का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी 75 वर्ष से संघर्षरत है, अतः अब ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे हिंदी को पूरे देश में लागू किया जा सके। इसके साथ–साथ स्वतंत्र भाषा मंत्रालय, भारतीय भाषा विश्वविद्यालय की स्थापना तथा स्नातकोत्तर स्तर पर पाठ्यक्रम में तुलनात्मक भाषा पाठ्यक्रम चलाए जाने की आवश्यकता पर भी उन्होंने बल दिया। अति विशिष्ट अतिथि पद्मश्री डॉ0 विद्याबिन्दु सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी भाषा के अनेक रूप है, अनेक बोलियाँ है, उसने अनेक भाषाओं के बीच अपनी प्रतिष्ठा को बनाया है। हिंदी का भविष्य उज्जवल है, हिंदी का सूर्य कभी अस्त नहीं होता, क्योंकि हिंदी को बोलने वाले विश्व के कोने–कोने मे बसे हुए हैं। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि ऑनलाइन कार्यो में हिंदी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए तथा न्यायालय की भाषा के रूप में भी हिन्दी को प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए।

प्रो0 हरिशंकर मिश्र ने अपने विचार व्यक्त करते हैं कहा कि, "हिंदी एक समृद्ध भाषा है उसके समृद्ध साहित्य की सुदीर्घ परंपरा है। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। उसमें जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है, इसलिए विद्यार्थियों को भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए लिपि, व्याकरण, वर्तनी एवं उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

प्राचार्य प्रो० रमेश चंद्र वर्मा ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि, "हिंदी में श्रेष्ठ साहित्य की रचना होनी चाहिए। साहित्य के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकों का लेखन तथा अनुवाद कार्य भी हिंदी में होना चाहिए। हिंदी में रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं, अतः विद्‌यार्थियों को हिंदी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयास करते हुए हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए।

डॉ० विपिन कुमार शुक्ला ने अपने वक्तव्य में हिंदी के राष्ट्रभाषा न बन पाने के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

संगोष्ठी में पधारे हुए अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापन डॉ० सुरंगमा यादव ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ० रश्मि शील ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक गण एवं बड़ी संख्या में छात्राएँ उपस्थित रहीं।

14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ महाविद्‌यालय के प्राचार्य प्रो० रमेश चन्द्र वर्मा द्‌वारा विद्या और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। तत्पश्चात् मनीषा अवस्थी, दृष्टि चौरसिया, मुस्कान राठौर तथा सलोनी प्रजापति ने भावपूर्ण स्वर में सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। प्राचार्य ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि "हिंदी का अत्यंत समृद्‌ध साहित्य है। हमें हिंदी के महान कवियों की रचनाओं को पढ़ना चाहिए और उसमें निहित जीवन–दर्शन को अपने जीवन में उतारना चाहिए। विद्‌यार्थियों को हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों के कवियों की कविताओं को कंठस्थ भी करना चाहिए।"

हिंदी विभाग प्रभारी डॉ० सुरंगमा यादव ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि "हिंदी एक समृद्‌ध भाषा है, जो आज विश्व स्तर पर प्रसार पा रही है। हिंदी की अनेक उपभाषाएँ तथा बोलियाँ है, जो हिंदी को समृद्‌ध बनाती हैं तथा उसे संख्या बल प्रदान करती हैं। आज हिंदी रोजगार की भाषा के रूप में भी उभरकर सामने आ रही है, परन्तु आज सोशल मीडिया के युग में हिंदी को रोमन लिपि में लिखना हिंदी के लिए एक नई मुसीबत खड़ी करना है। हमें हिंदी को हमेशा देवनागरी लिपि में ही लिखना चाहिए।" डॉ० प्रज्ञा मिश्रा ने हिंदी दिवस के अवसर पर सभी को बधाई देते हुए हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता में जमन फातिमा, प्रिया गुप्ता, मनीषा अवस्थी, भाषण प्रतियोगिता में शिवानी रावत, मनीषा अवस्थी, अंशिका तिवारी, स्वरचित कविता पाठ में अर्चिता यादव, वर्षा दीक्षित, शिवानी रावत तथा गायन प्रतियोगिता में मनीषा अवस्थी, श्रद्‌धा शुक्ला, दृष्टि चौरसिया ने क्रमशः प्रथम, द्‌वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम में महाविद्‌यालय की प्राध्यापक डॉ० नेहा जैन, डॉ० प्रीति बाजप्ये, डॉ० मीशू सिंह तथा डॉ० पवन कुमार मौर्य ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कर कार्यक्रम को साहित्यिक रूप प्रदान किया।

प्राचार्य प्रो० रमेश चंद्र वर्मा अपनी प्रेरक कविता प्रस्तुत कर कार्यक्रम को चरम पर ले गये, उन्होंने छात्राओं को प्रेरित करते हुए सुमधुर स्वर में कबीर का निर्गुण भी प्रस्तुत किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी छात्राओं को प्राचार्य महोदय द्‌वारा पुरस्कृत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ० विपिन कुमार शुक्ला ने किया। कार्यक्रम में सभी प्राध्यापक गणों के साथ–साथ बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं।

वाल्मीकि जयंती पर हुआ रामायण का पाठ– दिनांक 17–10–2024

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्‌यालय राजाजीपुरम लखनऊ में आज दिनांक 17 अक्टूबर को 'महर्षि वाल्मीकि' जयंती के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ महाविद्‌यालय के प्राचार्य प्रो० रमेश चन्द्र वर्मा द्‌वारा विद्‌या और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की प्रतिमा तथा महर्षि वाल्मीकि के चित्र पर माल्यार्पण एवं सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। तत्पश्चात् प्रिया सक्सेना, दृष्टि चौरसिया एवं प्रतिज्ञा सोनी ने भावपूर्ण स्वर में सरस्वती वंदना प्रस्तुत की।

प्राचार्य प्रो० रमेश चंद्र वर्मा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि, "किसी कुल विशेष या जाति विशेष में जन्म लेने से कोई महान नहीं बन जाता। व्यक्ति के कर्म महत्वपूर्ण होते हैं, और हमें अपने जीवन में कर्मों के अनुसार ही फल भोगने पड़ते हैं। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना करके समाज के समक्ष राम के चरित्र के रूप में एक आदर्श प्रस्तुत किया हैं। जो सदैव अनुकरणीय रहेगा।"

हिंदी विभाग प्रभारी डॉ० सुरंगमा यादव ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि "वाल्मीकि जी के मन में दृढ़ इच्छा शक्ति और अटल निश्चय का भाव था। जीवन में घटित एक घटना ने उनके जीवन का रास्ता बदल दिया। जैसे ही उन्हें ये अहसास हुआ कि वे अनुचित मार्ग पर चल रहे हैं उन्होंने अपने जीवन की दिशा ही बदल दी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि व्यक्ति अपने कृत्यों के लिए स्वयं उत्तरदायी होता है और कुकृत्यों की हानि कभी न कभी उसे अवश्य उठानी पड़ती है।"

कार्यक्रम में शिवनी रावत, अंशिका तिवारी तथा रोशनी गौड़ ने वाल्मीकि के जीवन तथा रामायण की शिक्षाओं पर केंद्रित अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रतिज्ञा ने कविता पाठ, शिवानी रावत, प्रिया सक्सेना तथा निशी शुक्ला ने वाल्मीकि के मुख से निःसृत प्रथम श्लोक के प्रसंग का नाट्य रूपांतरण प्रस्तुत किया। छात्राओं ने वाल्मीकि रामायण के श्लोकों का वाचन भी किया। कार्यक्रम में महाविद्‌यालय की प्राध्यापिक डॉ० नेहा जैन ने मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम पर स्वरचित कविता प्रस्तुत की। डॉ० विपिन कुमार शुक्ला ने रामायण के आदर्शों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में सभी प्राध्यापक गणों के साथ–साथ बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं।

इस अवसर पर सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति हेतु निम्नलिखित छात्राओं को प्राचार्य महोदय द्वारा पुरस्कृत किया गया –

1. प्रिया सक्सेना बी० ए० II
2. निशि शुक्ला बी० ए० II
3. शिवानी रावत
   D/o श्री राजेन्द्र रावत बी० ए० II
4. शिवानी रावत
   D/o श्री फूलचन्द रावत बी० ए० II

अंतरमहाविद्यालयी प्रतियोगिताएँ

संस्कृत विभाग

डॉ0 पूनम पाण्डेय

विभाग में अनुशासन बनाये रखने एवं विभागीय कार्यक्रमो के समुचित संचालन हेतु सत्र के प्रारंभ में समस्त छात्राओं की सहमति से विभागीय परिषद का गठन किया गया। जिसमे दिकान्क्षा अध्यक्ष, कोमल पांडेय उपाध्यक्ष , अंशिका अवस्थी सचिव पद पर एवं काजल वर्मा, पूजा राठौर तथा अनन्या शुक्ला सदस्य के पद पर सर्व सम्मति से चुनी गयी। छात्राओ के बहुमुखी प्रतिभा के विकास के लिए विभाग द्वारा अनेक प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओ की जननी संस्कृत विश्व की प्राचीन भाषा है परवर्ती समस्त साहित्य एवं ज्ञान का आधार यह भाषा ही है। छात्राओ को संस्कृतभाषा के महत्व का बोध कराने एवं इसके प्रति अभिरुचि जागृत करने के लिए विभाग द्वारा दिनांक 20/08/24 को **संस्कृत दिवस** हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग प्रभारी डॉ पूनम पांडेय ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत के साथ हुआ। इसके अनंतर संस्कृत विभाग प्रभारी ने संस्कृत दिवस तथा उसकी उपादेयता के विषय मे बताया। प्राचार्य महोदय ने अपने उद्बोधन मे संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता तथा ग्राह्यता के विषय मे बताया। कार्यक्रम की इसी श्रृंखला मे मुस्कान तिवारी, अंशिका अवस्थी ने विनोद कणिका प्रस्तुत किया। विभाग द्वारा अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के परिणाम निम्नवत हैं–

श्लोक पाठ– मनीषा अवस्थी (बी.ए. द्वितीय वर्ष) प्रथम, निशि शुक्ला (बी.ए. द्वितीय वर्ष), द्वितीय, एवं अंशिका अवस्थी (बी ए प्रथम वर्ष) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। **साहित्य प्रश्नोत्तरी** में मनीषा अवस्थी प्रथम और अशोका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **पोस्टर प्रतियोगिता**– नैन्सी चौरसिया (बी.ए. तृतीय वर्ष) ने प्रथम मुस्कान तिवारी (बी.ए. प्रथम वर्ष) ने द्वितीय, शिवानी रावत (बी.ए. द्वितीय वर्ष) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। **प्रेरक कहानी कथन**– निशि शुक्ला प्रथम, शालिनी रावत (बी.ए. तृतीय वर्ष) ने द्वितीय, मनीषा अवस्थी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डॉ विपिन कुमार शुक्ला, डॉ सुरंगमा यादव , डॉ प्रीती वाजप्ये, डॉ भानु मिश्रा ने प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में अपना सहयोग प्रदान किया। महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापको ने कार्यक्रम मे अपनी गरिमामयी उपस्थित के द्वारा छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।

छात्राओं की संस्कृत भाषा की अभिव्यक्ति की क्षमता के बोध के लिए **आशु भाषण प्रतियोगिता** का आयोजन दिनाँक 21/10/24 को किया गया। जिसमे बी .ए.द्वितीय वर्ष की मनीषा अवस्थी ने प्रथम, प्रिया सक्सेना ने द्वितीय तथा निशी शुक्ला ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्राओ के शब्द बोध ज्ञान के लिए **श्रुत लेख प्रतियोगिता** आयोजित की गयी जिसमे बी. ए. द्वितीय वर्ष की मनीषा अवस्थी ने प्रथम एवं प्रिया सक्सेना ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **निबंध प्रतियोगिता** में प्रिया गुप्ता बी.ए. द्वितीय वर्ष ने प्रथम, शिवानी रावत बी.ए. द्वितीय वर्ष ने द्वितीय एवं पूर्वा रावत बी.ए. द्वितीय वर्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

वार्षिक क्रीड़ा समारोह 22 व 23 फरवरी 2024

डॉ0 शीलधर दुबे

सत्र 2023–24 के अंतर्गत वार्षिक कीड़ा समारोह 22 एवं 23 फरवरी, 2024 को आयोजित किया गया, जिसमे की कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर अर्चना राजन (सेवानिवृत्त प्राचार्य, पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजाजीपुरम, लखनऊ) के कर कमलो द्वारा किया गया। वार्षिक क्रीड़ा समारोह में ट्रैक एंड फील्ड की कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिस्म की दौड़ प्रतिस्पर्धा में 100 मी, 200 मी, 400 मी, 800 मी एवम रिले रेस ।

फेक प्रतिस्पर्धा में जैवलिन डिस्कस एवं शॉटपुट

कूद प्रतिस्पर्धा में ऊंची कूद एवं लंबी कूद का खेल का आयोजन किया गया।

वार्षिक कीड़ा समारोह के समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री अंजनी कुमार श्रीवास्तव (उपविजेता, पश्चिम विधानसभा क्षेत्र लखनऊ) उपस्थित रहे जिन्होंने विभिन्न प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्रों में होने वाली विजेता एवं उपविजेताओ को पुरस्कार वितरित करते हुए उनको अपना आशीर्वचन प्रदान किया। अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो रमेश चंद्र वर्मा, प्राचार्य, पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजाजीपुरम, लखनऊ ने छात्राओं को अपना आशीर्वचन देते हुए सभी आए हुए अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। सत्र 2023–24 की क्रीड़ा चौंपियन नंदनी यादव बी ए 6th सेमेस्टर रही।

वार्षिक क्रीड़ा समारोह सत्र 2024–25

सत्र 2024–25 के अंतर्गत वार्षिक कीड़ा समारोह 14 एवं 16 दिसंबर, 2024 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर बी० एल० शर्मा (सहायक निदेशक, उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश, प्रयागराज) के कर कमलों द्वारा किया गया। वार्षिक क्रीड़ा समारोह में ट्रैक एंड फील्ड की कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें की दौड़ प्रतिस्पर्धा में 100 मी, 200 मी, 400 मी, 800 मी एवम रिले रेस।

फेक प्रतिस्पर्धा में जैवलिन डिस्कस एवं शॉटपुट

कूद प्रतिस्पर्धा में ऊंची कूद एवं लंबी कूद खेल का आयोजन किया गया। इसके अलावा समय–समय पर बैडमिंटन प्रतियोगिता, टेबल टेनिस प्रतियोगिता, कैरम प्रतियोगिता, शतरंज प्रतियोगिता, कबड्डी प्रतियोगिता, खो खो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

वार्षिक क्रीड़ा समारोह के समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर अमित भारद्वाज (निदेशक, उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश, प्रयागराज) थे, परंतु किन्हीं कारणवश वे कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रोफेसर रमेश चंद्र वर्मा प्राचार्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजीपुरम लखनऊ ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभागी छात्रों में होने वाली विजेता एवं उपविजेता छात्राओं को पुरस्कार वितरित करते हुए उनको अपना आशीर्वचन प्रदान किया। अंत में कार्यक्रम के संयोजक प्रो. शील धर दुबे, विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग, पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजाजीपुरम, लखनऊ ने क्रीड़ा समारोह की वार्षिक आख्या प्रस्तुत करते हुए अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। सत्र 2023–24 की क्रीड़ा चैंपियन कुमारी किरण, बी.ए. 5th सेमेस्टर रही।

दो दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा समारोह के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

इतिहास परिषद
सत्र – 2024–2025

प्रो० प्रियंका शर्मा
प्रो० प्रीति वाजप्ये

आज दिनांक 03/09/2024 को इतिहास विभाग के तत्वावधान में इतिहास परिषद का गठन इतिहास विषय की छात्राओं के समक्ष किया गया, जिसमें निम्न छात्राओं का चयन परिषद के पदाधिकारियों के रूप में किया गया।

1. अध्यक्ष – वैशाली यादव (एम.ए. Sem III[rd])
2. उपाध्यक्ष – अदिति यादव (एम.ए. Sem I[st])
3. सचिव – मुस्कान तिवारी (बी.ए. Sem V[th])
4. संयुक्त सचिव – (i) खुशी (बी.ए. Sem III[rd]) (ii) शिवानी रावत (बी.ए. Sem III[rd])
5. छात्रा प्रतिनिधि – (i) अनन्या मिश्रा (बी.ए. Sem I[st]) (ii) दीपिका (बी.ए. Sem I[st])

इतिहास परिषद के तत्वावधान में परिषदीय प्रतियोगिताओं के क्रम में स्नातक एंव परास्नातक स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कई प्रतियोगिताएँ नवाचार पर आधारित थीं।
उक्त प्रतियोगितायें एंव उनके परिणाम निम्नवत् हैं–

1. बी. ए. प्रथम – (I[st] Sem) – प्रतियोगिता – प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
प्रथम – शांभवी त्रिपाठी D/o श्री अनिल त्रिपाठी
द्वितीय – दीपिका D/o श्री सुरेन्द्र कुमार
तृतीय – समरीन खातून D/o मों उमर

2. बी. ए. द्वितीय वर्ष– (III[rd] Sem)
प्रथम – शिवानी रावत
द्वितीय – खुशी
तृतीय – सोनी वर्मा

3. बी. ए. तृतीय वर्ष – (V[th]Sem)
प्रथम – सीमा वर्मा
द्वितीय – मुस्कान
तृतीय – शांति यादव

4. एम.ए. (I[st]Sem)– प्रतियोगिता – PPt.Presentation
प्रथम – प्राची यादव
द्वितीय – (i) अदिति यादव (ii) प्रिया गुप्ता
तृतीय – अदिति सिंह

M.A. History
Topper 69.1%

5. एम.ए. (III[rd]Sem)– प्रतियोगिता – माइक्रो टीचिंग
प्रथम – निधि शर्मा
द्वितीय – नसरीन खातून
तृतीय – रूपाली कनौजिया

तंबाकू निषेध कार्यक्रम
सत्र 2024–25

आज दिनांक 12 अगस्त 2024 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजाजीपुरम लखनऊ में **नशा मुक्त भारत अभियान** के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना और तंबाकू निषेध समिति के तत्वावधान में स्वयं सेविकाओं एवं शिक्षिकाओं ने एक जुट होकर शपथ ली। जिसके तहत न केवल समुदाय / परिवार / दोस्त बल्कि खुद को नशा मुक्त बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ प्रज्ञा मिश्रा ने सभी को शपथ दिलायी। प्राचार्य डॉ रमेश चंद्र वर्मा जी के निर्देशन में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

गृह विज्ञान विभाग
वार्षिक आख्या 2024–25

प्रो0 रश्मि श्रीवास्तव
प्रो0 किरन सिंह

गृह विज्ञान विभाग में स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर अध्ययन एवं अध्यापन कार्य चलता है. सत्र 2024–25 में बीए प्रथम वर्ष द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष में मेजर एवं माइनर विषय के रूप में लगभग 195 छात्राओं ने प्रवेश लिया तथा एम ए प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में 12 छात्राएं अध्यनरत है. गृह विज्ञान की विभागीय परिषद में अदिति राजपूत एम ए प्रथम वर्ष को अध्यक्ष, संयोगिता एम ए प्रथम वर्ष को उपाध्यक्ष, खुशी शर्मा बी ए तृतीय वर्ष को सचिव, उमरिया बानो बी ए. द्वितीय वर्ष को संयुक्त सचिव एवं खुशी मिश्रा बी ए प्रथम वर्ष को सांस्कृतिक सचिव के पदों पर छात्राओं द्वारा सहर्ष चयनित किया गया. कक्षाओं में अनुशासन बनाए रखने हेतु प्रत्येक कक्षा मे एक कक्षा प्रतिनिधि का चयन किया गया – सोनाक्षी शर्मा एम ए प्रथम वर्ष मे, खुशी शर्मा बी ए तृतीय वर्ष मे, रूचि श्रीवास बी ए द्वितीय वर्ष मे एवं कोमल मौर्या बी ए प्रथम वर्ष मे कक्षा प्रतिनिधि के रूप में चयनित की गई.

सत्र 2024–25 मे परिषदीय प्रतियोगिताओं के अंतर्गत दिनांक 22/10/2024 को स्नातक स्तर पर प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्न प्रकार रहा

1. रंगोली प्रतियोगिता

प्रथम – खुशी कुमारी बी ए प्रथम वर्ष
द्वितीय – शालू रावत बी ए द्वितीय वर्ष
तृतीय – खुशी गुप्ता बीए द्वितीय वर्ष

2. पोस्टर प्रतियोगिता

प्रथम – खुशी कुमारी बी ए प्रथम वर्ष
द्वितीय – अंजलि कौशल बी ए द्वितीय वर्ष
तृतीय – रिंकी शर्मा बी ए द्वितीय वर्ष

3. निबंध प्रतियोगिता

प्रथम – प्रिया वर्मा बी ए प्रथम वर्ष
द्वितीय – वंशिका गुप्ता बी ए द्वितीय वर्ष
तृतीय – रूपाली यादव बी ए प्रथम वर्ष

परास्नातक स्तर पर दिनांक 12/11/2024 को परिषदीय प्रतियोगिताएं हुई जिनके परिणाम निम्न प्रकार है

1. व्यंजन प्रतियोगिता

प्रथम – पूर्णिमा वर्मा एम ए प्रथम वर्ष
द्वितीय – प्रिया यादव एम ए द्वितीय वर्ष
तृतीय – अंजलि एम ए प्रथम वर्ष

2. मेहंदी प्रतियोगिता

प्रथम – संयोगिता यादव एम ए प्रथम वर्ष
द्वितीय – रंजना सैनी एम ए प्रथम वर्ष
तृतीय – वैष्णवी गुप्ता एम ए प्रथम वर्ष

Anshika Saxena
M.A. Home Science
Topper
71.4%

गृह विज्ञान विभाग द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाते हैं जिसके अंतर्गत दिनांक 9 एवं 10 सितंबर 2024 को ऊषा कंपनी द्वारा छात्राओं को कंपनी द्वारा लांच की गई नई तकनीकी मशीनों के बारे में जानकारी एवं प्रशिक्षण दिया गया. दिनांक 12/11/24 से 14/11/24 तक K–4 एंटीक ब्यूटी पार्लर की संचालिका श्रीमती प्रित्मा वर्मा द्वारा छात्राओं को हेल्थ एवं स्किन तथा ब्यूटीशियन कोर्स का तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया जिसमें लगभग 70 से 80 छात्राओं ने प्रतिदिन प्रतिभाग किया और प्रशिक्षण का लाभ प्राप्त किया. इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने के उपरांत छात्राएं भविष्य में ब्यूटीशियन को व्यवसाय एवं आय अर्जन के रूप में अपना सकती हैं.

गृह विज्ञान विभाग की प्राध्यापिका प्रोफेसर रश्मि श्रीवास्तव के गाइडेंस में 07 शोध छात्राएं एवं प्रोफेसर किरन सिंह के गाइडेंस में 6 शोध छात्राएं शोध कार्य में अध्यनरत है.

वर्ष 2024–25 में एम ए अंतिम वर्ष की छात्रा कुमारी इकरा ने 72.2: अंक प्राप्त करके कक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया.

अर्थशास्त्र विभाग
वार्षिक आख्या 2023–2025

डॉ0 अमितेन्द्र सिंह
डॉ0 निशी मिश्रा

- **बी.ए प्रथम वर्ष – निबन्ध प्रतियोगिता**
- **प्रथम स्थान** – प्रज्ञा तिवारी D/0 राकेश तिवारी
- **द्वितीय स्थान** – अदिति सिंह D/0 रामचन्दर
- **तृतीय स्थान** – स्वति कनौजिया D/0 प्रेम कुमार
- **बी.ए द्वितीय वर्ष – पोस्टर प्रतियोगिता**
- **प्रथम स्थान** – दीपाक्षी शुक्ला
- **द्वितीय स्थान** – प्रिया सक्सेना
- **तृतीय स्थान** – वैष्णवी
- **बी.ए तृतीय वर्ष – विचार गोष्ठी (विकसित भारत 2047)**
- प्रथम स्थान – प्रीति राजपूत
- **द्वितीय स्थान** – मुस्कान
- **तृतीय स्थान** – हर्षिता सैनी
- **एम.ए प्रथम वर्ष –**
- **प्रथम स्थान** – शिवानी
- **द्वितीय स्थान** – शुंभागना वर्मा
- **तृतीय स्थान** – शिवानी यादव
- **एम.ए द्वितीय वर्ष – क्विज प्रतियोगिता**
- **प्रथम स्थान** – अनामिका यादव श्री देवेन्द्र सिंह
- **द्वितीय स्थान** – शिल्पी राजपूत श्री खुशीराम राजपूत
- **तृतीय स्थान** – वरीशा परवीन सकील अंसारी

Nishi Yadav
M.A. Economics
Topper
71.8%

अर्थशास्त्र विभाग के अंतर्गत दिनांक 04/09/24 को विभागीय परिषद का गठन किया गया, जिसमे अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव एवं कक्षा प्रतिनिधियों का चुनाव छात्राओं की सर्वसम्मति से किया गया।

- **अध्यक्ष** – शालू कौशल, एम.ए द्वितीय वर्ष
- **उपाध्यक्ष** – शुभांगना वर्मा, एम.ए प्रथम वर्ष
- **सचिन** – हर्षिता सैनी, बी.ए तृतीय वर्ष
- **संयुक्त सचिव** – सहर जैदी, बी.ए द्वितीय वर्ष
- **सांस्कृतिक सचिव** – प्रज्ञा तिवारी

कक्षा प्रतिनिधि

एम.ए द्वितीय वर्ष – शिल्पी राजपूत
एम.ए प्रथम वर्ष – नगमा फातिमा
बी.ए तृतीय वर्ष – प्रीती राजपूत
बी.ए द्वितीय वर्ष – कोमल राठौड़

विभागीय संगोष्ठी

दिनांक 18 अक्टूबर 2024 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला महाविद्यालय राजाजीपुरम लखनऊ में प्राचार्य महोदय प्रोफेसर रमेश चंद्र वर्मा जी की अध्यक्षता में अर्थशास्त्र परिषदीय प्रतियोगिता विषय – "विकसित भारत 2047" का आयोजन किया गया। बी.ए पंचम सेमेस्टर की छात्राओं के द्वारा विषय पर आयोजित 'विचार गोष्ठी प्रतियोगिता' में प्रीति राजपूत प्रथम, मुस्कान द्वितीय तथा हर्षिता सैनी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। डॉ. अमितेंद्र सिंह द्वारा अपने वक्तव्य में इस विषय पर प्रकाश डाला गया तथा 2047 के लक्ष्य को परिभाषित किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर आर. सी. वर्मा जी द्वारा बहुत ही व्यावहारिक एवं आनुभाविक दृष्टिकोण से भारत को 2047 में विकसित भारत के रूप में देखने का दृश्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन अर्थशास्त्र विभाग की डॉ. निशी मिश्रा द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक एवं अर्थशास्त्र विषय की छात्राएं उपस्थित रहीं।

पोस्टर प्रतियोगिता

बी.ए तृतीय सेमेस्टर में इस विषय पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में दीपाक्षी शुक्ला प्रथम, प्रिया सक्सेना, द्वितीय तथा वैष्णवी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। एम.ए प्रथम सेमेस्टर की छात्राओं द्वारा अर्थशास्त्रियों के विचार विषय पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में शिवानी प्रथम शुभांगना द्वितीय तथा शिवानी यादव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक मंडल में महाविद्यालय के डॉ. विपिन कुमार शुक्ला एवं डॉ. भानु प्रताप ने अपना अमूल्य योगदान दिया।

राजनीति शास्त्र विभागीय आख्या 2024–25

डॉ. स्मिता पाण्डेय
विभाग प्रभारी
राजनीतिशास्त्र विभाग

राजनीति शास्त्र विभाग में प्रतिवर्ष की भांति वर्ष 2024–25 में भी राजनीति शास्त्र पढ़ने वाली छात्राओं से विभागीय परिषद का गठन दिनांक 5.9.2024 को किया गया, जिसके पदाधिकारी निम्नवत हैं–

अध्यक्ष श्रेया वर्मा बी ए तृतीय वर्ष, उपाध्यक्ष वंदना यादव B.A द्वितीय वर्ष , सचिव आरती राजभर B.A प्रथम वर्ष। कक्षा प्रतिनिधि के रूप में बी.ए तृतीय वर्ष में सिद्दिकी खातून, बी.ए द्वितीय वर्ष में मुस्कान राठौर आफरीन अंसारी, बी.ए प्रथम वर्ष में कोमल वर्मा और प्रतिज्ञा सोनी का चयन छात्राओं द्वारा किया गया।

पठन–पाठन के अतिरिक्त छात्राओं को वर्ष पर्यंत विभागीय एवं अन्य गतिविधियों में संलग्न रखा गया । विभागीय परिषद की प्रतियोगिता के अंतर्गत भाषण निबंध एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया विजेताओं के नाम निम्नवत है –

श्रेया वर्मा प्रथम स्थान, हर्षिता सैनी द्वितीय स्थान, काजल गौतम तृतीय स्थान।अन्य विभागीय गतिविधियों के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस एवं विश्व मानवाधिकार दिवस पर निबंध ,पोस्टर , कोलाज प्रतियोगिता का आयोजन विभाग द्वारा कराया गया जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता। विजयी छात्राओं में श्रेया वर्मा ,अंशु कुमारी ,पल्लवी श्रीवास्तव, मुस्कान राठौर एवं मुस्कान का नाम प्रमुख है।

बी० ए० प्रथम वर्ष (भाषण प्रतियोगिता शीर्षक–असहयोग आन्दोलन)

क्रमांक	छात्रा का नाम	कक्षा में स्थान
1.	शाम्भवी त्रिपाठी	प्रथम
2.	दृष्टि चौरसिया	द्वितीय
3.	अनन्या मिश्रा	तृतीय
4.	रुपाली यादव	सांत्वना

बी० ए० द्वितीय वर्ष (निबन्ध प्रतियोगिता शीर्षक भारतीय संघवाद)

1.	पल्लवी श्रीवास्तव	प्रथम
2.	मानसी	द्वितीय
3.	खुशी भारद्वाज	तृतीय

बी. ए. तृतीय वर्ष (क्विज प्रतियोगिता – मूल अधिकार एवं मूल कर्तव्य)

1.	श्रेया वर्मा	प्रथम
2.	हर्षिता सैनी	द्वितीय
3.	काजल गौतम	तृतीय

संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस प्रतियोगिता परिणाम

निबन्ध प्रतियोगिता

1.	श्रेया वर्मा	प्रथम
2.	अंशु कुमारी	द्वितीय
3.	पल्लवी	तृतीय

पोस्टर प्रतियोगिता

1.	अंशु कुमारी	प्रथम
2.	मुस्कान राठौर	द्वितीय
3.	मुस्कान	तृतीय

मानवाधिकार दिवस प्रतियोगिता परिणाम

पोस्टर प्रतियोगिता

1.	श्रेया वर्मा	प्रथम
2.	माही रावत	द्वितीय
3.	हर्षिता सैनी	तृतीय

निबन्ध प्रतियोगिता

1.	श्रेया वर्मा	प्रथम
2.	काजल गौतम	द्वितीय
3.	माही रावत	तृतीय

समाजशास्त्र विभाग
वार्षिक आख्या 2024–25

डॉ0 नेहा जैन
डॉ0 तमन्ना

समाजशास्त्र विभाग के अंतर्गत दिनांक 04/09/24 को विभागीय परिषद का गठन किया गया जिसमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव एवं कक्षा प्रतिनिधियों का चुनाव छात्राओं की सर्वसम्मति से किया गया।

- **अध्यक्ष**– विभा सिंह, एम.ए द्वितीय वर्ष
- **उपाध्यक्ष**– उजाला रावत, एम.ए प्रथम वर्ष
- **सचिन**– तनुजा सोनवानी, एम.ए प्रथम वर्ष

कक्षा प्रतिनिधि –

एम.ए प्रथम वर्ष– तनु सिंह
अंशु यादव
एम.ए द्वितीय वर्ष– वर्तिका पाल
बी.ए तृतीय वर्ष– नैंसी गुप्ता
उपासना राजपूत
बी.ए द्वितीय वर्ष– अनुष्का कनौजिया
प्रिया गुप्ता
बी.ए प्रथम वर्ष– शिवांगी शुक्ला
सृष्टि गुप्ता

समाजशास्त्र विभाग की छात्राओं द्वारा महाविद्यालय में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

छात्राओं की बहुमुखी प्रतिभा को सकारात्मक मंच देने का विभाग के द्वारा प्रयास किया गया। इसके अंतर्गत विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 18/10/2024 "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" की थीम पर **लोक नृत्य प्रतियोगिता, लोकगीत प्रतियोगिता, विविध क्षेत्रीय व्यंजन प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता** आयोजित की गई।

समाजशास्त्र विभाग के द्वारा दिनांक 14 नवंबर 2024 को जनजातीय गौरव दिवस मनाया गया। भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में जनजातीय समाज के योगदान पर आधारित इस कार्यक्रम में छात्राओं ने जनजाति समाज के विविध पक्षों पर पोस्टर प्रेजेंटेशन और भाषण प्रतियोगिता के माध्यम से प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में निर्णायक मंडल के रूप में प्रो॰प्रीति वाजप्ये एवं डॉ0 अमितेंद्र सिंह उपस्थित रहे।

महाविद्यालय में आयोजित भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेई जन्म शताब्दी समारोह कार्यक्रम में समाजशास्त्र विभाग की प्रभारी डॉ0 नेहा जैन के प्रथम काव्य संग्रह **"भाव झंकृति"** का विमोचन किया गया।

विजयी प्रतिभागियों के नाम

1. लोकव्यंजन प्रतियोगिता परिणाम
   - **प्रथम**– सरिता रावत (बी०ए० तृतीय वर्ष) पिता का नाम – स्व० राम शंकर रावत
   - **द्वितीय**– अंशिका गौतम (बी०ए० तृतीय वर्ष) पिता का नाम – श्री संतोष कुमार
   - **तृतीय**– नैन्सी गुप्ता (बी०ए० तृतीय वर्ष) पिता का नाम – श्री संतोष कुमार
2. लोकगीत प्रतियोगिता परिणाम
   - **प्रथम**– सोनाली यादव (एम०ए० प्रथम वर्ष)
   - **द्वितीय**– उजाला रावत (एम०ए० प्रथम वर्ष)
   - **तृतीय**– अंशु यादव (एम०ए० प्रथम वर्ष)
3. लोकनृत्य प्रतियोगिता परिणाम
   - **प्रथम**– उजाला रावत (एम०ए० प्रथम वर्ष)
   - **द्वितीय**– सृष्टि गुप्ता (बी०ए० प्रथम वर्ष)
   - **तृतीय**– प्रियंका मिश्रा (बी०ए० प्रथम वर्ष)
4. रंगोली प्रतियोगिता परिणाम
   - **प्रथम**– प्रीती (बी०ए० तृतीय वर्ष)
   - **द्वितीय**– वर्तिका पाल (एम०ए० द्वितीय वर्ष)
   - **तृतीय**– शिवानी यादव

सर्वोच्च अंक
संध्या गुप्ता – सत्र 2024–2025
एम०ए० समाजषास्त्र 74.33%

मनोविज्ञान विभाग
सत्र 2024–25

ममता अंबुजाननी
विभाग प्रभारी

मनोविज्ञान विभाग द्वारा मनोविज्ञान परिषद् का गठन दिनांक 24 सितंबर 2025 को सत्र 2024–25 के लिए किया गया। इस परिषद का उद्देश्य मनोविज्ञान विभाग की छात्राओं को विषय से जुड़ी सामाजिक घटनाओं की जानकारी देना एवं उनकी समस्याओं का निदान करना है, इसके साथ ही विभाग में सम्पन्न होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित करना हैं इस परिषद के अंतर्गत छः पदों के सापेक्ष छात्राओं का चयन किया गया, जिसका विवरण निम्नलिखित है –

पद	नाम	कक्षा
अध्यक्ष	अंशिका साहू	B.A तृतीय वर्ष
उपाध्यक्ष	नंदनी कनौजिया	B.A द्वितीय वर्ष
सचिव	कोमल सिंह	B.A प्रथम वर्ष
कक्षा प्रतिनिधि	प्रियापाल	B.A तृतीयवर्ष
कक्षा प्रतिनिधि	रुखसार	B.A द्वितीय वर्ष
कक्षा प्रतिनिधि	प्रीतमलिक	B.A प्रथमवर्ष

मनोविज्ञान विभाग की परिषदीय प्रतियोगिताओं में दिनांक 16/10/2024 को दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें निबंध लेखन एवं पोस्टर प्रतियोगिता है।

"विद्यार्थी जीवन में तनाव का प्रभाव एवं इसका प्रबंधन" विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं के नाम निम्नवत हैं:

प्रथम स्थान–	साक्षी अवस्थी–	B.A प्रथम वर्ष
द्वितीय स्थान–	जमन फ़ातिमा–	B.A तृतीय वर्ष
तृतीय स्थान –	रुखसार–	B.A द्वितीय वर्ष

"विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस "विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं के नाम निम्नवत हैं:

प्रथम स्थान –	अनाम खातून–	B.A प्रथम वर्ष
द्वितीय स्थान–	मुस्कान गुप्ता–	B.A प्रथम वर्ष
तृतीय स्थान –	साक्षी दुबे–	B.A प्रथम वर्ष

वाणिज्य परिषद आख्या
वर्ष 2023–25

प्रो० रमेश चन्द्र वर्मा
प्रो० पवन कुमार मौर्य

प्राचार्य प्रोफेसर डॉ0 आर. सी. वर्मा की अध्यक्षता में वर्ष 2023.24 का वाणिज्य परिषद का गठन वाणिज्य संकाय के रुम नं0 27 में दिनांक 02/11/2023 के सम्पन्न हुआ जिसमें सम्मति से निम्न कार्यकारिणी का गठन हुआ –

अध्यक्ष – पलक गौड बी कॉम तृतीय वर्ष
उपाध्यक्ष – तूबा सिद्दीकी बी कॉम द्वितीय वर्ष
सचिव – सिमरन खान बी कॉम प्रथम वर्ष

कक्षा प्रतिनिधि के रूप में काजल यादव बी कॉम तृतीय वर्ष, अर्चिता यादव बी कॉम द्वितीय वर्ष एवं अनमता खान बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष तथा विशिष्ट कार्यकर्ता के रूप में जैनब खान, श्वेता गुप्ता, संजना, उदिशा, अंजलि, गरिमा, शिवानी, शुभांगी तथा मुस्कान आदि का सराहनीय योगदान रहा तथा निम्न कार्यकम का आयोजन परिषद द्वारा आयोजित किये गये तथा निम्नलिखित सीन प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया गया ।

1. निबन्ध लेखन प्रतियोगिता
विषय: शिक्षा के साथ दक्षता का महत्व

	नाम छात्रा	कक्षा	स्थान
1.	अनुष्का	बी कॉम द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	श्वेता गुप्ता	बी कॉम प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	भूमि शर्मा	बी कॉम प्रथम वर्ष	तृतीय

Shruti Dixit
B.Com. Topper
75.6%

2. भाषण प्रतियोगिता
विषय वाणिज्य का व्यावहारिक जीवन में उपयोग

1.	तूबा सिद्दीकी	बी कॉम द्वितीय	प्रथम स्थान
2.	अर्चिता यादव	बी कॉम द्वितीय	द्वितीय स्थान
3.	अनमता खान	बी कॉम प्रथम	तृतीय स्थान

3. बिजनेस क्विज प्रतियोगिता

1.	अर्पिता यादव	बी कॉम द्वितीय	प्रथम स्थान
2.	शालिनी यादव	बी कॉम द्वितीय	द्वितीय स्थान
3.	शिवानी वर्मा	बी कॉम प्रथम	द्वितीय सीन

वाणिज्य परिषद का गठन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर डॉ0 आर. सी. वर्मा की अध्यक्षता में दिनांक 04/09/2024 को हुआ जिससे सर्व सामग्री से निम्न पदाधिकारी का चयन किया गया –

अध्यक्ष – अर्पिता यादव बी.कॉम. तृतीय वर्ष
उपाध्यक्ष – सिमरन बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
सचिव – शिवानी कश्यप बी.कॉम. प्रथम वर्ष

कक्षा प्रतिनिधि के रूप में बी कॉम तृतीय वर्ष, लवीशा, भूमि शर्मा, बी कॉम द्वितीय वर्ष तथा दिव्या, जमा रेखा एवं जस मानिया तथा विशिष्ट प्रतिनिधि के रूप में अलीशा, मानसी, साक्षी, अनमता, श्वेता, इत्यादि का चयन किया गया। तथा परिषद द्वारा निम्न कार्यकम/प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा निम्न छत्राओं ने विजयी स्थान प्राप्त किया।

1. निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

	नाम छात्रा	कक्षा	स्थान
1.	श्वेता गुप्ता	बी कॉम द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	भूमि शर्मा	बी कॉम द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	अर्पिता यादव	बी कॉम तृतीय वर्ष	तृतीय

2. भाषण प्रतियोगिता
विषय: वाणिज्य विषय की छात्र/छात्राओ को उपलब्ध अवसर

1.	श्वेता गुप्ता	बी कॉम द्वितीय	प्रथम स्थान
2.	अर्चिता गुप्ता	बी कॉम तृतीय	द्वितीय स्थान
3.	तस्मानिया	बी कॉम प्रथम	तृतीय स्थान

3. बिजनेस क्विज प्रतियोगिता

1.	अर्पिता यादव	बी कॉम तृतीय	प्रथम स्थान
2.	कोमल कश्यप	बी कॉम द्वितीय	द्वितीय स्थान
3.	अंशिका गुप्ता	बी कॉम प्रथम	द्वितीय स्थान

नाटकः छोटे दीन दयाल

25 सितम्बर 2024 को दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती के उपलक्ष्य एक नाटक प्रस्तुत किया गया। इस नाटक के माध्यम से दीनदयाल जी के जीवन तथा व्यक्तित्व के कुछ महत्वपूर्ण किस्से प्रस्तुत किए गये। इस नाटक का उद्देश्य जन–जन को मातृभूमि की रक्षा हेतु प्रेरणा देना है। इस नाटक के माध्यम से दीनदयाल जी के चरित्र के कुछ महत्वपूर्ण किस्सों को प्रस्तुत किया गया।

इस नाटक के पात्र –

छोटे दीनदयाल –	भूमि शर्मा
बढ़े दीनदयाल –	श्वेता गुप्ता
दीनदयाल जी के सहपाठी –	फलक
दीनदयाल जी की माँ मास्टरनी –	अर्चिता यादव
पत्रकार –	कोमल कश्यप
हरीश –	अनअमता
विपक्षी नेता –	सिमरन
छात्राएँ –	जानवी और आरती।

राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC)

सत्र 2024–25 महाविद्यालय में U.P.19 गर्ल्स बटालियन से संबद्धता प्राप्त कर नवगठित एनसीसी इकाई की स्थापना हुई। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर रमेश चंद्र वर्मा जी के संरक्षण एवं एनसीसी प्रभारी डॉ0 नेहा जैन के कुशल निर्देशन में 20 कैडेट्स प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न दिवसों
पर एनसीसी कैडेट्स ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। महाविद्यालय में एनसीसी कक्ष का उद्घाटन प्राचार्य प्रो० रमेश चंद्र वर्मा द्वारा किया गया। U.P.19 गर्ल्स बटालियन के सान्निध्य में कैडेट्स की पहली यूनिट हेतु लिखित परीक्षा एवं शारीरिक परीक्षण की परीक्षा महाविद्यालय में संपन्न हुई।

- महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में एनसीसी छात्राओं द्वारा राजाजीपुरम क्षेत्र में नुक्कड़ नाटक का प्रस्तुतीकरण किया गया।
- रोड सेफ्टी क्लब एवं एनसीसी के संयुक्त तत्त्वावधान में महाविद्यालय में नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन आयोजन किया गया।
- महाविद्यालय में एनसीसी कैडेट्स द्वारा श्रमदान किया गया।
- महाविद्यालय में संपन्न हुए रक्तदान शिविर में एनसीसी कैडेट्स द्वारा सहभागिता एवं अनुशासन कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया गया।

भौतिक विज्ञान

प्रो0 अखिलेश कुमार

दिनांक 15.10.2024 को भौतिक विज्ञान परिषद की तरफ से अर्धचालक एवं इनके अनुप्रयोग (Semi conductor and its applications) विषय पर PPT Presentation प्रतियोगिता आयोजित की गयी तथा दिनांक 22–10–2024 को इसी विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी, जिसमें B-Sc- I, B- S- III , B- Sc- Vth SEM की भौतिक विज्ञान की छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करने वाली छात्राओं के नाम निम्नवत हैं–

- B.Sc. Vth SEM

1 अक्सा खातून – श्री हाफिज जहीरूद्दीन – प्रथम
2. अंजली पाल – श्री संतोष – द्वितीय
3. सविता देवी – श्री राम चन्दर – तृतीय
4. मातंगी रावत – श्री अशोक रावत – तृतीय
5. अर्पिता शर्मा – श्री शर्वेष शर्मा – सांत्वना

B.Sc. 3rd SEM

1. स्नेहा पाण्ड्रेय – तृतीय
2. अनुष्का मिश्रा – श्री अरुण कुमार मिश्रा – प्रथम
3. अर्पिता गुप्ता – श्री नवल किशोर गुप्ता – द्वितीय
4. साक्षी श्रीवास्तव – श्री कमलेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव – द्वितीय
5. अनन्या गुप्ता – श्री मनीष गुप्ता – तृतीय

B.Sc. Ist SEM

1. वर्षा दीक्षित – श्री संदीप कुमार दीक्षित – प्रथम
2. दीप्ती सिंह – श्री राम किर्तन सिंह – द्वितीय

निर्णायक
1. डा0 मीशू सिंह
2. डा0 प्रज्ञा मिश्रा

गणित विभाग
सत्र 2024–25

डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा

गणित परिषद का उद्देश्य कॉलेज में गणित के प्रति छात्राओ की रुचि को बढ़ाना और गणित के विभिन्न पहलुओं को समझाने के लिए मंच प्रदान करना है। यह परिषद छात्राओ को गणित के सिद्धांतों और उनके अनुप्रयोगों के बारे में जानकारी देने के साथ–साथ उनकी रचनात्मक सोच और समस्या समाधान क्षमता को भी विकसित करती है। गणित परिषद का मुख्य उद्देश्य गणितीय शिक्षा को सरल और मनोरंजक बनाना है, ताकि विद्यार्थी गणित को एक चुनौती के रूप में न देखकर एक रुचिकर विषय के रूप में देखें।

Sandhya Gupta
B.Sc. Topper
71.7%

गणित परिषद की गतिविधियाँ:

1. गणितीय कार्यशालाएँ: परिषद द्वारा नियमित रूप से गणित पर कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं, जिसमें गणित के कठिन विषयों को सरल रूप में समझाया जाता है। इन कार्यशालाओं में विशेषज्ञों और गणितज्ञों द्वारा छात्रों को गणितीय विधियों और रणनीतियों से परिचित कराया जाता है।

2. गणितीय प्रतियोगिताएँ: गणित परिषद विभिन्न प्रकार की गणितीय प्रतियोगिताएँ आयोजित करती है जैसे गणित क्विज, संख्या पजल्स, और गणितीय समस्याओं का समाधान। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने से छात्रों का मनोबल बढ़ता है और उनकी सोचने की क्षमता में सुधार होता है।

3. गणितीय सेमिनार और चर्चाएँ: गणित पर आधारित सेमिनार और चर्चाएँ भी आयोजित की जाती हैं, जिनमें गणित के विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा की जाती है। इन सेमिनारों में विद्यार्थी अपनी जिज्ञासाओं को भी प्रस्तुत कर सकते हैं और विशेषज्ञों से उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।

4. प्रेरणादायक गणितीय दृष्टिकोण: परिषद द्वारा समय–समय पर गणित के प्रसिद्ध गणितज्ञों की जीवनी और उनके योगदान पर चर्चा की जाती है। इससे छात्रों को प्रेरणा मिलती है और वे गणित को एक व्यावहारिक और उपयोगी विषय के रूप में देखते हैं।

5. गणितीय प्रदर्शनी: परिषद गणित के सिद्धांतों और अनुप्रयोगों को प्रदर्शित करने के लिए गणितीय प्रदर्शनी का आयोजन करती है। इसमें छात्र अपने प्रोजेक्ट्स और गणितीय मॉडल प्रस्तुत करते हैं, जो अन्य विद्यार्थियों को गणित के प्रति रुचि उत्पन्न करते हैं।

गणित परिषद ने अपने उद्देश्यों को पूरा करते हुए, कॉलेज में गणित के प्रति विद्यार्थियों की रुचि को बढ़ाया है। इसके माध्यम से छात्रों ने न केवल गणित के कठिन पहलुओं को समझा है, बल्कि उनकी सोच और विश्लेषणात्मक क्षमता भी बढ़ी है। आगामी समय में, गणित परिषद अपने आयोजनों के माध्यम से छात्रों के लिए और भी रोमांचक और ज्ञानवर्धक गतिविधियाँ आयोजित करेगी।

विज्ञान क्लब की रिपोर्ट

प्राचार्य डॉ. रमेश चंद्र वर्मा के नेतृत्त्व में महाविद्यालय में विज्ञान क्लब सीपित किया गया। क्लब के अध्यक्ष डॉ. अखिलेश कुमार,प्रभारी डॉ. प्रज्ञा मिश्रा और सदस्य डॉ. रमेश बाबू, डॉ. मीशू सिंह, डॉ. ऋचा पांडे और श्रीमती किरणलता वर्मा हैं विज्ञान क्लब का उद्देश्य छात्राओं में विज्ञान के प्रति रुचि और जागरूकता बढ़ाना है। यह क्लब उन छात्राओं के लिए एक आदर्श मंच प्रदान करता है, जो विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी रुचि और ज्ञान को विकसित करना चाहती हैं। इस क्लब में छात्राओं को नए–नए वैज्ञानिक सिद्धांतों, खोजों और प्रयोगों के बारे में जानकारी दी जाती है। क्लब में सभी विषयों की छात्राओ को सदस्यता लेने का अवसर मिलता है, और वे अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न गतिविधियों में भाग ले सकती हैं। यह क्लब विद्यार्थियों को टीमवर्क और नेतृत्व के गुण भी सिखाता है।विज्ञान क्लब ने अपने उद्देश्यों को पूरा करते हुए, छात्राओं के बीच विज्ञान के प्रति जागरूकता और रुचि को बढ़ाया है। इस क्लब की गतिविधियों ने छात्राओं में अनुसंधान, नवाचार और समस्या हल करने की क्षमता को विकसित किया है। आगे भी यह क्लब अपनी गतिविधियों के माध्यम से छात्राओं को विज्ञान की गहरी समझ और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करता रहेगा।

अंतर्राष्ट्रीय ओजोन दिवस का आयोजन (18–09–24–19–09–24) "जीवन के लिए ओजोन" चार्ट प्रतियोगिता, पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन और राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह(23.08.24)

रसायन विज्ञान विभाग

आख्या सत्र 2024–25

डॉ0 रमेश बाबू
डॉ0 मीशू सिंह

सत्र 2024–25 के लिए रसायन विज्ञान विभागीय परिषद का गठन किया गया, जिसमें रूपा दुबे–अध्यक्ष, सायमा आरिफ–उपाध्यक्ष, वैभवी तिवारी–सचिव, मधुगौतम–उपसचिव एवं मातंगी रावत–सांस्कृतिक सचिव चयनित हुई। इसके अतिरिक्त प्रियांजलि मौर्य, सविता, शगुन गुप्ता, प्रीति यादव, मुस्कान रावत, तनु गौतम, एवं दिव्यांशी शर्मा क्रमशः एम. एस–सी – सेमेस्टर I, एवं B.Sc सेमेस्टर IV, III, तथा I के लिए कक्षा प्रतिनिधि नियुक्त की गईं।

रसायन विज्ञान विभाग द्वारा सत्र पर्यन्त छात्राओं के बहुमुखी विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं कराई गईं। वर्तमान सत्र में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर Online quiz, Speech Competition एवं power point Presentation प्रतियोगिताओं का आयोजन विभाग द्वारा करवाया गया। इसके अतिरिक्त M.Sc की छात्रों द्वारा Student Seminor का भी आयोजन किया गया जिससे छात्राओं में ICT Learining को बढ़ावा मिला।

इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान विभाग द्वारा IPR पर तीन दिवसीय ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन कराया गया। विभाग के प्राध्यापकों ने विभिन्न सेमिनार एवं कॉन्फ्रेंस में प्रतिभाग किया।

Km. Aarti Rastogi
M.Sc. Topper
60.9%

जन्तु विज्ञान विभाग आख्या
सत्र – 2024–2025

किरण लता वर्मा
विभाग प्रभारी

सत्र 2024–25 में दिनांक 04.09.24 को जन्तु विज्ञान विभाग परिषद का गठन किया गया। जिसमे सर्वसम्मति से बी०एस–सी तृतीय वर्ष की अनामिका राजपूत को अध्यक्ष चुना गया व बी०एस–सी द्वितीय वर्ष की शालिनी यादव को उपाध्यक्ष व बी०एस–सी प्रथम वर्ष की निक्की कौर को सचिव पद मिला।

कक्षा प्रतिनिधि–

बी०एस–सी प्रथम वर्ष – यशी द्विवेदी
बी०एस–सी द्वितीय वर्ष – मुस्कान बानो शाह
बी०एस–सी तृतीय वर्ष – निहालिका

बी०एस–सी प्रथम वर्ष– पोस्टर प्रतियोगिता

प्रथम – निक्की कौर पुत्री श्री अशोक सिंह
द्वितीय – इशा पटेल पुत्री श्री विजय कुमार कनौजिया
तृतीय – यशी द्विवेदी पुत्री श्री पदम बिहारी द्विवेदी

बी०एस–सी द्वितीय वर्ष – निबन्ध प्रतियोगिता

प्रथम – अंशिका गुप्ता पुत्री श्री चन्द्रभान गुप्ता
द्वितीय – शालिनी गौतम पुत्री श्री कृष्ण कुमार
तृतीय – वैभवी तिवारी पुत्री श्री राजेश कुमार तिवारी

बी०एस–सी तृतीय वर्ष – भाषण प्रतियोगिता

प्रथम – आंकाक्षा यादव पुत्री राम मूरत यादव
द्वितीय – सानिया वानो पुत्री श्री मो० उस्मान
तृतीय – शीतल गुप्ता पुत्री श्री श्रवण गुप्ता

वनस्पति विज्ञान विभागीय रिपोर्ट
वार्षिक सत्र 2024–2025

डॉ0 ऋचा पाण्डेय
विभाग प्रभारी

- दिनांक 01 अगस्त 2024 को वनस्पति विज्ञान विभाग की समस्त सेमेस्टर की कक्षाएँ आरंभ होने के पश्चात् विभागीय परिषद का गठन किया गया जिसमें निम्नलिखित छात्राओं को काउंसिल मेंम्बर सदस्य बनाया गया।

1. लक्ष्मी गौतम, पुत्री श्री राम प्रकाश – बी.एस.सी V सेमेस्टर – अध्यक्ष
2. वैष्णवी दुबे, पुत्री श्री अरुणकुमार दुबे – बी.एस.सी III सेमेस्टर – उपाध्यक्ष
3. शिवानी यादव, पुत्री श्री राज किशोर यादव – बी.एस.सी I सेमेस्टर – सचिव
4. सोनम गौतम, पुत्री श्री बुद्धिलाल गौतम, – बी.एस.सी I सेमेस्टर – कक्षा प्रतिनिधि
5. रिया मिश्रा, पुत्री श्री सन्तोष कुमार मिश्रा – बी.एस.सी III सेमेस्टर – कक्षा प्रतिनिधि
6. आराधना कश्यप, पुत्री श्री रामू कश्यप – बी.एस.सी V सेमेस्टर – कक्षा प्रतिनिधि

- दिनांक 07.10–2024 को बी.एस.सी. V सेमेस्टर की छात्राओं हेतु पॉट प्रतियोगिता का आयोजन हुआ था जिसमे हा ममता अम्बुजाननी, डॉ मोनिका द्विवेदी एवं डॉ. प्रज्ञा मिश्रा निर्णनायक मंडल में थे । इसकी विजेता निम्न थीं :–

(अ) अराधना कश्यप–पुत्री श्री रामू कश्यप – I
(ब) सानिया बानो – पुत्री श्री मोहम्मद उस्मान – II
(स) मानसी कन्नौजिया, पुत्री श्री मुन्नी लाल – III

- दिनांक 25.11.2024 को बी.एस.सी IIIसेमेस्टर की छात्राओं हेतु हरबेरियम प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें ममता अम्बुजाननी, डॉ.मीशू सिंह एवं श्रीमती किरणलता वर्मा निर्णायक गण रहे। इसका परिणाम निम्न है :–
- (अ) आयशा हामिद, पुत्री श्री मोहम्मद हामिद – I
- (ब) वैभवी तिवारी, पुत्री श्री राजेश कुमार तिवारी – II
- (स) रिया मिश्रा, पुत्री श्री सन्तोष कुमार मिश्रा – III
- दिनांक 27 नवम्बर 2024 को सेमिनार प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता I सेमेस्टर के लिए आयोजित की गई थी जिसमें शामिल/उपस्थित निर्णायकमंडल के अतिथि प्राध्यापकगण जैसे डॉ.पी के मौर्या, डॉ.मीशू सिंह एवं श्रीमती किरणलता वर्मा ने निम्न छात्राओं को विजेता घोषित किया।

(अ) काव्या श्रीवास्तव, पुत्री श्री अमित श्रीवास्तव – III

(ब) नन्दिनी सोनी – पुत्री श्री नीरज सोनी – II

(क) निक्की कौर – पुत्री श्री अशोक सिंह – I

- दिनांक 23 सितंबर 2024 को विभाग द्वारा हरबेरियम कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमे छात्राओं को वनस्पति को बचाने हेतु हरबेरियम बनाने की विधि सिखाई गई थी। छात्राओं की प्रतिभागिता उत्साहवर्धक रही।
- अक्टूबर 2024 माह में छात्राओं के लिए एक शैक्षिक भ्रमण राजाजीपुरम् क्षेत्र का किया गया था जिसमें छात्राओं को विभिन्न वनस्पतियों, पेड़, पौधों को पहचानने उनके उपयोग, उनका संवर्धन करने की विधि, आदि के बारे में जानकारी दी गई थी।
- 16 सितंबर 2024 को वनस्पति विज्ञान विभाग एवं एन.एस.एस तथा साइंस क्लब द्वारा संयुक्त रूप से विश्व ओज़ोन दिवस का आयोजन किया गया था, जिसमें छात्राओं द्वारा ओज़ोन पर सेमिनार प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता एवं चार्ट प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया था जिसमें विभाग की छात्राओं को उनके सराहनीय योगदान हेतु सम्मानित किया गया था।
- सत्र 2024–2025 में ताम्बाकू निषेध समिति, एन.एस.एस एवं वनस्पति विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वाधान में एक, स्लोगन लेखन प्रतियोगिता तथा 'तम्बाकू निषेध एवं नशा उन्मूलन' विषम पर नवम्बर माह 2024 में निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था जिसके लिए विभाग की छात्राओं को प्रशास्ति पत्र भी प्रदान किया गया था।

सत्र 2024–2025 में वनस्पति विज्ञान विभाग में प्रवेश हेतु 474 फार्म/आवेदन आए थे जो कि पूर्व वर्ष से दो गुना हैं। यह दर्शाता है कि विषय वनस्पति विज्ञान एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक विषय है जिसकी लोकप्रियता महाविद्यालय मे दिन ब दिन बढ़ती जा रही है।

साथ ही साथ वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा समय समय पर साइंस क्लब द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में अपना सहयोग दिया है। इसके अतिरिक्त एन.एस.एस एवं रोबर्स रेंजर्स के विभिन्न कामक्रमों में भी वनस्पति विज्ञान विभाग ने अपना संपूर्ण योगदान दिया है।

वनस्पति विज्ञान विभाग का उद्देश्य जनमानस मे पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना, पेड़–पौधों की जानकारी को विस्तृत करना एवं जुलाई माह में अधिक से अधिक वृक्षारोपण करके महाविद्यालय एवं आस–पास के इलाकों को हरा–भरा रखना है, विभाग अपने उद्देश्य में सफल रहा है।

मिशन शक्ति – 5.0

मिशन शक्ति 5.0 उत्तर प्रदेश सरकार का प्रमुख कार्यक्रम है, जिसे महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान व आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया है। यह कार्यक्रम अक्टूबर 2024 से प्रारम्भ हुआ है, जो मई 2025 तक गतिमान रहेगा।

महिला एंव बाल विकास मंत्रालय से मिशन शक्ति योजना के लिए विस्तृत दिशा–निर्देश जारी किए हैं। इस योजना के अन्तर्गत महिला सुरक्षा, संरक्षण और सशक्तिकरण के लिए कार्य करना है। इस योजना का उद्देश्य महिलाओं को सम्पूर्ण जीवन चक्र में प्रभावित करने वाले मुद्दों पर विचार कर उनके जीवन में बदलाव लाने हेतु किये जाने वाले प्रयासों को करना है, जिससे राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इस योजना के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने, हिंसा के खतरे से मुक्त माहौल में अपने मस्तिष्क और शरीर के बारे में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने को प्रेरित करना है। मिशन शक्ति की दो उप योजनाएँ हैं संबल व सामर्थ्य, जहां संबल के घटकों में नारी अदालतों के नए घटक के साथ वन स्टॉप सेंटर (OAC), महिला हेल्पलाइन (WHL) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (B.BBP) है तथा सामर्थ्य के घटकों में उज्ज्वला, स्वाधार गृह, कामकाजी छात्रावास, राष्ट्रीय क्रेच योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना, गैप फंडिंग आदि।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि मिशन शक्ति योजना का मुख्य उद्देश्य आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण एंव राजनीतिक सशक्तिकरण है। अभी तक लगभग 1.5 लाख से अधिक आंगनबाड़ी केंद्र खोले गये हैं।
70 लाख से अधिक महिलाएँ एंव बच्चे मिशन शक्ति की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित हुये हैं तथा 30,000 से अधिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता महिलाओं व बच्चों को बेहतर स्वास्थ्य सेवायें प्रदान करने हेतु लगाये गये हैं। मिशन शक्ति के अन्तर्गत शिक्षा पर भी ध्यान दिया गया है तथा बालिकाओं को विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से समाज का प्रमुख हिस्सा बनाने के प्रयास किये गये हैं। जिसके अन्तर्गत पं. दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में एक टीम का गठन कर विभिन्न कार्यक्रमों को संपादित करवाने का उत्तरदायित्व महाविद्यालय के कुशल मार्गदर्शक प्राचार्य प्रो. रमेश चन्द्र वर्मा के संरक्षण मे किया गया। इसके अधिकारी प्रो. प्रीती वाजप्ये, डॉ. साधना सिंह एंव डॉ. निशी मिश्रा को बनाया गया। इन सभी अधिकारियों के सहयोग से महाविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों को कुशलतापूर्वक करवाया गया। जिसमें महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों एंव छात्राओ ने बड़े ही उत्साह से प्रतिभाग किया। जिनका विवरण निम्नवत हैं –

- छात्राओं को महाविद्यालय में उत्कृष्ट कार्य हेतु बैज प्रदान किया गया।
- सफल महिलाओं के साथ टॉक शो
- नेत्र परीक्षण शिविर
- निष्प्रोज्य वस्तुओं से उपयोगी सजावटी वस्तुओं के निर्माण पर आधारित कार्यशाला
- महिला हेल्प लाइन व विशाखा गाइड लाइन पर व्याख्यान
- गुड टच व बैड टच पर संगोष्ठी
- निबंध लेखन प्रतियोगिता विषय – " विज्ञापनों में महिला उपभोग्या के रूप में "।
- मेंहदी हुनर प्रतियोगिता
- "रक्तदान महादान जीवनदान" शिविर का आयोजन
- लखनऊ पुलिस उच्याधिकारियों द्वारा जागरूकता कार्यक्रम व छात्राओं द्वारा रैली में प्रतिभाग
- डिजिटल अरैस्ट पर वेवीनार
- पोस्टर प्रतियोगिता विषय – " महिला सशक्तिकरण में आर्थिक स्वावलम्बन "
- स्किल डबलपमेंट पर तीन दिवसीय कार्यशाला (व्यूटिशियन)
- कैरियर गाइडेंस हेतु एक दिवसीय सेमिनार
- रानी लक्ष्मी बाई जन्म दिवस पर संगोष्ठी
- प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
- रंगोली प्रतियोगिता विषय – 'मिशन शक्ति'
- स्लोगन लेखक प्रतियोगिता
- संविधान के निर्माण में महिलाओं की भूमिका पर भाषण प्रतियोगिता
- नुक्कड़ नाटक
- भारत की वीर महिलाएँ– जीवन चरित्र पर नाटकु का आयोजन
- महिलाओं की सुरक्षा सम्बन्धी हेल्प लाइन नम्बरो का दीवार लेखन
-

मिशन शक्ति – 5.0

GPS Map Camera
Lucknow, Uttar Pradesh, India
Pandit Deendayal Upadhyaya Government College Rajajipuram, Lucknow, Uttar Pradesh
PHASE 5

रोड सेफ्टी क्लब
सत्र 2024–2025

महाविद्यालय में गठित रोड सेफ्टी क्लब के अंतर्गत महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आरसी वर्मा जी की अध्यक्षता में महाविद्यालय की सड़क सुरक्षा नोडल अधिकारी डॉ. नेहा जैन एवं सदस्य डॉ. किरण लता वर्मा, डॉ. प्रज्ञा मिश्रा, डॉ. साधना सिंह यादव, डॉ. पूनम पांडे, डॉ. स्मिता पांडे, डॉ. मोनिका द्विवेदी एवं बी.ए.,बी.एस–सी, बी.कॉम की सदस्य छात्राओं के संयोजन में समय–समय पर सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान कार्यक्रमों का सफल संचालन किया गया।

इस क्रम में सर्वप्रथम 10 दिवसीय सड़क सुरक्षा अभियान दिनांक 1/8/2024 से 10/8/2024 तक संपन्न हुआ। जागरूकता संबंधी कार्यक्रमों में 'सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा' विषय पर भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, छात्राओं के मध्य संपन्न कराई गई।

जन सामान्य को यातायात के नियमों से परिचय कराने एवं दुर्घटनाओं से बचाव हेतु जागरूकता कार्यक्रमों मे रैली, नुक्कड़ नाटक, वॉल पेंटिंग आदि का आयोजन किया गया।

दिनांक 1.10.2024 से 15 अगस्त 2024 तक सड़क सुरक्षा पखवाड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस श्रृंखला में नुक्कड़ नाटक, शपथ ग्रहण, भाषण प्रतियोगिता, डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रदर्शन कार्यक्रम किये गये।

दिनांक 7.10.2024 को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजन किया गया। जिसमें श्री इंद्रपाल सिंह, ए.सी.पी ट्रैफिक पुलिस लाइन, लखनऊ, पंकज शर्मा, सेफ्टी मैनेजर, ट्रैफिक ट्रेनिंग पार्क, लखनऊ, सैयद एहतेशाम, मास्टर ट्रेनर, ट्रैफिक ट्रेनिंग पार्क, लखनऊ उपस्थित रहे।

महाविद्यालय की छात्राओं ने सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के अंतर्गत आयोजित स्तरीय एवं मंडल स्तरीय प्रतियोगिताओं में सहभागिता की।

जनपद स्तर पर भाषण प्रतियोगिता में

- योगिता त्रिपाठी, एम.ए द्वितीय वर्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त किया
- मनीषा अवस्थी, बी.ए द्वितीय वर्ष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया
- वैष्णवी दुबे,बी.एस–सी द्वितीय वर्ष ने पोस्टर प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया

वाहन चालकों एवं छात्राओं हेतु दिनांक 14.10.2024 को नेत्र परीक्षण शिविर लगाया गया 150 से अधिक छात्राओं ने नेत्र परीक्षण कराया।

दिनांक 1जनवरी से 31जनवरी तक सड़क सुरक्षा जागरूकता माह के अंतर्गत महाविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रम संपन्न किए गए, जिसका उद्देश्य जन जागरूकता अभियान को सफल बनाना है।

सदस्य

1– डॉ0 नेहा जैन (महाविद्यालय नोडल अधिकारी, एन0सी0सी0 प्रभारी)
2– डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा (राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी)
3– श्रीमती किरणलता वर्मा (राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी)
4– श्रीमती साधना सिंह यादव (सदस्य राष्ट्रीय सेवा योजना)
5– डॉ0 पूनम पाण्डेय (सदस्य राष्ट्रीय सेवा योजना)
6– डॉ0 स्मिता पाण्डेय (प्रभारी–रेंजर)
7– डॉ0 मोनिका द्विवेदी (सदस्य–रेंजर समिति)
8– डॉ0 सुमन कुमारी (सदस्य एन0सी0सी0)

अध्यक्ष छात्राएँ

1. कला संकाय – नैन्सी गुप्ता (बी0ए0 तृतीय वर्ष)
2. विज्ञान संकाय – सायमा आरिफ (बी0एस–सी तृतीय वर्ष)
3. वाणिज्य संकाय – अर्चिता यादव (बी0काम0 तृतीय वर्ष)

उपाध्यक्ष छात्राएँ

1. कला संकाय – अनुष्का कनौजिया (बी0ए0 द्वितीय वर्ष)
   मनीषा अवस्थी (बी0ए0 द्वितीय वर्ष)
2. विज्ञान संकाय – शगुन गुप्ता (बी0एस–सी द्वितीय वर्ष जीव विज्ञान)
   प्रिया सिंह (बी0एस–सी द्वितीय वर्ष गणित)
3. वाणिज्य संकाय – खुशी राठौर (बी0काम0 द्वितीय वर्ष)
   सिमरन (बी0काम0 द्वितीय वर्ष)

सचिव छात्राएँ

1. कला संकाय – लिपि (बी0ए0 द्वितीय वर्ष)
   दुर्गा यादव (बी0ए0 प्रथम वर्ष)
   कोमल मौर्या (बी0ए0 प्रथम वर्ष)
2. विज्ञान संकाय – द्वियांशी शर्मा (बी0एस–सी प्रथम वर्ष)
   पलक गुप्ता (बी0एस–सी प्रथम वर्ष)
   मधु गौतम (बी0एस–सी प्रथम वर्ष)
3. वाणिज्य संकाय – फलक (बी0काम0 प्रथम वर्ष)
   आस्था सिंह (बी0काम0 प्रथम वर्ष)
   खुशी वर्मा (बी0काम0 प्रथम वर्ष)

राष्ट्रीय सेवा योजना प्रगति आख्या (2024–25)

डॉ0 किरनलता वर्मा
डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की दो इकाइयाँ सद्भावना एवं प्रेरणा इकाई संचालित है। सत्र 2024–25 में प्रत्येक इकाई में 100– छात्राओं को प्रवेश दिया गया। प्रवेशित छात्राओं द्वारा वर्ष भर जन जागरूकता से संबंधित अनेक कार्यक्रम जैसे कि महिला शिक्षा एवं स्वावलंबन, मतदाता जागरूकता, सड़कसुरक्षा, स्वच्छता एवं वृक्षारोपण आदि कार्य किए गए। प्राचार्य डॉ रमेश चंद्र वर्मा की अध्यक्षता एवं राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ प्रज्ञा मिश्रा और डॉ किरणलता वर्मा के निर्देशन में चार एक दिवसीय शिविर और एक सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया,जिसमें मलिन बस्ती सरिपुरा और ज्योति प्रसाद वार्ड में जनजागरूकता एवं स्वच्छता से संबंधित कार्य छात्राओं द्वारा किए गए। इन शिविरों का उद्देश्य छात्राओं में सामाजिक सेवा के प्रति जागरूकता पैदा करना और उन्हें समाज की प्रमुख समस्याओं से अवगत कराना था। महाविद्यालय के स्वयं सेवकों ने विभिन्न सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लिया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करना था।

स्वच्छता अभियान के तहत स्वयं सेवकों ने आदर्श गांव सरिपुरामलीन बस्ती और कुंवर ज्योति प्रसाद वार्ड, लखनऊ में स्वच्छता अभियान चलाया। स्वयं सेवकों ने गंदगी और कचरे की सफाई की और लोगों को स्वच्छता के महत्त्व के बारे में जागरूक किया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण को स्वच्छ रखना और लोगों में स्वच्छता के प्रति सकारात्मक सोच पैदा करना था।

सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान में स्वयं सेवकों ने लोगों को सड़क सुरक्षा के नियमों और यातायात कानूनों के बारे में बताया। सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए उचित यातायात संकेतों और नियमों के पालन की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत स्वयं सेवकों ने लोगों को मतदान के अधिकार और कर्तव्यों के बारे में जागरूक किया। इस अभियान के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि प्रत्येक नागरिक का वोट लोकतंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह सरकार के गठन में योगदान करता है।

महिला शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए महिला शिक्षा के महत्व को समझाने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए। स्वयं सेवकों ने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लाभ के बारे में बताया और यह भी समझाया कि शिक्षा समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

छात्राओं द्वारा विभिन्न विशेष दिनों का आयोजन किया गया, जिनमें संविधान दिवस, राष्ट्रीय मतदाता दिवस, कारगिल दिवस शामिल थे। इन विशेष दिनों का आयोजन समाज में जागरूकता फैलाने और विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने के लिए किया गया। विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं और गतिविधियों का आयोजन किया, जिनके माध्यम से लोगों को जागरूक किया गया। इन गतिविधियों में निबंध लेखन प्रतियोगिता, चार्ट प्रतियोगिता, क्विज, नारे लेखन, रंगोली प्रतियोगिता, वॉकाथॉन और रैली शामिल थीं। इन गतिविधियों के द्वारा स्वयं सेवकों ने समाज के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की और लोगों में सामाजिक जागरूकता फैलाने का प्रयास किया। विशेष रूप से, रैली और वॉकाथॉन जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में स्वस्थ जीवन शैली और पर्यावरण संरक्षण के प्रतिजागरूकता फैलायी गयी। कार्यक्रम अधिकारियों डॉ. प्रज्ञा मिश्रा और श्रीमती किरणलता वर्मा के मार्ग दर्शन में किए गए कार्यों से शिविर के उद्देश्य को सफलता मिली और स्वयं सेवकों ने अपने प्रयासों से समाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

रेंजर्स प्रशिक्षण सत्र 2023– 24

दिनांक 30 अक्टूबर 2023 से 3 नवंबर 2023 तक पांच दिवसीय रेंजर्स प्रशिक्षण शिविर का आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर आर सी वर्मा के संरक्षण एवं रेंजर्स प्रभारी डॉ निशी मिश्रा तथा सदस्य रेंजर्स श्रीमती साधना सिंह यादव के कुशल दिशा निर्देशन में किया गया। प्रशिक्षक श्रीमती छाया कश्यप ने प्रथम दिवस में छात्राओं को वी पी व्यायाम, ध्वज शिष्टाचार, झंडा गीत, लॉर्ड वेडन पावेल के इतिहास, रेंजर्स ताली तथा टोली विधि की जानकारी प्रदान की। दूसरे दिन छात्राओं को स्काउट का अर्थ, वर्दी की जानकारी तथा दिशाओं का ज्ञान प्रदान किया। तीसरे दिन झंडा गीत, स्वच्छ भारत मिशन पर छात्राओं के द्वारा रैली, विभिन्न प्रकार की गांठे जिसमें पुल, टेंट एवं गैजेट की गांठों के बारे में जानकारी प्रदान की गई, प्राथमिक चिकित्सा एवं स्ट्रेचर के बारे में छात्राओं को बताया गया। चौथे दिन पोस्टर, निबंध, कलर पार्टी, रोल प्ले, नुक्कड़ नाटक, टीम विभाजन पर कार्य किया गया। अंतिम दिवस पर छात्राओं ने पुल, टेंट, गैजेट एवं गेट बनाकर अपने प्रशिक्षण को सार्थक किया एवं इस अवसर पर निरीक्षण हेतु प्राचार्य महोदय प्रोफेसर आर सी वर्मा के साथ महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्य उपस्थित रहे। छात्राओं ने पुल, टेंट एवं गैजेट एवं गेट में किस प्रकार की गांठों का प्रयोग किया उसके बारे में सभी को बताया।

रेंजर्स 'प्रगति' इकाई
वर्ष 2024–25

पं. दीन दयाल उपा. रा. म. पी. जी. कॉ. राजाजीपुरम लखनऊ में महाविद्यालय के संरक्षक, प्राचार्य प्रो0 रमेश चन्द्र वर्मा के कुशल निर्देशन में दिनांक 21–10–2024 से 25–10–2024 तक पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन रेंजर्स प्रभारी डॉ. स्मिता पाण्डेय एवं रेंजर्स प्रशिक्षक श्रीमती छाया कश्यप द्वारा किया गया।

प्रथम दिवस – दिनांक – 21 / 10 / 2024 को उद्घाटन सत्र का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. रमेश चन्द्र वर्मा द्वारा किया गया। प्रथम दिवस प्रशिक्षक श्रीमती छाया कश्यप ने ध्वज को सैल्यूट करना , प्रार्थना, झंडा गीत एवं रेंजर्स के इतिहास पर प्रकाश डाला।

द्वितीय दिवस – दिनांक – 22 / 10 / 2024 को प्राथमिक चिकित्सा एवं विभिन्न प्रकार के स्ट्रेचर बनाना, सैल्यूट करना ।

तृतीय दिवस – दिनांक 23 / 10 / 2024 को फूल वर्दी रिहर्सल कलर पार्टी , गांठ एवं विभिन्न प्रकार के बंधन हेतु छात्राओं को प्रशिक्षित किया गया।

चतुर्थ दिवस – 24 / 10 / 2020 को क्विज, लोक गीत, पोस्टर, निबंध, रोल प्ले, झांकी आदि में छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

अंतिम दिवस– 25 / 10 / 2024 – को प्रशिक्षण सत्र का समापन महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा किया गया । रेंजर्स छात्राओं द्वारा टेंट पिचिंग, पुल निर्माण, गेट निर्माण एवं कम संसाधनों में कैसे जीवन निर्वाह किया किया जाता है, इस हेतु प्रशिक्षित किया गया। रेंजर्स एवं शारीरिक शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया । इस के अतिरिक्त रेंजर्स प्रगति इकाई द्वारा रोड सेफ्टी क्लब एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्त्वावधान में हर घर तिरंगा रैली, सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा हेतु संगोष्ठी, स्लोगन, पोस्टर, निबंध, रंगोली,वॉल पेंटिंग, रैली आदि निकाल कर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गये।

दिनांक 20 एवं 21 मार्च 2025 को महाविद्यालय में रोवर्स–रेंजर्स का अन्तरमहाविद्यालयी समागम का आयोजन किया गया, जिसमें 6 महाविद्यालयों ने प्रतिभाग किया। रोवर्स–रेंजर्स ने विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर प्रथम, द्वितीय, तृतीय सीन प्राप्त किया। कार्यक्रम की प्रस्तुति अति रोचक, सार्थक और आकर्षक रही।

कैरियर परामर्श एवं निर्देशन समिति रिपोर्ट 2024–25

पंडित दीन दयाल उपाध्याय सरकारी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, राजाजीपुरम ने वर्ष 2024 में कैरियर परामर्श एवं निर्देशन समिति के तत्वावधान में विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यशालाओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया, जो छात्रों के करियर विकास और कौशल को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों का सफल संचालन डॉ. मीशू सिंह, सहायक प्रोफेसर, रसायन शास्त्र विभाग ने किया। समिति के सदस्य डॉ. शील धर दुबे (शारीरिक शिक्षा विभाग), डॉ. ममता अम्बुजाननी (मनोविज्ञान विभाग), डॉ. साधना सिंह (अंग्रेजी विभाग), डॉ. किरण लता वर्मा (जन्तुविज्ञान विभाग), और डॉ. मोनिका द्विवेदी (मानवशास्त्र विभाग), डॉ0 पूनम पाण्डेय थे।

1. सिर और त्वचा उपचार पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (12 नवम्बर 2024):

12 नवम्बर 2024 को कॉलेज में एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसका विषय सिर और त्वचा उपचार था। यह कार्यक्रम होम साइंस विभाग और कैरियर काउंसलिंग एवं गाइडेंस कमेटी के संयुक्त प्रयासों से हुआ। प्रमुख वक्ता श्रीमती प्रीतमा रस्तोगी, जो इस क्षेत्र की विशेषज्ञ हैं, ने सिर और त्वचा की देखभाल के विभिन्न पहलुओं पर छात्रों को जागरूक किया। कार्यक्रम में कॉलेज की होम साइंस विभाग की पीजी और यूजी छात्राओं के साथ–साथ अन्य मानविकी संकाय की छात्राओं ने भाग लिया। प्रमुख वक्ता ने सिर और त्वचा संबंधित समस्याओं के समाधान और उपचार के उपाय बताए। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक छात्राओं ने भाग लिया और इसे अत्यंत लाभकारी पाया।

2. शिक्षा, रोजगार और कौशल पर कार्यशाला (14 नवम्बर 2024):

14 नवम्बर 2024 को "शिक्षा, रोजगार और कौशल" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता श्री हिमांशु सिंह, उपप्रमुख, विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मंत्रणा केंद्र रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. रमेश चंद्र वर्मा ने की। कार्यशाला के दौरान श्री हिमांशु सिंह ने छात्राओं को शिक्षा, रोजगार और कौशल के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों के बारे में जानकारी दी और उन्हें अपने लक्ष्यों को निर्धारित करने की सलाह दी। उन्होंने नई शिक्षा नीति और रोजगार पोर्टल्स के बारे में भी छात्राओं को बताया।

3. डिजिटल मार्केटिंग में करियर पर कार्यशाला (25 सितम्बर 2024):

25 सितम्बर 2024 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन "डिजिटल मार्केटिंग में करियर" विषय पर किया गया। यह कार्यशाला DIGIPERFORM और कैरियर काउंसलिंग एवं गाइडेंस सेल के सहयोग से आयोजित हुई। कार्यशाला में वाणिज्य, विज्ञान और मानविकी संकायों के संकाय सदस्य और छात्राओं ने डिजिटल मार्केटिंग के तेजी से बढ़ते क्षेत्र में अवसरों का अन्वेषण किया। कार्यशाला में डिजिटल मार्केटिंग के विभिन्न चौनल, करियर के अवसर, जॉब रोल्स और सॉफ्ट स्किल्स पर चर्चा की गई। इंटरएक्टिव सत्र में छात्रों ने प्रश्न पूछे और डिजिटल मार्केटिंग के भविष्य पर चर्चा की। डिगीपरफॉर्म टीम ने पोर्टफोलियो बनाने और डिजिटल मार्केटिंग में कौशल बढ़ाने पर सलाह दी।

4. कैरियर परामर्श एवं निर्देशन सेमिनार (30 सितम्बर 2024):

30 सितम्बर 2024 को Learntrail संस्था के प्रतिनिधियों श्री विनीत सक्सेना और श्री सत्येन श्रीवास्तव ने छात्राओं को कैरियर से जुड़े प्रमुख बिंदुओं पर परामर्श दिया। कार्यक्रम में छात्रों को लक्ष्य निर्माण, उसकी प्राप्ति तक आने वाली बाधाओं से निपटने और Learntrail संस्था द्वारा उपलब्ध कराए गए संसाधनों के बारे में जानकारी दी गई। इन सभी कार्यक्रमों ने छात्रों को उनके भविष्य के लिए आवश्यक कौशल और जानकारी प्रदान की। महाविद्यालय परिवार का सहयोग इन कार्यक्रमों की सफलता के लिए सराहनीय था और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन का उत्साह बना रहेगा।

दशमोत्तर छात्रवृत्ति योजना 2023–2024
वार्षिक आख्या

डॉ किरन सिंह

महाविद्यालय में दशमोत्तर छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक वर्ग तथा सामान्य वर्ग की छात्राओं को समाज कल्याण विभाग द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। यह छात्रवृत्ति भारत सरकार, राज्य सरकार द्वारा निर्धारित नियमावली के अन्तर्गत प्रदान की जाती है।

इस योजनान्तर्गत अनुसूचित जाति की छात्राओं की छात्रवृत्ति हेतु अभिभावक की आय–सीमा रू0 2,50,000/– (रूपये दो लाख पचास हजार) वार्षिक प्रति परिवार तथा सामान्य वर्ग, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक की छात्राओं हेतु 2,00,000/– (रूपये दो लाख) वार्षिक प्रति परिवार निर्धारित की गयी है।

इस योजना की जरूरी बातें –

- यह योजना अनुसूचित जाति/जनजाति, सामान्य वर्ग, पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक वर्ग की छात्राओं के लिये है।
- इस योजना का लाभ लेने के लिये छात्राओं को शैक्षणिक सत्र में 75% या उससे ज्यादा, महाविद्यालय में उपस्थित रहना होता है।
- इस योजना के तहत छात्राओं को छात्रवृत्ति और शुल्क – प्रतिपूर्ति की सुविधा ऑनलाइन दी जाती है।
- इसका लाभ लेने के लिये छात्राओं को आवेदन करना होता है और जरूरी दस्तावेज महाविद्यालय में जमा करने होते हैं।

सत्र 2023–24 में महाविद्यालय की दशमोत्तर छात्रवृत्ति हेतु आवेदन करने वाली छात्राओं की वर्गवार तथा कक्षावार सूची निम्नानुसार है –

कक्षा	सामान्य वर्ग	अन्य पिछड़ा वर्ग	अनुसूचित जाति	अल्प संख्यक	कुल
बी.ए. प्रथम वर्ष	31	77	36	17	161
बी.ए. द्वितीय वर्ष	36	85	56	12	182
बी.ए. तृतीय वर्ष	29	75	39	13	155
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष	03	11	09	04	27
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष	06	17	11	10	44
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष	08	09	08	03	28
बी.कॉम प्रथम वर्ष	17	31	04	13	65
बी.कॉम द्वितीय वर्ष	15	21	31	07	50
बी.कॉम तृतीय वर्ष	19	17	14	05	55
एम.ए. प्रथम वर्ष	06	11	06	02	25
एम.ए. द्वितीय वर्ष	13	17	09	08	47
कुल	183	370	199	94	846

सत्र 2023–24 में महाविद्यालय की कुल 846 छात्राओं ने छात्रवृत्ति हेतु आवेदन किया था, जिसमें से 636 छात्राओं को रू0 2124720 (रूपये इक्कीस लाख चौबीस हजार सात सौ बीस) छात्रवृत्ति के रूप मे तथा रू0 3103461 (रूपये इक्तीस लाख तीन हजार चार सौ इकसठ) शुल्क प्रतिपूर्ति के रूप में प्राप्त हुए।

इस प्रकार दशमोत्तर छात्रवृत्ति से छात्राओं को वित्तीय सहायता प्राप्त होती है, जिसके जरिये छात्राएँ अपनी पसंद के कॉलेज और पाठयक्रम चुन सकती हैं। यह एक महत्वपूर्ण साधन है, जो छात्राओं को उनकी पढ़ाई के लिये जरूरी सामान, फीस आदि की व्यवस्था करने में मदद करती है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर उ०प्र० भाषा संस्थान एवं महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी
विषय– काव्य में नारी संवेदना

आज दिनांक 08 मार्च 2025 को पं. दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला महाविद्यालय, राजाजीपुरम, लखनऊ, में विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान एवं महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में "काव्य में नारी संवेदना" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान से डॉ रश्मि शील एवं डॉ अंजू सिंह अतिथि के रूप में उपस्थित रहे । कार्यक्रम का मंच से संचालन प्रो. प्रीती वाजप्पेय ने सफलतापूर्वक किया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. रमेश चंद्र वर्मा एवं भाषा संस्थान से आए अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके तथा माँ सरस्वती को पुष्प अर्पित करते हुए एवं सरस्वती वंदना के साथ किया गया। मंचासीन प्राचार्य महोदय, अतिथिगण एवं प्राध्यापिकाओं का पुष्पमाला एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रो. प्रीती वाजप्पेय ने विश्व महिला दिवस के इतिहास को छात्राओं के सामने रखा और आज की संगोष्ठी के विषय की महत्ता को बताया। डॉ निशि मिश्रा ने अपने व्यक्तव्य में महिला उत्थान के लिए सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए आह्वान किया और किस प्रकार साहित्य में वर्णित ऐतिहासिक महिलाओं जैसे द्रौपदी, रानी लक्ष्मीबाई इत्यादि के जीवन घटनाओं से सीख और प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने "सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो" कविता के माध्यम से छात्राओं को जागरूक किया। प्रो. सुरंगमा यादव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि किस प्रकार लैंगिक असमानता को किस साहित्य में दर्शाया गया है उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त एवं तुलसीदास जी के रचनाओं के उदाहरण छात्राओं के सम्मुख रखा। उन्होंने कीर्ति भागवत की पंक्तियों से स्त्रियों के जीवन की व्यथा को प्रस्तुत किया। साहित्य में वर्णित पंक्तियों से प्रो सुरंगमा यादव ने समाज में पुरुष और स्त्री के बीच समान व्यवहार को बढ़ावा देने की बात कही और नारी शक्ति के ऊपर स्वरचित कविता से सभागार को प्रेरित किया। तत्पश्चात् अतिथि वक्ता डॉ रश्मि शील ने अपने उद्बोधन में महिला दिवस की शुभकामनाएँ सबको दी और उन्होंने साहित्यिक इतिहास में वैदिक काल में महिलाओं की उच्चतम स्थिति के बारे में बताया और किस प्रकार विभिन्न धर्मों के साहित्य में स्त्रियों का वर्णन किया गया इसके बारे में छात्राओं को अवगत कराया। डॉ रश्मि जी ने महलाओं के व्यथाओं एवं सामाजिक उत्थान एवं जीवन के विभिन्न पहलुओं को लेकर लिखे गए साहित्यिक रचनाओं के बारे में विस्तार से बताया। इसके पश्चात् प्रो. प्रियंका शर्मा ने अपने उद्बोधन में छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया की किस प्रकार साहित्य में नारी के दिव्य गुणों और साहसिक रूप को प्रस्तुत किया गया है, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महिला पुरुष को एक दूसरे के पूरक के रूप में देखा जाना चाहिए। कार्यक्रम में विशिष्ट कवि के रूप में उपस्थित डॉ. मीशू सिंह ने स्वरचित कविताओं "हाँ जानती हैं स्त्रियां" एवं "विरोधाभास तेरा नाम नारी है" के माध्यम से विश्व महिला दिवस के उद्देश्य को जागृत करने का प्रयास किया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में छात्राओं द्वारा विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य पर नारी शक्ति के ऊपर कविताओं की सुंदर प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम के अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. रमेश चंद्र वर्मा ने विश्व महिला दिवस की शुभकामनाएँ सबको दी।उन्होंने महिलाओं की स्थितियों को लेकर पुरातन काल से लेकर वर्तमान समय तक के साहित्य के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए जोर दिया, जिससे स्त्रियों के साहस और उनकी व्यथा दोनों पर ध्यान आकर्षित किया जा सके। उन्होंने छात्राओं को अपनी शक्तियों को पहचानते हुए आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया। प्राचार्य महोदय ने नारी शक्ति की प्रतीक "माँ " के ऊपर लिखी स्वरचित कविता पढ़कर सभागार को संवेदना से भर दिया। छात्राओं एवं प्राध्यापकों की सुंदर काव्य प्रस्तुति एवं व्यक्तव्य के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान की तरफ़ से प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. सुरंगमा यादव के द्वारा किया गया। इस अवसर पर सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

विश्व महिला दिवस पर भाषा संस्थान एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में साहित्य में नारी संवेदना विषयक हुई संगोष्ठी

उत्तर प्रदेश पंजाबी साहित्य अकादमी के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी

विषय–पंजाबी साहित्य में अवधि एवं ब्रज भाषा का प्रभाव

उत्तर प्रदेश पंजाबी अकादमी के तत्वावधान में दिनांक 7 मार्च 2025 को महाविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन किया गया।संगोष्ठी में वरिष्ठ पंजाबी विद्वानों, लेखकों एवं साहित्यकारों द्वारा उपरोक्त विषय पर अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये। मुख्य वक्ता मेज़र डॉ. मनमीत कौर सोढ़ी ने कहा कि,'गुरमत साहित्य विशेष रूप से गुरु ग्रंथ साहिब और सिख धार्मिक साहित्य अनेक भाषाओं और बोलियों से समृद्ध है। गुरुमत साहित्य सिख परंपरा का एक महत्वपूर्ण साहित्य है जिसमें गुरुओं की शिक्षाएं है, भक्तों की वाणी और अन्य धार्मिक एवं दार्शनिक विचार संकलित है,ये साहित्य मुख्य रूप से पंजाबी, ब्रज, अवधी, संस्कृत फारसी तथा अन्य लोक भाषाओं से समृद्ध है। विशेष रूप से गुरु नानक देव जी, गुरु अर्जुन देव जी और गुरु तेग बहादुर जी की वाणीमें उक्त भाषाओं का प्रभाव है।

श्रीमती रनदीप कौर ने अपने वक्तव्य में कहा कि,गुरमत साहित्य की सबसे बड़ी रचना श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी है, जो कि मध्ययुगीन साहित्य व समाज का दर्पण है। इसमें ब्रज भाषा व अवधी भाषा की झलक स्वाभाविक ही देखने को मिल जाती है।

प्रोफेसर रमेश चंद्र वर्मा ने कहा कि पंजाबी साहित्य पर ब्रजभाषा और अवधी का गहरा प्रभाव रहा है, जो उनकी भाषा, कविता और सार्वजनिक जीवन पर स्पष्ट रूप से दिखता है। पंजाबी और हिंदी के कई रूप जैसे ब्रज और अवधी आपस में काफी मिलते –जुलते हैं,इसलिए इनका प्रभाव पंजाबी कविताओं पर भी पड़ा तथा संत कवियों की कविताओं पर भी दृष्टिगोचर होता है।

प्रोफेसर सुरंगमा यादव ने इस विषय पर बोलते हुए कहा कि, अवधी और ब्रज हिंदी की बोलियाँ है। गुरू ग्रंथ साहिब की भाषा को 'संत भाषा' भी कहते हैं,जिसमें बहुत– सी भाषाओं और बोलियों का सम्मिश्रण है। दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी की रचनाओं का संकलन दशम ग्रंथ है। उनकी रचनाओं में जापु, अकाल स्तुति,ज्ञान प्रबोध, विचित्र नाटक, 33 सवैये, शब्द हजारे,खालासा महिमा, चरित्रोंपाख्यान, चण्डी दी वार, जफरनामा आदि प्रमुख हैं। चंडी दी वार गुरु गोबिंद सिंह की पंजाबी भाषा की एकमात्र रचना है। जफरनामा फारसी में लिखा गया है।उनकी शेष रचनाएं ब्रज भाषा में हैं। प्रो0 प्रीति बाजप्ये ने कहा कि ब्रज और अवधी भाषाओं का पंजाबी साहित्य पर गहरा और व्यापक प्रभाव रहा है, जो आज भी पंजाबी साहित्य के विभिन्न रूपों में दिखता है।

उक्त संगोष्ठी कार्यक्रम में मंच संचालन वरिष्ठ विदुषी एवं लेखिका डॉ रश्मि शील जी द्वारा किया गया। अंत में कॉर्डिनेटर श्री अरविंद नारायण मिश्र जी ने संगोष्ठी पर अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि, गुरुनानक ने धार्मिक और सामाजिक बदलावों को देखते हुए गुरु साहिब में कई भाषाओं का प्रयोग किया, इनमें पंजाबी के साथब्रज, अवधी और खड़ी बोली शामिल थीं।

संगोष्ठी में श्री अरविंद नारायण मिश्र, श्रीमती मीनू पाठक एवं महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं छात्राएं उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन उत्तर प्रदेश पंजाबी साहित्य अकादमी के कार्यक्रम समन्वयक श्री अरविंद नारायण मिश्र द्वारा किया गया।

महाविद्यालय के प्राध्यापकों की प्रकाशित पुस्तकें

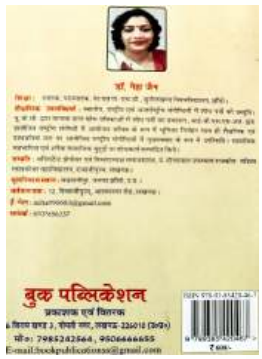

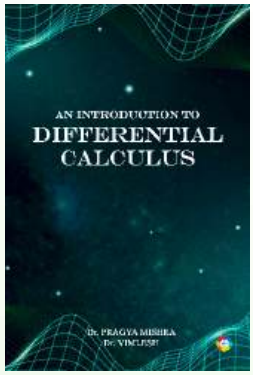

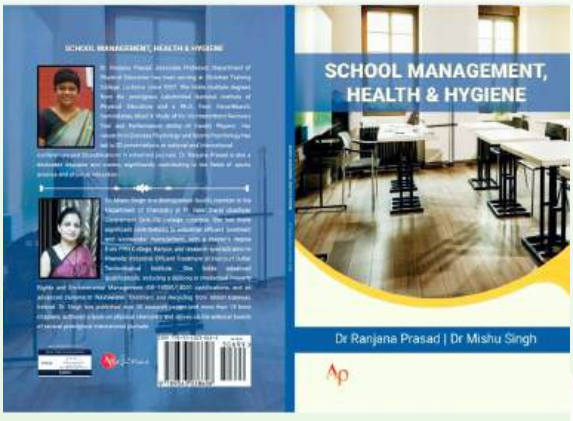

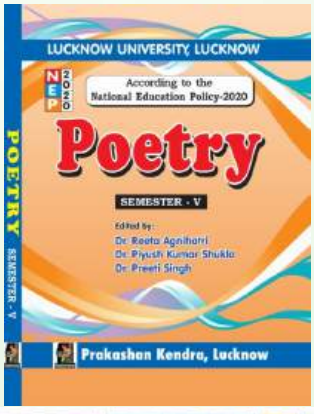

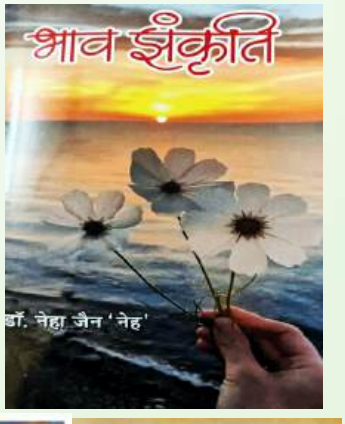

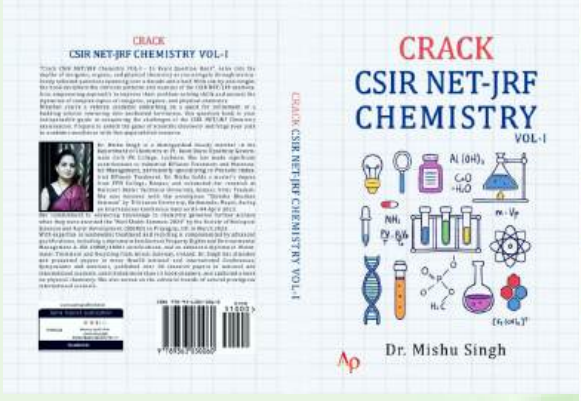

WALKATHON ON VOTERS DAY

श्री अटल बिहारी वाजपेयी, जन्म शताब्दी समारोह, संगीतकला अकादमी 19 से 25 दिसंबर 2024,महाविद्यालय की छात्राओं के साथ प्रतिभाग

रोवर रेंजर्स समागम में प्रतियोगिताएं

लखनऊ। पं. दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला पीजी कॉलेज में अंतर्महाविद्यालीय रोवर रेंजर्स समागम का उद्घाटन हुआ। नेशनल पीजी, महाराजा बिजली पासी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, केकेसी, फखरूद्दीन अली अहमद राजकीय समेत कई कॉलेजों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान गणवेश, मार्च पास्ट, कलर पार्टी, भाषण, पोस्टर मेकिंग, निबंध लेखन, रोल प्ले जैसी प्रतियोगिताएं करवाई गईं। (संवाद)

हमारे महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य

फार्म 4 नियम 6

प्रकाशक का नाम	:	प्रो०(डॉ०)रमेश चन्द्र वर्मा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	प्राचार्य, पं0 दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजाजीपुरम्, लखनऊ
प्रकाशन का स्थान	:	उपर्युक्त
प्रधान सम्पादक का नाम	:	प्रो0(डॉ0)रीता अग्निहोत्री
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	प्रो. अंग्रेजी, पं0 दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजाजीपुरम्, लखनऊ
मुद्रक का नाम	:	कमला इन्टरप्राइजेस
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	बी–1/4, सेक्टर डी, एल0डी0ए0 कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ
स्वामित्वाधिकार	:	प्राचार्य, पं0 दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजाजीपुरम्, लखनऊ

मैं, डॉ0 रमेश चन्द्र वर्मा घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है। रचनाओं में व्यक्त विचारों के लिए सम्पादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।

प्रो०(डॉ०)रमेश चन्द्र वर्मा
प्राचार्य एवं प्रकाशक, ''अभिव्यक्ति'' पत्रिका
पं0 दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, राजाजीपुरम्, लखनऊ

छपते–छपते

वार्षिकोत्सव 2024–25 (26/03/2025)

महाविद्यालय परिवार

बायें से दाये (बैठे हुए) – डॉ० पवन कुमार मौर्य, डॉ० सुरंगमा यादव, प्रो० अखिलेश कुमार, प्रो० रमेश चन्द्र वर्मा (प्राचार्य), प्रो० रीता अग्निहोत्री, प्रो० प्रीति वाजप्ये, डॉ० मीशू सिंह

प्रथम पंक्ति (खड़े हुए) – डॉ० नेहा जैन, डॉ० प्रज्ञा मिश्रा, डॉ० पूनम पाण्डेय, श्रीमती साधना सिंह यादव, डॉ० निशी मिश्रा, डॉ० ऋचा पाण्डेय, श्रीमती ममता अम्बुजाननी, डॉ० किरनलता वर्मा

द्वितीय पंक्ति (खड़े हुए) – श्रीमती गायत्री मिश्रा, श्री राजेश टण्डन, श्री निषांत निगम, डॉ० अमितेन्द्र सिंह, श्री छोट्टन सिंह,, डॉ० शीलधर दुबे, श्री मोहन चन्द्र, श्री नवनीत कुमार, श्री मनोज, श्री अरुण कुमार मिश्रा, श्री सरोज

कुल–गीत

अवध का गौरव बढ़ाता, ज्ञान का यह निलय प्यारा ।
गोमती तट सन्निकट, यह महाविद्यालय हमारा ।।

दीन–दुखियों के दयालु
की मधुर स्मृति पिरोये,
साम्य के एकात्म के
चिरकाल मूल्यों को संजोये,
लक्ष्य–पथ पर अग्रसर, विश्वास का लेकर सहारा।
अवध का गौरव.....।

पुरम् राजाजी अवस्थित
प्रखर गरिमा–पुंज सा,
प्रस्फुटित आलोक चहुँदिश
शान्त सुरभित कुंज सा,
लखनवी तहज़ीब पोषित, है प्रवाहित सृजन धारा।
अवध का गौरव .....।

कला का, विज्ञान का
वाणिज्य का शिक्षायतन
माँ सरस्वती की कृपा से
नित निरन्तर उन्नयन
तुष्ट कर अनहद पिपासा हर रहा यह तिमिर सारा।
अवध का गौरव .....।

ज्ञान की, विज्ञान की
धारा बहे अविरल यहाँ
सौहार्द्र से, सद्भाव से
पूरित रहे परिमल यहाँ
सर्वहित संकल्प लेकर करें हम उद्घोष न्यारा।
अवध का गौरव बढ़ाता ज्ञान का यह निलय प्यारा।।